5623

KŪṚUX PHONETICS AND TRANSLITERATION

कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण

By :

Dr. Narayan Oraon "Sainda"

Dr. Smt. Jyoti Toppo "Oraon"

KŪṚUX PHONETICS AND TRANSLITERATION

कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण

By : -

Dr. Narayan Oraon 'Sainda'

M.B.B.S., PGDMCH., FCGP.

Senior Resident, Deptt. of Pediatrics,

Patliputra Medical College Hospial, Dhanbad

(Jharkhand).

&

Dr. Smt. Jyoti Toppo Oraon

M.A.(Sanskrit), Ph.D.

Lecturer, Deptt. of Sanskrit

Gossner College, Ranchi (Jharkhand)

प्रकाशक

Satya Bharati

Dr. Camil Bulcke Path P. Box. - 2

Ranchi - 834001 Jharkhand (India)

Contact : 0651-2350075, 2350990

E-mail: satyabharati@rediffmail.com

प्रथम संस्करण - 2011

© : Author
Published on : 20 Feb. 2011
Published by : Satya Bharti, Camil Bulcke Path,
Ranchi - 834001 (Jharkhand)

मुद्रक : काथलिक प्रेस, राँची - 834001 (झारखण्ड) फोन नं० (0651) 2314417/ 2351233

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुड़ुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि-1-12/2002-565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय "कुड़ुख कथा खोड़हा सुर पड़हा भागी टोली" डुमरी गुमला के 39 (उनचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुड़ुख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि "तोलोंग सिकी" से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार

ह./-

(पोलिकार्प लिंडा)

सचिव,

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09

D.O.P. 20.02.09

समर्पण

उस आदिवासी पीढ़ी को जिसमें
आधुनिक शिक्षा ग्रहण
करने के साथ-साथ
आदिवासी भाषा एवं
अपनी मूल संस्कृति
को धरोहर के रूप में
समृद्ध करते रहने
की उत्कृष्ट
अभिलाषा है ।

प्रस्तावना

"**कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण)**" शीर्षक रचना में, मैंने कुँड़ुख़ भाषा की उच्चरित ध्वनियों को **तोलोङ सिकि (लिपि)** के माध्यम से रेखांकन करते हुए कुँड़ुख़ शब्दों को **तोलोङ सिकि, रोमन एवं देवनागरी लिपि** में लिप्यन्तरण करने का प्रयास किया है । यों तो यह मानकीकरण का प्रश्न है किन्तु अभ्यास एवं अग्रतर विकास के माध्यम से जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत होना भी एक मानकीकरण ही है । इन लिपियों में से तोलोङ सिकि एवं रोमन लिपि वर्णात्मक है, जबकि देवनागरी लिपि अक्षरात्मक लिपि है । लिप्यन्तरण का अर्थ, सदृश अक्षरों के अनुरूप प्रतिनिधित्व समझा जाना है ।

ज्ञात हो कि सर्वप्रथम कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को रोमन लिपि के माध्यम से लिखा जाता था । बाद में देवनागरी लिपि के माध्यम से विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पढ़ाई-लिखाई होने लगी और अब **कुँड़ुख़ समाज** द्वारा **"तोलोङ सिकि"** को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की सामाजिक मान्यता दिये जाने एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची से 19 फरवरी 2009 को मैट्रीक की परीक्षा में उत्तर पुस्तिका लिखने की अनुमति मिलने के पश्चात् अब तोलोङ सिकि के माध्यम से भी पढ़ाई-लिखाई हो रही है । इस परिस्थिति में साहित्यिक दृष्टिकोण से उपरोक्त तीनों लिपियों के बीच ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण की आवश्यकता महसुस की जाने लगी । इस आवश्यकता को मैंने इस लेख के माध्यम से पूरा किया है ।

उपलब्ध साहित्यों में से Rev. F. Hahn की पुस्तक Kurukh Grammar वर्ष 1900 ई० में छपी । इसके बाद श्रद्धेय A. Grignard की पुस्तक **An Oraon English Dictionary** वर्ष 1924 ई० में एवं C. BLESES S.J. की पुस्तक **An English Uraon Dictionary** वर्ष 1956 ई० में छपी । ये तीनों विद्वान पश्चिम देश से थे तथा इनके द्वारा पश्चिमी भाषा एवं लिपि के आधार पर कुँड़ुख़ भाषा एवं इसके शब्दों को समझने एवं लिखने का प्रयास किया गया । इनसे भिन्न, एक भाषा वैज्ञानिक प्रयास भी हुआ । स्व० डॉ० फ्रांसिस एक्का की पुस्तक "KŪRUX PHONETIC READER" CIIL, Series-9 वर्ष 1985 में प्रकाशित हुई । इसमें पश्चिम एवं पूरब दोनों तरह के विचारों का समावेश है । उपरोक्त चारों विद्वानों के विचारों को समझने के लिए Victor W. Tucker की पुस्तक **"Improve Your Pronunciation"** वर्ष 1987 ई०, **Oxford English Hindi Dictionary** वर्ष 2004 ई० तथा **Oxford Advanced Learner's Dictionary of Current English** by - A S Hornby में व्यवहारित phonetic symbols का अवलोकन आवश्यक होगा, जिसमें English Phonetics के बारे में नियम पूर्वक बतलाया गया है । ध्यातव्य हो कि Running English एवं Phonetics, दोनों अलग-अलग विधा है । Phonetics में बतलाया गया है कि अँग्रेजी भाषा में 21 (इक्कीस) स्वर ध्वनियाँ तथा 24 (चौबीस) व्यंजन ध्वनियाँ यानि कुल 45 (पैंतालिस) ध्वनियाँ हैं, जिसे मात्र 26 (छब्बीस) अक्षरों से लिखा जाता है । इन सभी बातों के होते हुए *'उर्दू-हिन्दी डिक्शनरी'* **अंजुमन तरक्की उर्दु (हिन्द) प्रकाशन,** वर्ष-2003 का

उद्धरण, कुँड़ुख़ शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यन्तरण को समझने में मददगार होगा। इसके अतिरिक्त इस रचना की प्रस्तुति में P.O.BODDING की पुस्तक ***SANTALI DICTIONARY*** तथा ***SANTALI FOLK TALES,*** REV. JOHN HOFFMANN की पुस्तक ***ENCYCLOPEDIA MUNDARICA,*** REV. P. PONATTE की पुस्तक ***ENCYCLOPEDIA MUNDARICA,*** J. DEENEY की पुस्तक ***HO-ENGLISH DICTIONARY,*** जूलियस बाअ् की पुस्तक, **खड़िया ध्वनि शास्त्र**, खड़िया साहित्य समिति, राँची द्वारा प्रकाशित पुस्तक *KHERIA OS?NLO?,* J. VAN. VOGAERT की पुस्तक ***LATIN GRAMMAR*** आदि पुस्तकों का अवलोकन किया गया है।

प्राचीन भारत में, लेखन एवं पठन-पाठन के क्रम में वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत जैसी शाब्दिक पारिस्थितिकी आमने-सामने आयी। कालान्तर में हिन्दी भाषा का उद्भव हुआ और मूल संस्कृत वर्णमाला से घट-बढ़कर वर्तमान हिन्दी वर्णमाला का उदय हुआ। वैदिक संस्कृत में स्वर ध्वनियों की संख्या लगभग 132 (एक सौ बत्तीस) है किन्तु हिन्दी वर्ण माला में मात्र 11 (ग्यारह) स्वर वर्णों से ही पठन-पाठन का कार्य चल रहा है। संस्कृत ग्रंथमाला में से उदाहरण स्वरूप - **यजुर्वेद** (संस्कृति संस्थान, बरेली), **ऋक् सूक्त संग्रह :** डॉ० हरिदत्त शास्त्री, डॉ० कृष्ण कुमार, **श्रीशुक्लयजुर्वेदीयरूद्राष्टाध्यायी, लघु सिद्धांत कमौदी :** श्रीमद्विद्वद्वर-वरदराजाचार्यप्रणीता, **संस्कृत सहचर :** आचार्य राधामोहन उपाध्याय, **संस्कृत हिन्दी शब्दकोश** - वी० एस० आप्टे , Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey आदि का कुछ भाग, कुँड़ुख़ ध्वनि एवं वर्णमाला को समझने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

आजाद भारत में कुछ कुँड़ुख़ भाषी विद्वान भी अपनी भाषा एवं माटी के लिए आगे आये और अपनी भाषा को देवनागरी लिपि के माध्यम से लिखना-पढ़ना आरंभ किया। उनमें से श्रद्धेय जुलियस तिग्गा, श्रद्धेय अह्लाद तिर्की, श्री पी० सी० बेक, डॉ० ख़िस्त मिखाइल तिग्गा, बिशप डॉ० निर्मल मिंज, श्रद्धेय देवचरण भगत, श्रद्धेय इन्द्रजीत उराँव, श्रद्धेय बिहारी लकड़ा आदि अग्रणी हैं। इन सभी विद्वानों की लेखन शैली में उत्पन्न दो अलग-अलग व्यवहृत लिपियों की कठिनाइयों को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि अर्थात् **तोलोङ सिकि** के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया गया है। चूँकि कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति अंग्रेजी, संस्कृत अथवा हिन्दी भाषा की प्रकृति से बिलकुल भिन्न है, जिसके चलते कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को रोमन लिपि या देवनागरी लिपि के माध्यम से शुद्ध-शुद्ध लिखना एवं पढ़ना मुश्किल होता है। अतएव इस कठिनाई को समझने एवं कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या को दूर करने हेतु संस्कृत एवं कुँड़ुख़ (दोनों प्राचीन) भाषाओं के स्वरों की प्रकृति को समझना आवश्यक होगा।

संस्कृत भाषा में स्वर के तीन भेद हैं :-

1)ह्रस्व स्वर 2) दीर्घ स्वर 3) प्लूत स्वर।

मान लिया कि ह्रस्व स्वर का उच्चारण समय x सेकेण्ड है तो दीर्घ एवं प्लूत स्वर का उच्चारण समय क्रमशः $2x$ (दो गुना) तथा $3x$ (तीन गुना) सेकेण्ड होगा। यहीं पर कुँड़ुख़ भाषा में स्वर के दो भेद हैं :-

(1) सन्नी सरह (2) दिगहा सरह।

इनमें से सन्नी सरह संस्कृत भाषा के ह्रस्व स्वर की भाँति है किन्तु दिगहा सरह का उच्चारण समय, संस्कृत भाषा के दीर्घ स्वर से लम्बा तथा प्लूत स्वर से कम यानि लगभग 2½ (ढाई) गुणा होता है, जिसके चलते कुँड़ुख़ भाषा के क्षेत्र के गाँवों का नाम या कुँड़ुख़ शब्दों का नामान्तरण होकर हिन्दी उच्चारण की तरह हो गया है। जैसे :- भाँ:ड़ो - भरनो, सू:सा - सुरसा, ना:रो - नारो आदि। इसी तरह अंग्रेजी भाषा की रोमन लिपि में 5 (पाँच) मूल स्वर हैं और यह वर्णात्मक लिपि है। जबकि देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है। वर्णात्मक लिपि वैज्ञानिक व्याख्या की दृष्टिकोण से अक्षरात्मक लिपि से अच्छी मानी जाती है।

इन समस्याओं के निराकरण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान का सिद्धांत तथा वर्तमान *Technology* को आधार माना गया है। कुछ विद्वतजनों का सुझाव है कि वर्तमान में वर्णमाला आदि का मानकीकरण **तकनीकी अनुकूल (Techno-friendly)** होना चाहिए। आधुनिक तकनीक के अनुकूल संशोधन एवं विस्तारण की प्रक्रिया को मानना ही *Techno-friendly* है। इन विधितताओं के वावजूद मानक मानदण्ड हेतु कुँड़ुख़ भाषा की ध्वनियों एवं उसकी लिपि तोलोंङ सिकि को आधार मानकर यह लिप्यन्तरण किया गया है, जिसे इस प्रकार समझा गया है :-

1. कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि (लिपि) में ᱵ, ᱶ, ᱷ, ᱸ, ᱹ, ᱺ (इ, ए, उ, ओ, अ, आ / **i, e, u, o, a, a̲**) कुल 6 मूल एवं स्वतंत्र स्वर तथा स्वर ध्वनि चिह्न हैं जबकि अंग्रेजी में **a, e, i, o, u** कुल 5 (पाँच) मूल स्वर एवं स्वर चिह्न तथा हिन्दी में अ, इ, उ मात्र 3 (तीन) मूल स्वर माना गया है। (देखें : Appendix - A_2)
2. संस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि में अर्द्धस्वर अ अथवा विकारी अ के लिए " ऽ " चिह्न का प्रयोग होता है तथा संगीत में इसी चिह्न का प्रयोग 'अलाप' के लिए किया जाता है। अंग्रेजी में अर्द्धस्वर अ अथवा विकारी अ को glottal stop कहा जाता है। कुँड़ुख़ भाषा में भी glottal stop ध्वनि है जिसे तोलोङ सिकि में " ।" (हेचका) चिह्न देकर लिखा जाता है। कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को देवनागरी में लिखने हेतु 'अ्' (अ के नीचे हलन्त् चिह्न) चिह्न से glottal stop को संबोधित किया गया है। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्राध्यापक स्व० इन्द्रजीत उराँव, कुँड़ुख़ भाषा के हेचका हरह ध्वनि के लिए देवनागरी लिपि में 'अ्' चिह्न ही लिखा करते थे। जैसे - ᱪᱵᱵᱺ - चिअ्ना, ᱲᱸᱵᱺ - होअ्ना, ᱵᱶᱵᱺ- नेअ्ना आदि। (देखें : Appendix - R_1, R_2 & CD_2)
3. Running English में लम्बी ध्वनि के लिए किसी तरह का ध्वनि चिह्न का प्रयोग नहीं होता है किन्तु Phonetics में अक्षर के बाद ' : ' (कॉलन) चिह्न देकर, Long phones को लिखा एवं पढ़ा जाता है। इस चिह्न का प्रयोग फॉदर कामिल बुल्के की पुस्तक *"अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश"* में देवनागरी लिपि के माध्यम से अंग्रेजी शब्दों को अंकित किया गया है। जैसे - earth (अॅ:थ), birth (बॅ:थ), learn (लॅ:न), word (वॅ:ड), law (लॉ:) आदि। इस पुस्तक में कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को देवनागरी लिपि में दिखलाने हेतु ':' चिह्न (कॉलन चिह्न) का ही प्रयोग किया गया है। इस पद्धति को हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ० दिनेश्वर प्रसाद ने भी सराहना की है। जैसे - ᱵᱶ:ᱲᱺ - ने:ला, ᱪᱶ:ᱲᱺ - ते:ला, ᱺ:ᱲᱵ - आ:ली, ᱣᱸ:ᱰᱺ - मो:ड़ा, ᱣᱸ:ᱣᱸ - गो:दो आदि। (देखें : Appendix - X)

4. कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित ध्वनि, सन्नी अ (า) एवं दिगहा अः (าः), अंग्रेजी भाषा विज्ञान में विनिर्दिष्ट Λ तथा Λ: की तरह है, जिसे कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को तोलोङ सिकि में า एवं าः इस तरह लिखा जाता है। जैसे - ഗาഃങ - कःव, ഖาഃങ - दःव आदि। (देखें : Appendix - F)

5. Rev. F. Hahn एवं A. Grignard द्वारा बतलाये गये उपाय से रोमन लिपि में कुँड़ुख़ भाषा की उच्चरित नासिक्य स्वर ध्वनियों को वर्तमान तकनीक अर्थात् टाईप मशीन एवं कम्प्यूटर में लिखने में कठिनाई होती है। अतएव इस समस्या के समाधान हेतु उक्त स्वरूप में तकनीकी सम्मत चिह्न Daicritical mark देकर लिखा गया है। ऐसा प्रयोग P. O. BODDING की पुस्तक Santali Dictionary एवं Santhali Folk Tales में किया गया है। जैसे - ഗർഃഭന-ഗർഃഭന - Kõ:ṛa̱ - kõ:ṛa̱, ഗൎഃഭൎ-ഗൎഃഭൎ - chã̱:ṛe - chã̱:ṛe आदि। (देखें : Appendix - J & K)

6. देवनागरी लिपि में अ + अ = आ माना गया है, जबकि उच्चारण की दृष्टि से 'अ' एवं 'आ' दोनों पूर्ण एवं अलग-अलग स्वर हैं जिसे अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान में भी स्वीकार किया गया है। इसे अंग्रेजी में a = अ एवं ā = आ तथा उर्दू-अंग्रेजी में a = अ एवं á = आ समझा जाता है। स्व० डॉ० फ्रांसिस एक्का (पूर्व निदेशक, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर) द्वारा कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को रोमन लिपि में लिखने कें लिए 6 (six) vowel concept के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है, जो प्रयोग की दृष्टि से उत्तम है। जैसे - i, e, u, o, a, a̱ . इस सिद्धांत के संबंध में काथलिक प्रेस राँची के कम्प्यूटर एवं तकनीकी विशेषज्ञ फ़ा० अलेक्स टोप्पो, एस०जे० एवं रोम देश के पोंटिफिकल ग्रेगोरियन विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर फ़ा० डॉ० लिनुस कुजूर, एस०जे० का मन्तव्य हैं कि विदेशों में भी रोमन लिपि के अक्षरों के ऊपर या नीचे चिह्न लगाकर अपनी भाषा को लिखने-पढ़ने की स्वतंत्रता एवं परंपरा है। इस संबंध में कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, गुमला (झारखण्ड) के संस्थापक फ़ा० डॉ० जेफ्रेनियुस बख़ला उर्फ डॉ० एतवा उराँव का कहना है कि า (अ) ध्वनि के बराबर रोमन लिपि में ' a ' है तथा า̊ (अँ) ध्वनि के बराबर ' ã ' रखा गया है। चूँकि า̊ (अँ) के उच्चारण में स्वांस प्रक्रिया Nasal cavity यानि orall cavity से ऊपर होकर पूरी होती है अतएव 'a' के ऊपर ' ~ ' ध्वनि पूरक चिह्न (Diacritical mark) देकर चिह्नित किया गया है। इसी तरह ന (आ) ध्वनि के लिए रोमन लिपि में a̱ (' a ' के नीचे '- ') लिखा जाना तर्क संगत लगता है, चूँकि ന (आ) के उच्चारण में निचला जबड़ा (Lower jaw)नीचे की ओर आता है तथा า (अ) ध्वनि के उच्चारण की तुलना में मुँह अधिक खुलता है।

7. देवनागरी लिपि में 'ए' एवं 'ओ' संयुक्त स्वर अथवा दीर्घ स्वर है, जबकि कुँड़ुख़ भाषा में 'ए' एवं 'ओ' ह्रस्व की भाँति भी उच्चारण किया जाता है जिसे लिखने के लिए देवनागरी लिपि में सही-सही लिपि चिह्न नहीं है। यही कारण है कि कुँड़ुख़ भाषी जन-साधारण, हिन्दी भाषा में उच्चरित 'ए' एवं 'ओ' ध्वनि के उच्चारण में अपनी मातृभाषा के अनुसार ह्रस्व की भाँति उच्चारण किया करते हैं।

8. हिन्दी भाषा में उच्चरित दीर्घ "ई, ी" एवं दीर्घ "ऊ, ू" कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित दिगहा ഴഃ (इः) एवं दिगहा - ഴ: (उः) से भिन्न है। हिन्दी का दीर्घ ई एवं दीर्घ ऊ, शब्द खण्ड का अंतिम वर्ण के स्थान पर रहता है, किन्तु कुँड़ुख़ भाषा का कोई भी दिगहा सरह शब्दखण्ड के अन्त में उपस्थित नहीं होता है। यदि हिन्दी का दीर्घ स्वर का उच्चारण समय दो गुना है तो कुँड़ुख़ भाषा के दिगहा सरह का उच्चारण समय ढाई गुना होता है।

9. कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखते समय एक समान सुनाई पड़ने वाले शब्दों के उच्चारण एवं अर्थ की भिन्नता को दिखलाने के लिए ' » ' घेतला चिह्न (शब्दखण्ड सूचक चिह्न) देकर लिखा गया है। जैसे :- कमई - कम'ई, बरई - बर'ई आदि।

इस शोध एवं प्रस्तुतिकरण में स्व० डॉ० फ़्रांसिस एक्का, पूर्व कुलपति स्व० डॉ० बहुरा एक्का, पद्मश्री एवं पूर्व कुलपति डॉ० रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति डॉ० (श्रीमती) इन्दु धान, कुलपति फ़ा० डॉ० बेनी एक्का, बिशप डॉ० निर्मल मिंज, डॉ० दिनेश्वर प्रसाद, स्व० प्रो० इन्द्रजीत उराँव, फ़ा० प्रताप टोप्पो, फ़ा० जेम्स टोप्पो, डॉ० प्रकाशचन्द उराँव, डॉ० करमा उराँव, डॉ० दुखा भगत, फ़ा० डॉ० जेफ्रेनियुस बख़ला, फ़ा० डॉ० लिनुस कुजुर, डॉ० नारायण भगत, डॉ० हरि उराँव, डॉ० (श्रीमती) शान्ति ख़लख़ो, डॉ० गिरिधारी राम "गौंझु", फ़ा० डॉ० ईमानुएल बख़ला, श्री अशोक बख़ला, श्री विनोद कुमार भगत 'दिवान', श्री विनोद कुमार भगत 'नेताजी', डॉ० प्रभाकर तिर्की, ई० अजीत मनोहर ख़लख़ो, श्री मंगरा उराँव, डॉ० विनय कुमार मिश्रा, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री पियुस अमृत कुमार बेक, श्री अब्राहम मिंज, श्री अगस्तुस तिग्गा, श्री किसलय जी आदि विद्वतजनों का मार्गदर्शन एवं सुझाव प्राप्त हुआ है। संस्कृत व्याकरण को समझने में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती डॉ० ज्योति टोप्पो उराँव का विशेष योगदान रहा है। साथ ही फ़ा० अगुस्टीन केरकेट्टा की भूमिका स्मरणीय रहेगा जिन्होंने एक अग्रज एवं सहकर्मी के रूप में हमेशा मेरा साथ दिया है। प्रकाशन हेतु, सत्यभारती, राँची एवं मुद्रण हेतु काथलिक प्रेस, राँची के कुशल पदाधिकारी एवं कर्मचारियों की सराहना किये बिना आगे बढ़ना मुश्किल होगा जिनकी कार्यकुशलता से कम समय में ही यह पुस्तक अपने स्वरूप में आ सकी।

इस पुस्तक में पृष्ठ संख्या 47 से 120 तक परिशिष्ट के रूप में कुछ पृष्ठ मूल पुस्तक की छाया कॉपी अपने मूल अवस्था में ही उद्धृत किए गये हैं। यह इसलिए किया गया है कि पाठकों तक उन किताबों की बातें मूल रूप में दृश्यमान हो, जिससे पाठकों में नई अवधारणा के प्रति रोष उत्पन्न न हो। संभव है, यह उचित न होते हुए भी नई बातों को आसानी से लोगों तक पहुँचाए जा सकने में आप सबों का ही योगदान प्रमाणित होता है। इस धृष्टता के लिए परिशिष्ट में उद्धृत लेखकों का मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

एक चिकित्सक की हैसियत से मैंने *शरीर रचना विज्ञान (Anatomy), शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology), ध्वनि विज्ञान (Phonetic Science)* एवं आधुनिक तकनीक *कम्प्यूटर विज्ञान (Computer Science)* आदि का तुलनात्मक अध्ययन कर अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ के विकास हेतु इस पुस्तिका को आप पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप मेरे प्रयास को सहृदयता के साथ स्वीकार करेंगे, तथा अपना सुझाव एवं टिप्पणी, narayan@tolongsiki.com अथवा oraon_narayan@indiatimes.com पर ई-मेल भेज कर हमें अनुगृहित करने की कृपा करेंगे।

दिनांक - 20.02.2011

डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा'
पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल,
धनबाद (झारखण्ड)

प्राक्कथन

कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण) शीर्षक रचना में कुँड़ुख़ भाषा की उच्चरित ध्वनियों को तोलोङ सिकि (लिपि) के माध्यम से रेखांकित करते हुए कुँड़ुख़ शब्दों को तोलोङ सिकि, रोमन एवं देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण करने का प्रयास है ।

इस पुस्तिका में मैंने एक सह-लेखिका की भूमिका में अपना योगदान दिया है । मुझे कुँड़ुख़ भाषा की गहराई की विशेष जानकारी नहीं है तथापि उराँव समाज की महिला के हैसियत से मैंने अबतक अर्जित ज्ञान को कुँड़ुख़ भाषा के विकास में समर्पित करने का प्रयास किया है ।

जहाँ तक तोलोङ सिकि, रोमन एवं देवनागरी लिपि के बीच लिप्यन्तरण का प्रश्न है तो इस प्रस्तुतिकरण से पूर्व संस्कृत भाषा में उच्चरित ध्वनियों की विवेचना करना आवश्यक समझती हूँ ।

विश्व का प्रथम मानक व्याकरण ग्रंथ "अष्टाध्यायी" के रचयिता महर्षि पाणिनि एवं इसे सरल रूप प्रदान करने वाले वैयाकरण महर्षि पतञ्जली तथा श्रीमद्भट्टोजी दीक्षित द्वारा वैदिक संस्कृत में उच्चरित ध्वनियों की व्याख्या की गई है । इन विद्वानों द्वारा बतलाये गए तथ्यों को कुँड़ुख़ भाषा, जो संस्कृत जैसी एक प्राचीन भाषा है, के साथ तुलनात्मक अध्ययन हेतु निम्नांकित बातें अवलोकनीय है :-

(1) संस्कृत में स्वर के मुख्य तीन भेद हैं :-

(क) ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ, ऌ ।

(ख) दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ।

(ग) प्लूत स्वर - अ३, इ३, उ३, ऋ३, ऌ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३ ।

वैदिक उच्चारण में इन सभी स्वर ध्वनियों के छः - छः भेद हैं । इस प्रकार - $5 \times 6 + 8 \times 6 + 9 \times 6 = 132$ अर्थात् वैदिक उच्चारण में कुल 132 (एक सौ बत्तीस) स्वर ध्वनि हैं । (देखें Appendix - U_2)।

(2) संस्कृत में ए, ऐ, ओ एवं औ दीर्घ अथवा संयुक्त स्वर हैं । इसे इस प्रकार समझा जाता है :-

अ + इ = ए
अ + ए = ऐ
अ + उ = ओ
अ + ओ = औ

(3) संस्कृत में अ + अ = आ समझा जाता है ।

(4) देवनागरी लिपि, संस्कृत भाषा के अनुरूप विकसित है किन्तु इसे हिन्दी भाषा की भी लिपि स्वीकार किए जाने के पश्चात् हिन्दी भाषा हेतु देवनागरी लिपि में ड़ एवं ढ़ वर्ण (क्षेत्रीय प्रभाव के चलते) स्वीकार किये गए हैं किन्तु संस्कृत का ऌ वर्ण का प्रयोग हिन्दी भाषा में स्वर वर्ण के रूप में नहीं होता है ।

(5) देवनागरी लिपि से अरबी एवं उर्दू भाषा के शब्दों को लिखने के लिए अक्षर के नीचे डॉट चिह्न देकर लिखा एवं पढ़ा जाता है । जैसे - क़, ग़, ज़, फ़, व़, ख़ आदि ।

(6) कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित मूल स्वर ध्वनियों की व्याख्या करते हुए तोलोङ सिकि (लिपि) के आविष्कारक डॉ० नारायण उराँव 'सैंदा' ने "तोलोङ सिकि का उद्भव एवं विकास" पुस्तक में 24 (चौबीस) स्वर ध्वनियों की व्याख्या की है । जो इस प्रकार है -

(1) बइता सन्नी सरह (Oral Short vowel) - 𑅑, 𑅒, 𑅓, 𑅔, 𑅕, 𑅖 .
(2) बइता दिगहा सरह (Oral Long vowel) - 𑅑:, 𑅒:, 𑅓:, 𑅔:, 𑅕:, 𑅖: .
(3) मुँइता सन्नी सरह (Nasal Short vowel) - 𑅑̇, 𑅒̇, 𑅓̇, 𑅔̇, 𑅕̇, 𑅖̇ .
(4) मुँइता दिगहा सरह (Nasal Long vowel) - 𑅑̇:, 𑅒̇:, 𑅓̇:, 𑅔̇:, 𑅕̇:, 𑅖̇: .

(इस प्रकार कुँड़ुख़ भाषा में कुल 4×6 = 24 (चौबीस) स्वर ध्वनियाँ हुईं । देखें Appendix- A_2)

(7) कुँड़ुख़ भाषा के स्वर ध्वनियों को तोलोङ सिकि के माध्यम से व्याख्या करते समय - 𑅑, 𑅒, 𑅓, 𑅔, 𑅕, 𑅖 (इ, ए, उ, ओ, अ , आ) 6 (छः) मूल स्वर माना गया है, जबकि देवनागरी लिपि में ए एवं ओ दीर्घ या संयुक्त स्वर है ।

इस विवाद पर भाषा विज्ञान का दृष्टिकोण अलग है । डॉ० फ्रांसिस एक्का ने अपनी पुस्तक KŨRUX PHONETIC READER में 6 (छः) अलग-अलग मूल स्वर के रूप में व्याख्या की है । (देखें KŨRUX PHONETIC READER, CIIL Series - 9 Dr. Francis Ekka, P - 13, 20, 25 & 29)

(8) कुँड़ुख़ भाषा की तोलोङ सिकि में 𑅕 (अ) एवं 𑅖 (आ) दो अलग-अलग स्वर एवं चिह्न है जबकि संस्कृत में अ + अ = आ समझा जाता है ।

(9) कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों में - 𑅘 (ज़), 𑅙 (ख़), 𑅚 (ड़) तथा 𑅛 (ढ़) हरह तोड़ (व्यंजन वर्ण) काफी संख्या में हैं जबकि संस्कृत में इसका अभाव है ।

(10) संस्कृत भाषा के शब्दों में ऋ, लृ, ऐ, औ, ण, श, ष, ज्ञ, श्र, क्ष, त्र आदि वर्णों का प्रयोग होता है जबकि तोलोङ सिकि में इसके लिए अलग से वर्ण निर्धारित नहीं किए गए हैं ।

उपरोक्त तथ्यों की ओर ध्यानाकृष्ट करते हुए कहना है कि -

(1) कुँड़ुख़ भाषा हेतु तोलोङ सिकि के समर्थन में वर्णित 6 (छः) मूल स्वर का सिद्धांत सराहणीय है । यह सिद्धांत डॉ० फ्रांसिस एक्का के मार्ग दर्शन पर स्थापित हुआ है ।

(2) तोलोङ सिकि वर्णमाला एवं ध्वनि विज्ञान में वर्णित 𑅑, 𑅒, 𑅓, 𑅔, 𑅕, 𑅖 (इ, ए, उ, ओ, अ, आ) को पूर्ण एवं स्वतंत्र इकाई स्वर ध्वनि मानकर कुँड़ुख़ व्याकरण की व्याख्या करना एक साहसिक कदम है । इस निर्देश को डॉ० एक्का ने अपनी पुस्तक KŨRUX PHONETIC READER में स्पष्ट रूप से किया है ।

इस प्रकार डॉ० फ्रांसिस एक्का एवं डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा प्रस्तुत विचार एवं लेख कुँड़ुख़ भाषा-साहित्य के विकास हेतु एक सरल एवं सुग्राह्य माध्यम साबित होगा । अब जरूरत है समाज को एक सामूहिक निर्णय लेने की तथा इस निर्णय को लेकर आगे बढ़ने की ।

आशा है, मेरी इस अवधारणा को समाज के लोग, खासकर कुँड़ुख़ भाषी गंभीरता पूर्वक विचार करेंगे, जिससे कुँड़ुख़ भाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके ।

दिनांक - 10/10/2010

डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव
गोस्सनर कॉलेज, राँची
(झारखण्ड)

DESCRIPTION OF SPEECH ORGANS

SPEECH TRACT

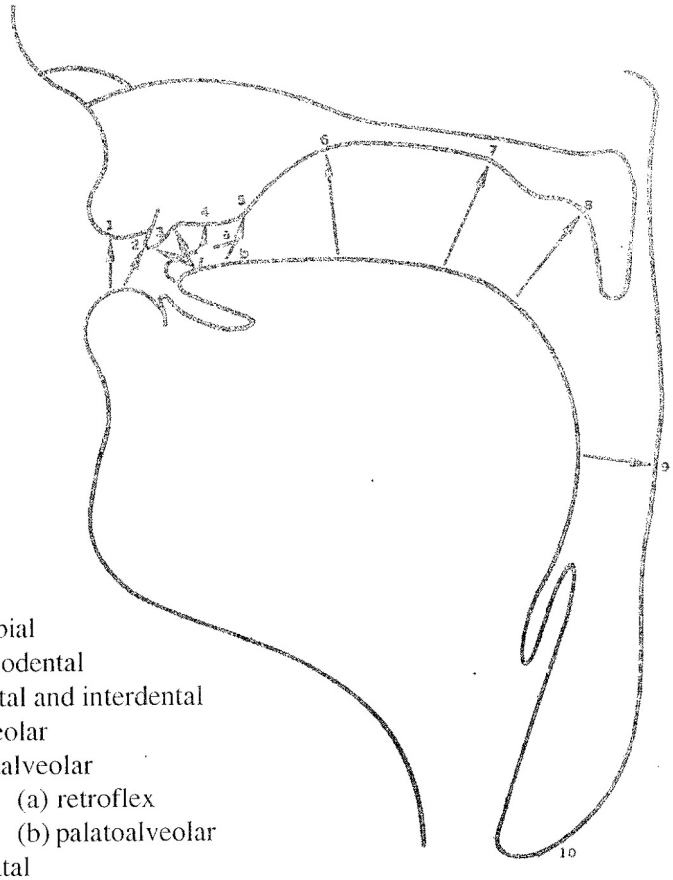

1. Bilabial
2. Labiodental
3. Dental and interdental
4. Alveolar
5. Postalveolar
   (a) retroflex
   (b) palatoalveolar
6. Palatal
7. Velar
8. Uvular
9. Pharyngeal
10. Glottal

A priliminary list of some places of articulation

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	Introduction (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण : एक परिचय)	21
2.	Chapter I - Grammatical Direction (व्याकरण संबंधी निर्देश)	22
3.	Chapter II - Kũrux phones and articulatory discription (कुँड़ुख़ ध्वनियाँ एवं औच्चारणिक विवेचना)	24
4.	Chapter III - Vowel (सरह)	26
	A. Short oral vowel (सन्नी बइता सरह)	26
	B. Short nasal vowel (सन्नी मुँइता सरह)	26
	C. Long oral vowel (दिगहा बइता सरह)	26
	D. Long nasal vowel (दिगहा मुँइता सरह)	26
	E. Diphthongs (मेसका सरह)	27
	a. Oral diphthongs (बइता मेसका सरह).	27
	b. Nasal diphthongs (मुँइता मेझका सरह).	27
5.	Chapter IV - Consonant (हरह)	28
	1. Primary Consonant (मू:ली हरह)	28
	2. Compound Consonant (जोड़ोरका हरह)	29
6.	Chapter V - Glottal stop (हेचका हरह).	30
7.	Chapter VI - Alphabetic arrangement of words (तो:ड़ तरपाँति)	31
8.	Chapter VII - Phonetic drill (हहस कसरत).	32
	A. Uses of short and long 'i'.	32
	B. Uses of short and long 'e'.	32
	C. Uses of short and long 'u'.	33
	D. Uses of short and long 'o'.	33

E. Uses of short and long 'a'. 34
F. Uses of short and long 'a̲'. 34
G. Uses of Primary consonant. 35
H. Uses of Compound consonant. 36
I. Diphthongs. 37

9. Chapter VIII - Presentation of short & long vowel in words 38
10. Chapter IX - Glottal stop, short & long vowel in word. 38
11. Chapter X - Similar looking words. 39
12. Chapter XI - Transliteration of Hindi words in Tolong Siki 39
13. Appendix (चुड्डा पेंच्छो / परिशिष्ट) 43

Appendix - A_1 - A_3 45
(Origin and Development of Tolong Siki
- Dr. N. Oraon Sainda)

Appendix - B_1 - B_4 48
(Khurux Grammar - Rev. F. Hahn)

Appendix - C 52
(An English Uraon Dictionary - Rev. C. Bleces)

Appendix - D_1 - D_2 53
(Oraon English Dictionary - A Grinand)

Appendix - E_1 - E_4 55
(Kũrux phonetic Reader - Dr. F. Ekka)

Appendix - F 59
(Improve your Pronumciation - Victor W. Tirkey)

Appendix - G 60
(Oxford Advance Learner's Dictionary & Current English
- A.S. Hornby)

Appendix - H_1 - H_2 61
(Oxford English - Hindi Dictionary)

Appendix - I_1 - I_3
हिन्दी उर्दू डिक्सनरी - अंजुमन उर्दू तरक्की (हिन्द) प्रकाशन 63
Appendix - J_1 - J_2
Santali Dictionary - P.O. Bodding 66
Appendix - K
Santali Folk Tales - P.O. Bodding 68
Appendix - L_1 - L_3
Encyclopedia Mundarica - John Hoffmann, S.J. 69
Appendix - M_1 - M_2
Encyclopedia Mundarica - P. Ponette, S.J. 72
Appendix - N
Ho-English Dictionary - J. Deeney 74
Appendix - O_1 - O_2
खड़िया ध्वनि शास्त्र ; जूलिसय बाऽ 75
Appendix - P
Kheria Os?nlo? - Kharia Sahitya Samiti 77
Appendix - Q
Latin Grammar - J. Van Bogaert, S.J. 78
Appendix - R_1 - R_2
यजुर्वेद-संस्कृति संस्थान, बरेली 79
Appendix - S_1 - S_5
ऋक् सूक्त संग्रहः डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार 81
Appendix - T
श्रीशुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टध्यायी 86
Appendix - U_1 - U_2
लघु सिद्धांत कमौदी : श्रीमद्विद्वद्वर-वरदराचार्यप्रणीता 87
Appendix - V_1 -V_3
संस्कृत सहचर - आचार्य राधामोहन उपाध्याय 89

Appendix - W_1 -W_6
Student's Sanskrit-English Dictionary - V. S. APTE 92

Appendix - X
अंग्रेजी-हिन्दी कोश - फादर कमिल बुल्के 98

Appendix - Y_1 - Y_5 .
Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey 99

Appendix - Z_1 - Z_4
कत्थ अरा बिल्लिन ईद'उ - डॉ० ख्रिस्त मिखाईल तिग्गा 104

Appendix - AB_1 - AB_4
कुँड़ुख़-कत्थ बिल्ली - पी० सी० बेक 108

Appendix -BC_1 - BC_3
Malto, An ethnosemantic Study - B.P. Mahapatra 112

Appendix - CD_1 - CD_4
कम्प्लीट गिटार गाईड - संगीताचार्य मनोरंजन भारती 115

13. Thought's and opinion (विविध विचार) 119

14. Bibliographi (संदर्भ सूची) 136

कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण

Introduction (एक परिचय)

"कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" का शाब्दिक अर्थ कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण है । भाषा विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टिकोण से भाषा की मूल इकाई ध्वनि है । इस मूल ध्वनि को किसी संकेत से सूचित किये जाने पर वह वर्ण कहलाता है । इसी इकाई ध्वनि एवं संकेत को एक विशेष नाम या उच्चारण से संबोधित करते हुए लिखने-पढ़ने का का किया जाता है । अर्थात् किसी भाषा में उच्चरित मूल इकाई ध्वनि को जबतक आँख की भाषा नहीं बनायी जाती है, तबतक उसे संग्रहित करने तथा समझने-समझाने में कठिनाई होती है । दूसरी ओर एक जनसाधारण अपनी विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति मूँह से बोलकर, या दूसरे की बात को कान से सुनकर समझता एवं बोलता है, जिसे साधारण रूप में संयोकर रखना विशेष तकनीक के बिना मुश्किल है । यही कारण है कि कान की भाषा परिवर्तनशील होती है जबकि आँख की भाषा को स्थायित्व प्रदान होता है । इसी प्रकार यदि आदिवासी भाषा को भी स्थायित्व प्रदान होगा तो उसकी संस्कृति को भी स्थायित्व मिलेगा । अतएव आँख की भाषा (Visual Language) एवं कान की भाषा (Verbal Language) में से ध्वनि ऊर्जा को संग्रहण एवं संवर्द्धन हेतु आँख की भाषा का विकास किया जाना आवश्यक है । इस विद्या को जिस किसी समुदाय ने अपनाया वह आज की तिथि में विकास की ऊँचाई पर है ।

वर्तमान में अब जब आदिवासी समाज विशेषकर उराँव समाज ने कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में "तोलोंङ सिकि" को स्वीकार कर पठन-पाठन का कार्य आरंभ कर दिया है तथा झारखण्ड सरकार एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची से 19 फरवरी 2009 को मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ विषय के प्रश्न पत्र तोलोङ लिपि में लिखने की अनुमति मिलने के पश्चात् सरकारी स्तर पर भी आगे बढ़ने का रास्ता साफ हो गया है । इस परिस्थिति में हमारे विद्यार्थियों के सामने देवनागरी, रोमन एवं तोलोङ सिकि में लिप्यन्तरण की समस्या आयी, क्योंकि पढ़ने-लिखने वालों के लिए एक लिपि से दूसरे लिपि में लिप्यन्तरण किये जाते समय एक निश्चित मापदण्ड तो होना ही चाहिए । इसी समस्या के समाधान हेतु तोलोङ सिकि को आधार मानकर इन तीनों लिपियों में लिप्यन्तरण किया गया है ।

आशा है हमारे इस प्रयास को आप सभी स्वीकार करेंगे तथा इसके संवर्द्धन हेतु यथोचित मार्गदर्शन दिया करेंगे ।

CHAPTER - I

व्याकरण संबंधी निर्देश

1. 'तोलोङ सिकि' अथवा 'तोलोङ लिपि' एक वर्णात्मक लिपि है । इसे 'रोमन लिपि' की तरह एक के बाद एक लिखा जाता है । यह 'देवनागरी लिपि' में मात्रा चिह्न लगाने की परम्परा से मुक्त है । इस लिपि से किसी शब्द को उसके शब्द-खण्ड (Syllable) के आधार पर लिखा एवं पढ़ा जाता है । जैसे - कमहड़ । इस शब्द में कम् + हड़, दो खण्ड है । इसे तोलोङ सिकि में इस प्रकार लिखा जाता है - [illegible] + [illegible] = [illegible].

2. किसी एक शब्द-खण्ड में व्यंजन वर्ण के साथ कम से कम एक स्वर वर्ण का होना आवश्यक है । बिना स्वर के शब्द-खण्ड पूरा नहीं होता है । जैसे - [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

3. किसी शब्द-खण्ड में एक मात्र स्वर रह सकता है किन्तु व्यंजन, स्वर के बिना अकेला नहीं रह सकता । जैसे - [illegible] (ओ+था), [illegible] (ओ+थोर+आ)।

4. किसी शब्द-खण्ड में स्वर के बाद अधिक से अधिक दो व्यंजन हो सकते हैं । जैसे - [illegible] + [illegible] = [illegible] (बर्ह + मा:रना = बर्हमा:रना)।

5. यदि किसी शब्द-खण्ड के प्रथम दोनों आरंभिक वर्ण, व्यंजन हो तो पहला व्यंजन, दूसरे व्यंजन के साथ संयुक्त होकर बाद वाला व्यंजन के स्वर के अनुरूप उच्चरित होता है। जैसे - प्यार - [illegible], क्रिया - [illegible].

6. शब्द-खण्ड का अंतिम वर्ण यदि 'अकारान्त' हो, तो वह स्वर रहित होता है । जैसे - कर्म - [illegible], समान - [illegible]. यहाँ अन्तिम वर्ण म् एवं न् स्वर रहित है, चूंकि शब्द-खण्ड का दोनों अन्तिम वर्ण 'अकारान्त' है ।

7. यदि किसी शब्द में प्रथम शब्द-खंड के बाद शब्द-खंड के रूप में स्वर आए तो उसे पूर्व के शब्द-खंड से अलग दिखलाने के लिए घेतला (') चिह्न दिया जाता है । इसके अतिरिक्त इस चिह्न का प्रयोग वैसे स्थान पर भी होता है जहाँ एक वर्ण प्रथम शब्द-खंड के अंतिम वर्ण के रूप में तथा बाद वाले शब्द खंड के प्रथम वर्ण के रूप में एक ही स्थान पर व्यवस्थित हो । वैसी स्थिति में इसके उच्चारण एवं शब्द-खंड को दिखलाने के लिए घेतला चिह्न (शब्द खंड सूचक चिह्न) दिया जाता है। जैसे - पर्दो - [illegible], पर्दओ - [illegible], बन्ना - [illegible], बनना - [illegible].

8. यदि "प" वर्ग, "त" वर्ग, "ट" वर्ग, "च" वर्ग, "क" वर्ग के निरनुनासिक वर्ण के पहले अनुनासिक ध्वनि आये तो उस स्थान को अपने-अपने वर्ग का पंचम वर्ण स्थान ग्रहण करता है । जैसे - रम्फ, मेन्त, चेण्ठ, पंच, कंक क्रमश: [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि ।

9. यदि य, र, ल, व, स, ह, ख़, ड़, ढ़ आदि के पहले, अनुनासिक ध्वनि हो, तो क्रमश: अपने उच्चारण स्थान के अनुसार अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक स्थान लेता है । अत: इन वर्णों के पूर्व अनुनासिक ध्वनि रहने पर, अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न मितला (̇) दिया जाता है । जैसे - [illegible]- [illegible]-[illegible], [illegible]- [illegible]-[illegible], [illegible]- [illegible], [illegible]- [illegible]-[illegible], [illegible]-[illegible], [illegible]- [illegible],

ന - ൻന, ട - ൻടന ; किन्तु कुछ देशज एवं विदेशज शब्दों के प्रयोग में 'स' वर्ण के पूर्व 'न' का भी प्रयोग होता है । जैसे - सन्स - ൭ാൺ൭.

10. यह लिपि वर्णात्मक है इसलिए हलन्त का प्रयोग नहीं होता है ।

11. सेला (:) चिह्न का प्रयोग स्वर के उच्चारण समय को लम्बा करने तथा हेचका (|) का प्रयोग, स्वर को झटके के साथ उच्चारण करने के स्थान पर किया जाता है । जैसे - ൾ:ടന (ए:ड़ा) = बकरी, ൮ാൺന (बअ्ना) = बोलना ।

12. कुछ देशज एवं विदेशज ध्वनियाँ हैं, जिनका उच्चारण सीखना चाहिए, जिससे दूसरी भाषाओं को भी सही-सही बोला एवं लिखा जा सके । इसके लिए कुछ ध्वनि चिह्न के साथ ध्वनि मान दिया गया है । जैसे - ൮ാൻ (बॉल), ൭ാഖാഗ (फ़ादर), ൭ാഗൾ (शरीफ़ा)।

13. मितला (ं) का प्रयोग देवनागरी लिपि के चन्द्र बिन्दु (ँ) के स्थान पर होता है अर्थात मितला चिह्न अनुनासिक स्वर सूचक है, जबकि देवनागरी लिपि के बिन्दु (ं) चिह्न का प्रयोग अपने-अपने वर्ग के वर्णों से पहले व्यवहारित पंचम वर्ण का द्योतक है यथा व्यंजन वर्ण का द्योतक है । जैसे- ാടന, ാന, ാനന, ൻൾ:ൾ, ൻൾ:ൻൾ, ൻന, ൮ൾ:ടൾ, ൺടന ൺടനൾ.

14. शब्द के अन्त में यदि अकारान्त संयुक्त 'र' हो, तो 'र' के पूर्व वर्ण में रेवाँ 'र' देकर लिखा जाता है, जैसे- राष्ट्र - ഗാൾ, मित्र - ഖൾ, वक्र - ഗാൾ.

15. देवनागरी लिपि से कुँड़ुख़ भाषा के सभी ध्वनियों को ज्यों का यों लिखने में कठिनाई होती है । अतएव देवनागरी लिपि के मूल सिद्धांत 'एक ध्वनि एक संकेत' के अनुसार तथा पुनरूक्ति दोष से बचने हेतु प्रचलित ध्वनि चिह्न के नीचे या ऊपर 'भाषा विज्ञान एवं तकनीकि सम्मत,' पूरक चिह्न देकर पढ़ने एवं लिखने के तरीके को इस प्रस्तुति में अपनाया गया है जैसा कि उर्दू भाषा के ध्वनियों को दिखलाने के लिए देवनागरी अक्षर के नीचे विन्दु देने की मान्यता है । जैसे - क़, ख़, ग़, ब़, फ़, ज़, व़ आदि । कुँड़ुख़ भाषा के ध्वनियों के लिए पूरक चिह्न का प्रयोग इस प्रकार किया गया है :-

(क) दिगहा सरह (Long Phone) को दिखलाने के लिए दिगहा ए एवं दिगहा ओ ध्वनि को क्रमश: ए: तथा ओ: की तरह लिखकर पढ़ा एवं समझा गया है। फादर कामिल बुल्के की पुस्तक "अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश" में अक्षर के बाद ' : ' (कॉलन) चिह्न देकर दिगहा सरह (Long Phone) को दिखलाने के लिए व्यवहार किया गया है । इस पद्धति को हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ० दिनेश्वर प्रसाद द्वारा भी समर्थन किया गया है। जैसे - कों:ड़ा-कों:ड़ा, मो:ड़ा, ओ:ड़ा, ए:ड़ा, ते:ला, मो:ख़ो आदि ।

(ख) हेचका हरह (Glotal stop) को दिखलाने के लिए 'अ्' चिह्न का व्यवहार किया गया है । जैसे - रअ्ना, बअ्ना, चिअ्ना, बिअ्ना नेअ्ना, खेअ्ना, होअ्ना, चोअ्ना आदि ।

(ग) कुँड़ुख़ भाषा की उच्चारण विशेषता को दिखलाने के लिए घेतला चिह्न (') यानि शब्दखण्ड सूचक चिह्न दिया गया है। जैसे - बरई - बर'ई, कमई - कम'ई इत्यादि ।

(घ) कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को, 'रोमन लिपि' में लिप्यन्तरण हेतु स्व० डॉ० फ्रांसिस एक्का (पूर्व प्राध्यापक एवं निदेशक, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर) के 6 (six) vowel concept के सिद्धांत को स्वीकार किया जाना चाहिए, जो प्रयोग की दृष्टि से उत्तम है। इस सिद्धांत के अनुसार छठवाँ vowel के रूप में A या a के नीचे पड़ी लकीर देकर लिखा गया है । जैसे :- i, e, u, o, a, a̲ यथा अ = a, आ = a̲, अँ = ã, आँ = ã̲ आदि ।

CHAPTER - II

कुँड़ुख़ ध्वनि एवं औच्चारणिक विवेचना

Kũṛux phones and Articulatory Discription

ᑭ (इ) - संवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑭ: (इ:) - संवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑭ̇ (इँ) - संवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑭ̇: (इँ:) - संवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑫ (ए) - अर्द्धसंवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑫ: (ए:) - अर्द्धसंवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑫ̇ (इँ) - अर्द्धसंवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑫ̇: (इँ:) - अर्द्धसंवृत, सघोष, आवृतमुखी, अग्र, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑯ (उ) - संवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑯ: (उ:) - संवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑯ̇ (उँ) - संवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑯ̇: (उँ:) - संवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑰ (ओ) - अर्द्धसंवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑰ: (ओ:) - अर्द्धसंवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑰ̇ (ओं) - अर्द्धसंवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑰ̇: (ओं:) - अर्द्धसंवृत, सघोष, वृतमुखी, पश्च, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑲ (अ) - अर्द्धविवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑲ: (अ:) - अर्द्धविवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑲ̇ (अँ) - अर्द्धविवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑲ̇: (अँ:) - अर्द्धविवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑲ (आ) - विवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, मौखिक, सन्नी सरह ।
ᑲ: (आ) - विवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, मौखिक, दिगहा सरह ।
ᑲ̇ (आँ) - विवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, नासिक्य, सन्नी सरह ।
ᑲ̇: (आँ:) - विवृत, सघोष, आवृतमुखी, पश्च, नासिक्य, दिगहा सरह ।
ᑌ (प्) - ओष्ठ्य, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
ᑌ (फ्) - ओष्ठ्य, स्पर्शी, अघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
ᑌ (ब्) - ओष्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।

൭ (भ्) - ओष्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൬ (म्) - ओष्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൫ (त्) - दंत्य, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൪ (थ्) - दंत्य, स्पर्शी, अघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൩ (द्) - दंत्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൨ (ध्) - दंत्य, स्पर्शी, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൧ (न्) - दंत्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൦ (ट्) - मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൯ (ठ्) - मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൮ (ड्) - मूर्द्धन्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൭ (ढ्) - मूर्द्धन्य, स्पर्शी, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൬ (ण्) - मूर्द्धन्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൫ (च्) - तालव्य, स्पर्श - संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൪ (छ्) - तालव्य, स्पर्श - संघर्षी, अघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൩ (ज्) - तालव्य, स्पर्श - संघर्षी, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൨ (झ्) - तालव्य, स्पर्श - संघर्षी, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൧ (ञ्) - तालव्य, स्पर्श - संघर्षी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൦ (क्) - कण्ठ्य, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൯ (ख्) - कण्ठ्य, स्पर्शी, अघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൮ (ग्) - कण्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൭ (घ्) - कण्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൬ (ङ्) - कण्ठ्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൫ (य्) - तालव्य, संघर्षहीन-सप्रवाही, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक अर्द्धस्वर व्यंजन ।
൪ (र्) - वर्त्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൩ (ल्) - वर्त्स्य, पार्श्विक, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൨ (व्) - दंतोष्ठ्य, संघर्षहीन-सप्रवाही, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक अर्द्धस्वर व्यंजन ।
൧ (ऋ) - तालव्य, स्पर्शी, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यंजन ।
൦ (स्) - वर्त्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൯ (ह्) - स्वरयंत्रमुखी, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൮ (ख़्) - जिह्वामूलीय, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൭ (ड़्) - मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त, सघोष, अल्पप्राण, मौखिक व्यंजन ।
൬ (ढ़्) - मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त, सघोष, महाप्राण, मौखिक व्यंजन ।
। (तला) - स्वरयंत्र मुख स्पर्शी, व्यंजन ।

CHAPTER - III
VOWELS

Tolong siki (तोलोङ सिकि)	-	**Roman script** (रोमन लिपि)	-	**Devanagri lipi** (देवनागरी लिपि)
		1. Short oral vowel -		
𞤤	-	i	-	इ
𞤥	-	e	-	ए
𞤦	-	u	-	उ
𞤧	-	o	-	ओ
𞤨	-	a	-	अ
𞤩	-	a̲	-	आ
		2. Short nasal vowel -		
𞤤̃	-	ĩ	-	इँ
𞤥̃	-	ẽ	-	एँ
𞤦̃	-	ũ	-	उँ
𞤧̃	-	õ	-	ओं
𞤨̃	-	ã	-	अँ
𞤩̃	-	ã̲	-	आँ
		3. Long oral vowel -		
𞤤:	-	i:	-	इः
𞤥:	-	e:	-	एः
𞤦:	-	u:	-	उः
𞤧:	-	o:	-	ओः
𞤨:	-	a:	-	अः
𞤩:	-	a̲:	-	आः
		4. Long nasal vowel -		
𞤤̃:	-	ĩ:	.	इँः
𞤥̃:	-	ẽ:	.	एँः
𞤦̃:	-	ũ:	.	उँः
𞤧̃:	-	õ:	.	ओंः
𞤨̃:	-	ã:	.	अँः
𞤩̃:	-	ã̲:	.	आँः

5. Oral diphthong -

꠰꠹	-	ai	-	अइ
꠰꠺	-	au	-	अउ
꠰꠵	-	ay	-	अय
꠰꠶	-	aw	-	अव
꠹꠺	-	iu	-	इउ
꠹꠵	-	iy	-	इय
꠹꠶	-	iw	-	इव
꠺꠹	-	ui	-	उइ
꠺꠵	-	uy	-	उय
꠺꠶	-	uw	-	उव
꠸꠹	-	ei	-	एइ
꠸꠺	-	eu	-	एउ
꠸꠵	-	ey	-	एय
꠸꠶	-	ew	-	एव
꠼꠹	-	oi	-	ओइ
꠼꠺	-	ou	-	ओउ
꠼꠵	-	oy	-	ओय
꠼꠶	-	ow	-	ओव
꠰꠹	-	<u>a</u>i	-	आइ
꠰꠺	-	<u>a</u>u	-	आउ
꠰꠵	-	<u>a</u>y	-	आय
꠰꠶	-	<u>a</u>w	-	आव

6. Nasal diphthong -

꠰꠹	-	ãi	-	अँइ
꠰꠺	-	ãu	-	अँउ
꠰꠵	-	ãy	-	अँय
꠰꠶	-	ãw	-	अँव
꠹꠺	-	ĩu	-	इँउ
꠹꠵	-	ĩy	-	इँय
꠹꠶	-	ĩw	-	इँव
꠺꠹	-	ũi	-	उँइ
꠺꠵	-	ũy	-	उँय

ঁব	-	ũw	-	उँव
ঁই	-	ẽi	-	एँइ
ঁউ	-	ẽu	-	एँउ
ঁয	-	ẽy	-	एँय
ঁব	-	ẽw	-	एँव
ঁই	-	õi	-	ओंइ
ঁউ	-	õu	-	ओंउ
ঁয	-	õy	-	ओंय
ঁব	-	õw	-	ओंव
াঁই	-	ãi	-	आँइ
াঁউ	-	ãu	-	आँउ
াঁয	-	ãy	-	आँय
াঁব	-	ãw	-	आँव

CHAPTER - IV
CONSONANTS

1. Primary consonant

ক	-	p	-	प्
খ	-	ph	-	फ्
গ	-	b	-	ब्
ঘ	-	bh	-	भ्
ঙ	-	m	-	म्
চ	-	t	-	त्
ছ	-	th	-	थ्
জ	-	d	-	द्
ঝ	-	dh	-	ध्
ঞ	-	n	-	न्
ট	-	ṭ	-	ट्
ঠ	-	ṭh	-	ठ्
ড	-	ḍ	-	ड्
ঢ	-	ḍh	-	ढ्
ণ	-	ṇ	-	ण्
চ	-	ch	-	च्

ൟ	-	chh	-	छ्
ൠ	-	j	-	ज्
ൡ	-	jh	-	झ्
ൢ	-	n̈	-	ञ्
ൣ	-	k	-	क्
൤	-	kh	-	ख्
൥	-	g	-	ग्
൦	-	gh	-	घ्
൧	-	ṅ	-	ङ्
൨	-	y	-	य्
൩	-	r	-	र्
൪	-	l	-	ल्
൫	-	w	-	व्
൬	-	n̤	-	ऩ्
൭	-	s	-	स्
൮	-	h	-	ह्
൯	-	x	-	ख़्
൰	-	ṛ	-	ड़्
൱	-	ṛh	-	ढ़्

2. Compound consonant

൲	-	pp	-	प्प्
൳	-	pph	-	प्फ्
൴	-	bb	-	ब्ब्
൵	-	bbh	-	ब्भ्
൶	-	mm	-	म्म्
൷	-	tt	-	त्त्
൸	-	tth	-	त्थ्
൹	-	dd	-	द्द्
ൺ	-	ddh	-	द्ध्
ൻ	-	nn	-	न्न्
ർ	-	t̤t̤	-	ट्ट्
ൽ	-	t̤t̤h	-	ट्ठ्
ൾ	-	d̤d̤	-	ड्ड्

ಡಢ	-	ḍḍh	-	ड्ढ्
ಣಣ	-	ṇṇ	-	ण्ण्
ಚಚ	-	chch	-	च्च्
ಚಛ	-	chchh	-	च्छ्
ಜಜ	-	jj	-	ज्ज्
ಜಝ	-	jjh	-	ज्झ्
ಕಕ	-	kk	-	क्क्
ಕಖ	-	kkh	-	क्ख्
ಗಗ	-	gg	-	ग्ग्
ಗಘ	-	ggh	-	ग्घ्
ಯಯ	-	yy	-	य्य्
ರರ	-	rr	-	र्र्
ಲಲ	-	ll	-	ल्ल्
ವವ	-	ww	-	व्व्
ಸಸ	-	ss	-	स्स्

CHAPTER - V

Glottal stop (। - ऽ - अ्)

1. Oral glottal stop

ಏ।	-	इअ्
ಎ।	-	एअ्
ಉ।	-	उअ्
ಒ।	-	ओअ्
ಅ।	-	अअ्
ಆ।	-	आअ्

2. Nasal glottal stop

ಏಁ।	-	इँअ्
ಎಁ।	-	एँअ्
ಉಁ।	-	उँअ्
ಒಁ।	-	ओंअ्
ಅಁ।	-	अँअ्
ಆಁ।	-	आँअ्

CHAPTER - VI

Arrangement of alphabets in word

1. ᱜᱤᱞᱟᱜᱟ (कइल'गा)
क् + अ + इ + ल् + ग् + आ (हिज्जा)
k + a + i + l + g + a̲ (arrangement of alphabets)

2. ᱠᱤᱚᱞᱚᱛᱟᱚᱛ (हिन्दुस्तान)
ह् + इ + न् + द् + उ + स् + त् + आ + न्
h + i + n + d + u + s + t + a̲ + n

3. ᱵᱤᱞᱚᱞᱟᱠᱟᱞ (विद्यालय)
व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य्
v + i + d + y + a̲ + l + a + y

4. ᱨᱟᱸᱪᱤ (राँची)
र् + आँ + च् + ई
r + ã̲ + ch + i

5. ᱡᱟᱢᱥᱚᱞᱚᱠᱤ (जमशेदपुर)
ज् + अ + म् + श् + ए + द् + प् + उ + र्
j + a + m + sh + e + d + p + u + r

6. ᱚᱟᱠᱭᱟᱞᱚᱟ (दरभंगा)
द् + अ + र् + भ् + अ + ङ् + ग् + आ
d + a + r + bh + a + ṅ + g + a̲

7. ᱚᱠᱞᱚᱜᱟ (दुमका)
द् + उ + म् + क् + आ
d + u + m + k + a̲

8. ᱜᱤᱠᱤᱫᱤᱠ (गिरिडीह)
ग् + इ + र् + इ + ड् + ई + ह्
g + i + r + i + d + i + h

9. ᱜᱟᱚᱟ (गया)
ग् + अ + य् + आ
g + a + y + a̲

10. ᱧᱟᱚᱞᱟᱚᱛ (धनबाद)
ध् + अ + न् + ब् + आ + द्
dh + a + n + b + a̲ + d

11. ᱚᱢᱟᱚᱟ (नेअ्ना)
न् + ए + अ् + ना
n + e + ? + n + a̲

12. ᱟᱞᱟᱠᱦᱟᱚᱟ (अलखताअ्ना)
अ + ल् + अ + ख् + त् + आ + अ् + न् + आ
a + l + a + kh + t + a̲ + ? + n + a̲

CHAPTER - VII

Phonetic drill

1. Use of short and long 'i' (ಿ).

ಿಚಿನಾ	-	ichna	-	इचना	=	रोपना
ಿಋಿನಾ	-	irna	-	इड़ना	=	भूनना
ತಿತಿರ	-	titir	-	तितिर	=	तीतर
ತಿರಿಯೊ	-	tiryo	-	तिरयो	=	बाँसुरी
ಬಿಋಿನಾ	-	birna	-	बिड़ना	=	धूप
ಬೀಃಋಿನಾ	-	b̃irna	-	बींःड़ना	=	बिस्तार करना
ಿಃರಿ	-	i:ri	-	ईःरी	=	देखती है
ಕ್ಷಿಃರಿ	-	xi:ri	-	ख़ीःरी	=	कहानी
ಕಿಃಟಾ	-	ki:ṭa	-	कीःड़ा	=	भूख
ತಿಃನಿ	-	ti:ni	-	तीःनी	=	मधुमक्खी
ಬಿಃರಿ	-	bi:ṛi	-	बीःड़ी	=	सूर्य
ಬೀಃರಿ	-	b̃i:ṛi	-	बींःड़ी	=	रानी

2. Use of short and long 'e' (ೆ).

ೆಎಪಾ	-	erpa	-	एड़पा	=	घर
ೆತ್ತಿನಾ	-	ettna	-	एत्तना	=	उतरना
ಢೆರಾ	-	dhera	-	ढेरा	=	ढेरा
ಮೆಲಾ	-	mela	-	मेला	=	मेला
ಕೆಎಡಾ	-	kera	-	केड़ा	=	केला
ಡೆನಾ	-	dena	-	डेना	=	डैना
ಟೆಟೆ	-	tete	-	टेटे	=	फतिंगा
ೇಃಋಾ	-	e:rā	-	एःड़ा	=	बकरी
ೇಃರಾ	-	e:ra	-	एःरा	=	देखो
ಕ್ಷೇಃತಾ	-	xe:ta	-	ख़ेःता	=	दोना
ಪೇಃಠ	-	pe:th	-	पेःठ	=	बाजार
ಮೇಃರ	-	me:r	-	मेःर	=	धागा
ಕ್ಷೇಃರ	-	xe:r	-	ख़ेःर	=	मुर्गी
ಕ್ಷೇಂಃಸ	-	x̃e:s	-	ख़ेंःस	=	खून
ತೇಃಲಾ	-	te:la	-	तेःला	=	केन्द

3. Use of short and long 'u' (ᴚ).

ᴚᴗᴘ	-	ugi	-	उगी	=	सिका
ᴚᴗᴖᴛ	-	ugta	-	उगता	=	हल
ᴚᴗᴖᴛᴙ	-	umtaha	-	उमतहा	=	पागल
ᴗᴚᴗᴛ	-	muka	-	मुका	=	घुटना
ᴙᴚᴗᴛ	-	huka	-	हुका	=	हुक्का
ᴙᴚᴗᴛ	-	hu:da	-	हुदा	=	ख्याति
ᴗᴚᴗᴗᴛ	-	mukka	-	मुक्का	=	औरत
ᴗᴚᴛᴛᴛ	-	kulla	-	कुल्ला	=	छाता
ᴗᴚᴛᴛᴛ	-	nolla	-	नोल्ला	=	छानो
ᴚ:ᴛᴛ	-	u:ra	-	ऊरा	=	झिंगुर
ᴚ:ᴖᴛ	-	u:xa	-	ऊख़ा	=	अंधेरा
ᴚ:ᴛᴚ	-	u:ru	-	ऊ:रू	=	गोबरैला
ᴗᴚ̇:ᴗ	-	pũ:p	-	पूँ:प	=	फूल
ᴗᴚ:ᴛᴚ	-	pu:ru	-	पू:रू	=	पागल
ᴗᴚ:ᴖᴘ	-	mu:xi	-	मू:ख़ी	=	खाती है
ᴗᴚ:ᴛᴘ	-	mu:li	-	मू:ली	=	जड़
ᴗᴚ:ᴛᴘ	-	dhu:li	-	धू:ली	=	धूल
ᴗᴚ:ᴗᴘ	-	ku:bi	-	कू:बी	=	कुआँ

4. Use of short and long 'o' (ᴚ).

ᴚᴗᴗᴛ	-	osga	-	ओसगा	=	मूस
ᴚᴛᴚᴖ	-	orot	-	ओरोत	=	अकेला
ᴚᴛᴗᴛᴛ	-	ormar	-	ओरमर	=	सभी
ᴖᴚᴖᴚᴛ	-	xochol	-	ख़ोचोल	=	हड्डी
ᴗᴚᴛᴛ	-	gola	-	गोला	=	गेहुँवा रंग
ᴙᴚᴛᴛ	-	hola	-	होला	=	हलुवा
ᴖᴚᴗᴛ	-	ṭona	-	टोना	=	गाँठ
ᴖᴚᴗᴛ	-	jhopa	-	झोपा	=	गुच्छा
ᴗᴚᴛᴛ	-	dowa	-	दोवा	=	दुआ
ᴚ:ᴘᴛ	-	o:ṛa	-	ओ:ड़ा	=	चिड़ियां
ᴚ:ᴗᴛ	-	o:sa	-	ओ:सा	=	मसरूम
ᴗᴚ:ᴘᴛ	-	mo:ra	-	मो:ड़ा	=	मोरा

ഗ്ര:ഴ്ന	-	no:ṛa	-	नो:ड़ा	=	धोओ
ല്ര:ഗ്ന	-	mo:cha	-	मो:चा	=	काटो
ല്ര:ന്ന	-	mo:xa	-	मो:ख़ा	=	खाओ
ല്ര:ങ്ര	-	bo:lo	-	बो:लो	=	नवजात
ധ്ര:ഡ്ര	-	go:do	-	गो:दो	=	घड़ियाल
ഗ്ര:ധ്യ	-	ro:ge	-	रो:गे	=	रोग

5. Use of short and long 'a' (า).

ാ്ര	-	ayang	-	अयङ	=	माँ
ാ്ന	-	ana	-	अना	=	हे
ാ്ന	-	atxa	-	अतख़ा	=	पत्ता
ാ്ഡ്ഗ	-	adin	-	अदिन	=	उसे
ാ്ല്ഴ	-	amṛi	-	अमड़ी	=	माँड़
ാ്ത്ല	-	asma	-	असमा	=	रोटी
ാ്ഴ്ന	-	aṛxa	-	अड़ख़ा	=	साग
ാ്ഹ്ഴ	-	ahṛa	-	अहड़ा	=	मांस
ഗാ്ങാ	-	kalay	-	कलय	=	जाओ (स्त्री०)
ഗാ്ങ	-	kala	-	कला	=	जाओ (पु०)
ലാ്ഗ	-	bara	-	बरा	=	आओ
ലാ്ല	-	baba	-	बबा	=	पिताजी
ല്ര	-	maya	-	मया	=	दया
ല്ര	-	paya	-	पया	=	ताकत
ഗാ്ന	-	tatxa	-	ततख़ा	=	जीभ
ഗാ്ന	-	ṭaṭxa	-	टटख़ा	=	आम
ഗാ:ങ	-	ka:w	-	क:व	=	जाएगी
ഡാ:ങ	-	da:w	-	द:व	=	अच्छा

6. Use of short and long 'a' (ന).

ന്ദ	-	al	-	आल	=	आदमी
ന്ഗ	-	chak	-	चाक	=	चक्का
ന്ഴ	-	xaṛ	-	ख़ाड़	=	नदी
ധ്ന	-	gan̄	-	गाञ़	=	ढेर
ശ്ന	-	khar	-	खार	=	नमकीन
ശ്ന	-	ghagh	-	घाघ	=	जलप्रपात
ശ്ന	-	ghaṭo	-	घाटो	=	घाटो पक्षी

ꠀ꠰ꠇꠋ	-	a:las	-	आ:लस	=	पुरुष
ꠀ꠰ꠇꠔ	-	a:li	-	आ:ली	=	महिला
ꠀ꠰ꠋ	-	a:s	-	आ:स	=	वह (पुलिंग)
ꠀ꠰ꠌ	-	a:d	-	आ:द	=	वह (स्त्रीलिंग)
ꠀ꠰ꠇꠖ	-	a:lar	-	आ:लर	=	आदमी लोग
ꠁꠀ꠰ꠁꠀ	-	xa:xa	-	ख़ा:ख़ा	=	चिड़िया
ꠂꠀ꠰ꠄꠀ	-	ta:ka	-	ता:का	=	हवा
ꠃꠀ꠰ꠅꠀ	-	ḍa:ṛa	-	डा:ड़ा	=	डाली
ꠄꠀ꠰ꠌꠀ	-	pa:da	-	पा:दा	=	जड़
ꠇꠀ꠰ꠂꠀ	-	la:ta	-	ला:ता	=	बिल
ꠂꠀ꠰ꠃꠔ	-	ta:chi	-	ता:ची	=	फूआ

7. Primary consonant :-

ꠄ	-	प्	-	ꠄꠀꠄꠇꠀ	-	papla	-	पपला
꠆	-	फ्	-	꠆ꠇꠖꠀ	-	pharsa	-	फरसा
ꠅ	-	ब्	-	ꠅꠇꠔ	-	bali	-	बली
꠆	-	भ्	-	꠆ꠇꠌꠅꠔ	-	bhadṛi	-	भदड़ी
ꠇ	-	म्	-	ꠇꠇꠃꠀ	-	macha	-	मचा
ꠂ	-	त्	-	ꠂꠂꠁꠀ	-	tatxa	-	ततख़ा
ꠃ	-	थ्	-	ꠃꠇꠀ	-	thaṛa	-	थड़ा
ꠌ	-	द्	-	ꠌꠇꠇꠔ	-	dauli	-	दउली
ꠍ	-	ध्	-	ꠍꠇꠄꠇ	-	dhanu	-	धनु
ꠎ	-	न्	-	ꠎꠇꠅꠀ	-	naṛga	-	नड़गा
ꠏ	-	ट्	-	ꠏꠏꠁꠀ	-	ṭaṭxa	-	टटख़ा
ꠐ	-	ठ्	-	ꠐꠇꠄꠔ	-	ṭharki	-	ठरकी
ꠑ	-	ड्	-	ꠑꠇꠅꠀ	-	ḍauṛa	-	डउड़ा
ꠒ	-	ढ्	-	ꠒꠇꠖꠀ	-	ḍhera	-	ढेरा
ꠓ	-	ण्	-	ꠓꠇꠎꠔ	-	maṇḍi	-	मण्डी
ꠔ	-	च्	-	ꠔꠇꠄꠔ	-	chalki	-	चलकी
ꠕ	-	छ्	-	ꠕꠏꠄꠀ	-	chhaṭka	-	छटका
ꠖ	-	ज्	-	ꠖꠂꠀ	-	jata	-	जता
ꠗ	-	झ्	-	ꠗꠇꠎꠀ	-	jhaṇḍa	-	झण्डा
ꠘ	-	ञ्	-	ꠘꠔꠘꠀ	-	Chiṅa	-	चिञा
ꠙ	-	क्	-	ꠙꠇꠅꠝ	-	kakṛo	-	ककड़ो
ꠚ	-	ख्	-	ꠚꠇꠄꠀ	-	kharpa	-	खरपा

ಘ	-	ग्	-	ಘಾಲಛ॥	-	gamchha	-	गमछा
ಘ	-	घ्	-	ಘಾಳಿ	-	ghari	-	घड़ी
ಲ	-	ड्	-	ದೞಲ॥	-	dona	-	डोङा
ಽ	-	य्	-	ಗಿಽಽ॥	-	kiya	-	किया
ಱ	-	र्	-	ಱಾಭಳಿ	-	rasri	-	रसड़ी
ಶ	-	ल्	-	ಶಾಠಠು	-	lattu	-	लट्टू
ಙ	-	व्	-	ಧಾಙ॥	-	jawa	-	जवा
ಸ	-	ञ्	-	ಙಾಸ॥	-	mana	-	मञा
ಭ	-	स्	-	ಭಁಳಭಿ	-	sarsi	-	सँड़सी
ಹ	-	ह्	-	ಹಾಳಗ॥	-	harka	-	हड़का
೧	-	ख़्	-	೧ಾಱಱ	-	xann	-	ख़न्न
ಳ	-	ड़्	-	ಲಾಳ॥	-	bara	-	बड़ा
ಳ	-	ढ़्	-	ಘಾಳಎ	-	garhe	-	गढ़े

8. Compound consonants :-

ಪಪ	-	प्प्	-	ಗಾಪಪ॥	-	kappa	-	कप्पा
ಪಭ	-	प्फ्	-	೩ೞಪಭ॥	-	doppha	-	दोप्फा
ಲಲ	-	ब्ब्	-	ಧಾಲಲ॥	-	jabba	-	जब्बा
ಲಭ	-	ब्भ्	-	ಶಎಲಭ॥	-	lebbha	-	लेब्भा
೩೩	-	म्म्	-	೧೩೩	-	amm	-	अम्म
೧೧	-	त्त्	-	ಬಾ೧೧॥	-	patta	-	पत्ता
೧೨	-	त्थ्	-	ಀ೧೨॥	-	ottha	-	ओत्था
೩೩	-	द्द्	-	೧೩೩	-	addi	-	अद्दी
೩೫	-	द्ध्	-	ಶಾ೩೫ಳ	-	laddhar	-	लद्धड़
ನನ	-	न्	-	೩ಾನನ	-	mann	-	मन्न
ಠಠ	-	ट्ट्	-	೧ಠಠ॥	-	atta	-	अट्टा
ಠಢ	-	ट्ठ्	-	ಶಾಠಢ॥	-	lattha	-	लट्ठा
ಧಧ	-	ड्ड्	-	೧ಧಧ॥	-	adda	-	अड्डा
ಧಢ	-	ड्ढ्	-	ಶಀಧಢಀ	-	loddho	-	लोड्ढो
ಣಣ	-	ण्ण्	-	೩ಾಣಣಧಿ	-	manndi	-	मण्णडी
ಚಧ	-	च्च्	-	ಬಾಧಧ॥	-	pachcha	-	पच्चा
ಧಢ	-	च्छ्	-	೩೪ಧಢ॥	-	mechchha	-	मेच्छा
ಧಧ	-	ज्ज्	-	ಀಧಧ॥	-	ojja	-	ओज्जा
ಧಢ	-	ज्झ्	-	ಲಾಧಢಣ॥	-	bajjhra	-	बज्झरा

ക്ക	-	क्क्	-	മാക്കാ	-	makka	-	मक्का
ക്ഖ	-	क्ख्	-	തോക്കാ	-	tokkha	-	तोक्खा
ഗ്ഗ	-	ग्ग्	-	അഗ്ഗി	-	aggi	-	अग्गी
ഗ്ഘ	-	ग्घ्	-	ലഗ്ഘരാ	-	lagghra	-	लग्घरा
യ്യ	-	य्य्	-	കിയ്യാ	-	kiyya	-	किय्या
ര്ര	-	र्र्	-	ചര്രാ	-	charra	-	चर्रा
ല്ല	-	ल्ल्	-	നല്ലാ	-	nolla	-	नोल्ला
വ്വ	-	व्व्	-	ഹവ്വാ	-	hawwa	-	हव्वा
സ്സ	-	स्स्	-	ലസ്സാ	-	lassa	-	लस्सा

9. Diphthongs :-

അഇ	-	अइ	-	ബൈക്ലാ	-	baikla	-	बइक'ला
അഉ	-	अउ	-	ദൗരാ	-	daura	-	डउड़ा
അയ	-	अय	-	കയർ	-	kair	-	कैर(कय्र)
അവ	-	अव	-	നൗർ	-	nawr	-	नौर(नव्र)
ഇഉ	-	इउ	-	ഇണ്ടാ	-	iunda	-	इउन्दा
ഇയ	-	इय	-	കിയ്യാ	-	kiyya	-	किय्या
ഇവ	-	इव	-	ഇവ്ന്ദാ	-	iwnda	-	इवन्दा
എഇ	-	एइ	-		-		-	
എഉ	-	एउ	-		-		-	
എയ	-	एय	-		-		-	
എവ	-	एव	-	എവ്ന്ദാ	-	ewnda	-	एवन्दा
ഉഇ	-	उइ	-	കുയ്ലാ	-	kuila	-	कुइला
ഉയ	-	उय	-	ഉയ്ന	-	uyna	-	उयना
ഉവ	-	उव	-		-		-	
ഒഇ	-	ओइ	-	കൊയ്രി	-	koiri	-	कोइरी
ഒഉ	-	ओउ	-		-		-	
ഒയ	-	ओय	-	ഒയ	-	oy	-	ओय
ഒവ	-	ओव	-		-		-	
ആഇ	-	आइ	-		-		-	
ആഉ	-	आउ	-		-		-	
ആയ	-	आय	-		-		-	
ആവ	-	आव	-		-		-	

CHAPTER - VIII

Presentation of short & long vowel in word

		Short vowel	-	Long vowel		
i	-	tiryo (तिरयो)	-	i:	-	ti:na̲ (ती:ना)
ĩ	-	chĩcho (चिंचो)	-	ĩ:	-	chĩ:cho (चीं:चो)
e	-	mesga̲ (मेसगा)	-	e:	-	te:la̲ (ते:ला)
ẽ	-	sẽs (सेंस)	-	ẽ:	-	pẽ:ṛe (पें:ड़े)
u	-	kubi (कुबी)	-	u:	-	ku:bi (कू:बी)
ũ	-	kũṛa̲ (कुँड़ा)	-	ũ:	-	kũ:ṛ (कूँ:ड़)
o	-	mosga̲ (मोसगा)	-	o:	-	mo:ṛa̲ (मो:ड़ा)
õ	-	kõhṛa̲ (कोंहड़ा)	-	õ:	-	kõ:ṛa̲ (कों:ड़ा)
a	-	asma̲ (असमा)	-	a:	-	a:w (अ:व)
ã	-	ãṭa̲ (अँटा)	-	ã:	-	ã:t (अँ:त)
a̲	-	a̲l (आल)	-	a̲:	-	a̲:lo (आ:लो)
ã̲	-	ã̲ch (आँच)	-	ã̲:	-	ã̲:ṛko (आँ:ड़को)

CHAPTER - IX

Glottal stop, short & long vowel in word

Glottal stop - Short vowel - Long vowel

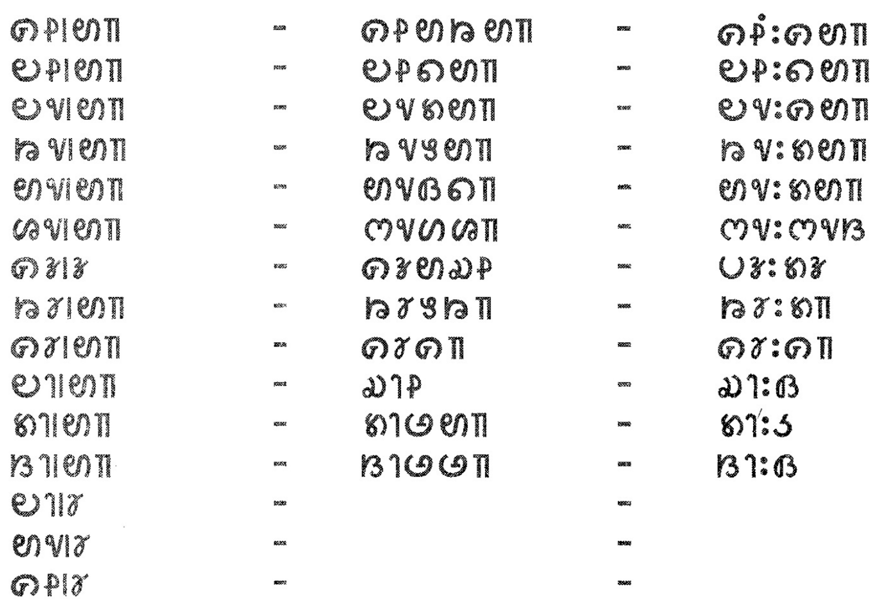

CHAPTER - X

Similar looking words

(bitna̲)	-	(bi:tna̲)
(chipna̲)	-	(chi:pna̲)
(biṛi)	-	(bi:ṛi)
(biṛi)	-	(bĩ:ṛi)
(pesna̲)	-	(pe:sna̲)
(kẽsa̲)	-	(kẽ:sa̲)
(kubi)	-	(ku:bi)
(kuṭi)	-	(ku:ṭi)
(bolo)	-	(bo:lo)
(chocha̲)	-	(cho:cha̲)
(kaws)	-	(ka:w)
(a̲l)	-	(a̲:las)
(a̲li)	-	(a̲:lid)
(a̲lo)	-	(a̲:lod)
(ka̲lo)	-	(ka̲:lo)
(mejhra̲)	-	(me:jhra̲)

CHAPTER - XI

हिन्दी शब्दों का तोलोङ सिकि में लिप्यन्तरण

(देवनागरी लिपि) - (तोलोङ सिकि)

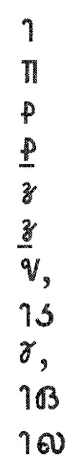

अ	-
आ, ा	-
इ, ि	-
ई, ी	-
उ, ु	-
ऊ, ू	-
ए, े	-
ऐ, ै	-
ओ, ो	-
औ, ौ	-
अं	-

अः	-	ๅ
अँ	-	ๆ
आँ	-	ๆ
इँ	-	ๆ
ईं	-	ๆ
उँ	-	ๆ
ऊँ	-	ๆ
एँ	-	ๆ
ऐं	-	ๆ
ओं	-	ๆ
औं	-	ๆ
ऑ	-	ๆ
ऽ	-	๊ (अ्)
अ्	-	๊ (अ्)
क्	-	๊
ख्	-	๊
ग्	-	๊
घ्	-	๊
ङ्	-	๊
च्	-	๊
छ्	-	๊
ज्	-	๊
झ्	-	๊
ञ्	-	๊
ट्	-	๊
ठ्	-	๊
ड्	-	๊
ढ्	-	๊
ण्	-	๊
त्	-	๊
थ्	-	๊
द्	-	๊

ध्	-	ಧ	
न्	-	ನ	
प्	-	ಪ	
फ्	-	ಫ	
ब्	-	ಬ	
भ्	-	ಭ	
म्	-	ಮ	
य्	-	ಯ	
र्	-	ರ	
ल्	-	ಲ	
व्	-	ವ	
श्	-	ಶ	हिन्दी–संस्कृत
स्	-	ಸ	
ष्	-	ಷ	हिन्दी–संस्कृत
ह्	-	ಹ	
क्ष् (क् + ष्)	-	ಕ್ಷ	
त्र् (त् + र्)	-	ತ್ರ	
ज्ञ् (ज् + ञ्)	-	ಜ್ಞ	
श्र (श्+र्)	-	ಶ್ರ	
ड़्	-	ಡ಼	
ढ़्	-	ಢ಼	
क़्	-	ಕ಼	उर्दू
ग़्	-	ಗ಼	
ज़्	-	ಜ಼	
फ़्	-	ಫ಼	
ब़्	-	ಬ಼	
व़्	-	ವ಼	
ख़्	-	ಖ಼	
फ़्	-	ಫ಼	अंग्रेजी–लैटिन
व़्	-	ವ಼	
श़्	-	ಶ಼	

चुड्डा पेंच्छो
(Appendix / परिशिष्ट)

ॐ★ॐ

Appendix - A_1

वर्णमाला, अंक एवं आवश्यक निर्देश

वर्णमाला

सरह तोड़ = स्वर वर्ण

𑒫	𑒬	𑒭	𑒮	𑒯	𑒰
i इ	e ए	u उ	o ओ	a अ	a̱ आ

: (सेला) = लम्बी ध्वनि ˙ (मितला) = नासिक्य स्वर ध्वनि

i (हेचका)= अर्द्धस्वर अ, ’ (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक

हरह तोड़ = व्यंजन वर्ण

𑒪	𑒫	𑒬	𑒭	𑒮
p प	ph फ	b ब	bh भ	m म
𑒟	𑒠	𑒡	𑒢	𑒣
t त	th थ	d द	dh ध	n न
𑒞	𑒝	𑒤	𑒥	𑒦
ṭ ट	ṭh ठ	ḍ ड	ḍh ढ	ṇ ण
𑒟	𑒠	𑒡	𑒢	𑒣
c च	ch छ	j ज	jh झ	n̈ ञ
𑒑	𑒒	𑒓	𑒔	𑒕
k क	kh ख	g ग	gh घ	ṅ ङ
𑒩	𑒬	𑒧	𑒨	𑒩
y य	r र	l ल	w व	n̤ ज़
𑒪	𑒫	𑒬	𑒭	𑒮
s स	h ह	x ख़	ṛ ड़	ṛh ढ़

From : Origin and Development of Tolong Siki - Dr. N. Oraon "Sainda"

Appendix - A2

स्वर एवं व्यंजन ध्वनियाँ

स्वर (Vowel)							
ORAL				NASAL			
Short		Long		Short		Long	
𑒫 —	इ	𑒫𑓁 —	इः	𑒫𑓀 —	इँ	𑒫𑓀𑓁 —	इँः
𑒬 —	ए	𑒬𑓁 —	एः	𑒬𑓀 —	एँ	𑒬𑓀𑓁 —	एँः
𑒭 —	उ	𑒭𑓁 —	उः	𑒭𑓀 —	उँ	𑒭𑓀𑓁 —	उँः
𑒮 —	ओ	𑒮𑓁 —	ओः	𑒮𑓀 —	ओँ	𑒮𑓀𑓁 —	ओँः
𑒯 —	अ	𑒯𑓁 —	अः	𑒯𑓀 —	अँ	𑒯𑓀𑓁 —	अँः
𑒰 —	आ	𑒰𑓁 —	आः	𑒰𑓀 —	आँ	𑒰𑓀𑓁 —	आँः

संयुक्त स्वर :- (DIPTHONGS)	𑒯𑒫 —	अइ,	𑒯𑒭 —	अउ,
	𑒯𑒬 —	अय,	𑒯𑒱 —	अव,
	𑒫𑒭 —	इउ,	𑒭𑒫 —	उइ,

व्यंजन (CONSONANTS)							
Non Voiced		Voiced		Voiced		Non Voiced	
Oral N.ASP.	Oral ASP.	Oral N.ASP.	Oral ASP	Nasal N.ASP.	Oral N.ASP	Oral N.ASP	Oral ASP
𑒋	𑒌	𑒍	𑒎	𑒏	𑒐	-	-
𑒑	𑒒	𑒓	𑒔	𑒕	𑒖	𑒗	-
𑒘	𑒙	𑒚	𑒛	𑒜	𑒝	𑒞	-
𑒟	𑒠	𑒡	𑒢	𑒣	𑒤	-	-
𑒥	𑒦	𑒧	𑒨	𑒩	-	-	-
-	-	𑒪	𑒫	𑒬	-	𑒭	-

पण्डी (बरतनी)

𑒋𑒫	𑒋𑒬 𑒋𑒭	𑒋𑒮 𑒋𑒯	𑒋𑒰
𑒌𑒫	𑒌𑒬 𑒌𑒭	𑒌𑒮 𑒌𑒯	𑒌𑒰

105

From - Origin and Development of Tolong Siki - Dr. N. Oraon "Sainda"

Appendix - A3

तोलोङ सिकि अंक

PRINT FORM	SEGMENT FORM	DIGIT VALUE
ᱚ		0
ᱛ		1
ᱜ		2
ᱝ		3
ᱞ		4
ᱟ		5
ᱠ		6
ᱡ		7
ᱢ		8
ᱣ		9

109

From - Origin and Development of Tolong Siki - Dr. N. Oraon "Sainda"

APPENDIX - B1

CHAPTER I.

THE ALPHABET.

A.—Letters.

§ 1. The *Kurukh* language not being a written one, the system of writing and spelling Kurukh words in this volume is the same as that authoritatively adopted for all Asiatic languages at the late Oriental Congress at Geneva, with such slight alterations as are required for their correct pronunciation. In printing the Gospels and other books the Dēvanāgarī characters have been employed, since these are more extensively known to those *Kurukhs* who have received an elementary education.

B.—Vowels.

§ 2. The *Kurukh* alphabet has five vowels, each of which is pronounced either short or long, viz., a ā, e ē, i ī, o ō, u ū. The sound of each may be understood from the following:—

Examples.				Corresponding Dēvanāgarī character.	
The short *a* as in		*America*	...	अ	
„ long *ā*	„	*father*	...	आ final	ा
„ short *e*	„	*better*	...	ए	ॅ
„ long *ē*	„	*rate*	...	ए	े
„ short *i*	„	*bit*	...	इ	ि
„ long *ī*	„	*tree*	...	ई	ी
„ short *o*	„	*box*	...	ओ	ॉ
„ long *ō*	„	*both*	...	ओ	ो
„ short *u*	„	*full*	...	उ	ु
„ long *ū*	„	*brute*	...	ऊ	ू

From : KURUKH GRAMMER : Rev. Ferd Hahn

Great care must be taken in pronouncing these different vowels distinctly, as an entirely different meaning will be conveyed, if long and short vowels are not properly distinguished, *e.g.*—

Kẖaṛnā, to steal; *kẖāṛnā*, to despise.
Pesnā, to pick up; *pēsnā*, to order.
Kittnā, to rot; *kītnā*, to fire.
Ojnā, to sew; *ōjnā*, to spin.
Urnā, to be satiated; *ūrnā*, to blow.
Mund, before; *mūnd*, three.

C.—Diphthongs.

§ 3. There are only two diphthongs in *Kurukẖ*, viz., *ai* and *au*; *e.g.*, *kẖai*, wife; *launā*, to beat. There are, however, compound vowels in *Kurukẖ*, which must not be confounded with diphthongs, though they are exactly pronounced as if they were diphthongs; *e.g.*, *aulā*, on that day, being a contraction of *ā*, that and *ullā*, day; *aiyā*, there, from *a* that and *iyā*, here. The diphthongs and compound vowels *ai* and *au* are pronounced in the following way: *ai*, like the *i* in night; *au* like the *ou* in house. *a* and *i* written with the trema (¨) *aï* are to be pronounced separately, also *aü*.*

D.—Consonants.

§ 4. There are 22 consonants in the *Kurukẖ* alphabet, besides those which are the aspirated forms of some of them. The student who is familiar with Hindī will find no difficulty in sounding them correctly, except that the guttural *kẖ* requires some special attention. We give them in the alphabetical order, viz:—

b, pronounced exactly like the English *b*:	*bi*, egg.
bh, as in the English clubhouse:	*bhīr*, necessity.
c, like the *ch* in chief:	*calkur*, sand.
ch, as in coachhouse:	*chāchnā*, to pound.
d, (dental) as in Hindī words:	*dighā*, long.
dh, aspirated form of the preceding:	*Dharmēs*, God.

* The corresponding Hindī letters for *ai* and *au* are ऐ a औ ै When *o* and *e* stand together *o'e*, the sound produced is like the Greek *οἵ* in *οἶκος*, *e.g.*, *nin kāo'e ?* Will you (thou) go?

From : KURUKH GRAMMER : Rev. Ferd Hahn

ḍ, (palatal): *daḍkā*, manger.
ḍh, the aspirated form of the former: *ḍhā̃k*, big drum.
f, as in fowl: *fekrārnā*, to howl.
g, as in gift, always hard: *gali*, time.
gh, aspirated form: *pāghā*, rope.
h, as in house: *hebrnā*, to throw away.
j, like the *j* in John: *jok*, little.
jh, the aspirated form of *j*: *jhauñsnā*, to rebuke.
k, as in king: *kukk*, head.
kh, the aspirated form of *k*: *khaṭṭā*, foreigner.
kh̲, this is a guttural sound, occurring most frequently in *Kurukh* words. It is to be pronounced like the German ch in *ich*, or the Greek χ in ἰχθύς, or as in the Scotch *loch*: *kh̲edd*, foot; *kh̲ēkh̲ēl*, earth.

l and *m* are like the corresponding English consonants: *lakṛā*, tiger; *maṁkh̲ā*, buffalo.

n is also the same as in English: *nēlā*, to-morrow.

The nasal *n* in *Kurukh* takes four different forms—

(1) The guttural nasal sound, resembling the *n* in the French *bon*; this sound occurs in *Kurukh* generally in connection with a long vowel; it is represented by the sign ~ placed over the vowel which is to be nasalized; example: *kh̲ẽ̄sō*, blood; *jȭkh̲*, servant.

(2) The second is that nasal *n* which in *Hindī* is connected with the guttural consonants. It is written thus ṅ; its pronunciation is like the ng in the English word sing, whenever it stands at the end of a syllable or is followed by the aspirate h; however, if followed by a vowel, the soft g at the end of it is pronounced as hard as the g in the English word go; for this reason it is written throughout this book ng. Examples: thus in the words *eṅg-hai*, my; *niṅg-hai*, thy; *taṅghai*, his; *baṅg*, father; it is to be pronounced: *eṅg-hai*, not *eṅg-g-hai*; *baṅg*, not *baṅg g*; etc., but in *eṅgā*, to me; *niṅgā* to thee; *taṅgā*, to him; *eṅgan*, me; *niṅgan*, thee; *taṅgan*, him; etc., the g must be pronounced hard.

(3) The third nasal n appears in connection with palatals, and is written *ñ*; *e.g.*, *beñjnā*, to marry; *kh̲añjnā*, to bear fruit; *cuñjnā*, to pound; etc.

From : KURUKH GRAMMER : Rev. Ferd Hahn

(4) The fourth nasal n is a cerebral, and is written *ṇ; e.g., aṇḍrā*, male; *oṇṭā*, one; *peṇḍṛē*, pipe.

r, is pronounced as in English: *rasnā*, to permit.

ṛ, this cerebral is pronounced something like the *rr* in the Northumbrian burr: *eṛpā*, house; *ēṛet*, bow.

ṛh, the aspirated form of *ṛ: tiṛhnā*, to walk one after the other.

p, is sounded like the English *p: pellō*, girl.

s, is also pronounced as in English words: *seṇḍrā*, sport.

t, like the English *t: tessnā*, to tie.

th, the aspirated form of the preceding: *ēthrnā*, to appear.

ṭ, this letter with its aspirate can be pronounced only as the corresponding letter in Hindī by striking the tip of the tongue on the palate just above the front gums, as *uṭnā*, to tie up; *khoṭṭnā*, to smash.

ṭh, guṭhi form of plural, *toṭhnā*, earthen lamp.

y, this semivowel is pronounced like the *y* in yoke: *ayō*, mother, *iyā*, here, but at the end of a syllable its sound is after a short *o* like *i* and after a long *o* like *ē*, *e.g. khoynā*, (*khoinā*) to reap; *khōynā*, (*khōēnā*) to measure. It is also sometimes changed into *j*.

In printing Kurukh with Dēvanāgarī characters, the following have been made use of to represent the above consonants.—

Gutturals,	k,	क;	kh,	ख;	g,	ग;	gh,	घ;	ṅg,	ङ;	kh, ख़.
Palatals,	c,	च;	ch,	छ;	j,	ज;	jh,	झ;	ñ,	ञ.	
Cerebrals,	ṭ,	ट;	ṭh,	ठ;	ḍ,	ड;	ḍh,	ढ;	ṇ,	ण;	ṛ, ड़; ṛh, ढ़.
Dentals,	t,	त;	th,	थ;	d,	द;	dh,	ध;	n,	न.	
Labials,	p,	प;	ph,	फ;	b,	ब;	bh,	भ;	m,	म.	
Semivowels,	y,	य;	r,	र;	l,	ल;	v,	व.			
Sibilant,	s,	स.	Aspirate,	h,	ह.						

Nasal *n* connected with a long vowel has to be written in Dēvanāgarī with the sanunāsika or candra-bindu, *e.g., khẽsō*, खेँसो; *pẽkh*, जोँख़. The guttural nasal *ṅ* in *baṅg*, father, is written बङ; in *niṅghai*, etc. निङ्है in *eṅgā*, etc. एङ्गा; in *kaṅk*, wood कङ्क; *beñjnā* is written बेञ्जना; *eṇ'ā*, one is written ओण्टा.

From : KURUKH GRAMMER : Rev. Ferd Hahn

APPENDIX - C

EXPLANATION OF THE DIACRITICAL SIGNS ADOPTED IN THIS DICTIONARY & THE PRONUNCIATION OF THE LETTERS

VOWELS

Every Uraon vowel is either short or long. Long ones are marked with a dash above them. Care must be taken to give each vowel its proper value, as otherwise the meaning of the word may be altered, f.i. pēsnā, *to command*, and pesnā, *to pick up*. It is to be noted also that short " o " has never an open sound as in " not " or " pot ". It has, in fact, the same sound as long " ō ", but shorter.

ā	is pronounced as	a	in	father,	e.g.	khāṛ,	*river*
a	,,	,, a	in	bat	,,	khall,	*field*
ē	,,	,, a	in	mate	,,	ērnā,	*to see*
e	,,	,, e	in	bet	,,	eṛnā,	*to call*
ī	,,	,, i	in	caprice	,,	ālī,	*a woman*
i	,,	,, i	in	bit	,,	antile,	*then*
ō	,,	,, o	in	both	,,	ōgnā,	*to swim*
o	,,	,, o	in	over	,,	ojjnā,	*to stitch*
ū	,,	,, u	in	brute	,,	pūrna,	*to become delirious*
u	,,	,, u	in	bull	,,	uina,	*to keep*

A wavy line above a vowel or a diphthong means the nasalization of the said vowel or diphthong, f.i. cīcna (cīñcna), *to wipe*; eōda (eonda), *how much*; ca'ũ (ca'un), *offensive smell.*

CONSONANTS

" c " has uniformly the sound of ch in " cheat ", or the letter च in Hindi.

" ch " is the Hindi letter छ.

" kh " is a deep guttural, like the Greek " chi ", or like the " ch " in the Scotch " loch ". It has no Hindi equivalent.

The cerebrals ṭ, ṭh, ḍ, ḍh, ṛ, ṛh, correspond respectively to the Hindi letters ट ठ ड ढ ड़ ढ़।

An apostrophe inserted in a word means a short interruption in the uttering of the word or the intercalation of a short vowel.

From :- An English Uraon Dictionary - Rev. C. Bleces

APPENDIX - DI

VOWELS

(*1*) *Long or short.*

ā ē ī ō ū have the same sound as the italicized letter in the English words f*a*ther, m*a*te, p*i*que, n*o*te, fl*u*te.

a e i u are sounded as in p*a*t, p*e*t, p*i*t, p*u*t.

o is sounded flat as in m*o*st, only much shorter.

(*2*) *Nasal.*

Vowels, long or short, are frequently uttered with a distinct twang. The symbol of nasalisation is an upper waving line ~.

ã̄ ȭ have the sound which, in the Hindi words 'kahāṉ' 'ponchhnā', is figured by the compound symbols 'āṉ, oṉ.'

ẽ̄ ī̃ ū̃ are sounded like ē ī ū, only through the nose.

ã ẽ ī̃ õ ũ have in the main the same sound as the corresponding long nasalized vowels. On account however of their shortened quantity, a fleeting *n*-sound is heard after the main sound. Thus eõdā, pron. eõndā.

(*3*) *Adventitious and auxiliary.*

Vowels which in no way belong to the radical of a word and yet are commonly sounded by the vocal organs in their effort to negotiate a cluster of consonants, are printed in a smaller type and placed higher up than the other letters of the word in which they occur. See Grammar n. 17.

An apostrophe cutting a word in two denotes, in pronunciation, a spasmodic and extremely brief, none the less *total*, check of the voice.—Whenever such a break occurs between a consonant and a following vowel, it is optional, in the act of checking the voice, to utter a sort of faint anticipation of the forthcoming vowel, Thus bar'ō she will come, may be pronounced either as it stands, or as bar°'ō. Thus again, ra'anā (the usual spelling of an infinitive which means *to be*) might be pronounced and written r'anā.

From : An Oraon English Dictionary - A. Grinard

APPENDIX - D2

(*4*) *Diphthongs* present little or no difficulty. The true pronunciation of '*au*' however should be noted. 'Launā' (to beat), for instance, is distinctly uttered as lăŏnā.

CONSONANTS

(*1*). Words whose initial letter is one of the compound signs *bh ch dh* etc. have not been inserted *within* the set of words beginning by the corresponding non-aspirate, *b c d* etc. They are placed immediately after, in a set of their own.

(*2*) *c* is sounded like *ch* in the English word *cheap*, and *j* as in *joy*.

Consequently the Oraon symbol *ch* corresponds, for utterance, to the symbol *chh* in the Hindi word achchhā.

(*3*) All dentals and cerebrals are sounded as in Hindi. With regard to the varieties of the letter *n*, let it be noted that :

ṅ has the sound of *ng* in '*sing*ing.'
ń „ „ „ „ *gn* in '*sig*nor, se*n*ior.'
ṇ „ „ „ „ *n* in 'de*f*endant, ta*l*ent.'

(*4*) In order to give the letter *kh* its proper utterance, nothing more is required than that the speaker, *after dilating* the bottom of the throat all round, should mean to sound an ordinary *h*-letter, as heard in English pronunciation.

The proper sounding of ṛ supposes some practice. Preparatory to utterance, the tongue should be doubled up against the palate. It should next be relaxed spring-like fashion, and, as it sweeps back forcibly to natural position, the speaker should mean to utter an ordinary English *l* or *r*.

(*5*) *w* is sounded as in the English word *walk*. When however preceded by a nasalized vowel, it is vocalized into an *o* which appropriates the nasal twang. Thus 'bhãwar,' window, is generally pronounced bhaõar ; 'Orãw' (an Oraon) is sounded Oraõ ; 'khewcnā,' to embrace, may by written and pronounced kheõcnā.

From : An Oraon English Dictionary - A. Grinard

APPENDIX - E1

6. KŨṛUX AND THE DEVANAGARI SCRIPT

Kũṛux was put to writing some time during the later half of the 18th century when Christian missionaries started learning the language with the view to preach the Gospel among the Kũṛux people. They prepared pamphlets with Kũṛux examples written in the Roman script along with grammatical notes. These pamphlets were meant for private circulation among the fellow missionary workers. During the same period Kũṛux language and folklore were written in the Roman script and included in books and journals published in the European languages.

Devanagari script was introduced for writing Kũṛux some time in the beginning of the 19th century by the Christian missionaries who wrote prayer books and religious instructions in the language. At present Christian literature continues to be written in the Devanagari script.

While describing the Kũṛux sounds in chapters 2 and 3, their correspondence with Hindi sounds as represented by the Devanagari script was pointed out wherever possible. However, correspondence was not given for quite a few Kũṛux sounds since there was no corresponding Devanagari letter. This is true of Kũṛux

APPENDIX - E2

phonemes also. For instance, while the Devanagari letters ए and ओ can represent the Kũṛux phonemes /e:/ and /o:/ respectively, there are no Devanagari letters to represent the Kũṛux short vowels /e/ and /o/. This problem can be resolved by using diacritical marks to indicate shortness. Accordingly, /e/ and /o/ vowels can be written as ऍ and ऑ respectively. Among consonant phonemes, /ʔ/ alone has no corresponding Devanagari symbol. This can, however, be represented by the symbol '२'.

Below is the list of Kũṛux phonemes together with the corresponding Devanagari letters and their modifications.

VOWELS

Primary Symbols		Primary Symbols	
i	इ	i:	इं
e	ऍ	ẽ	ऍं
u	उ	ũ	उं
o	ऑ	õ	ऑं
a	अ	ã	अं
i:	ई	ĩ:	ईं
e:	ए	ẽ:	एं
u:	ऊ	ũ:	ऊं
o:	ओ	õ:	ओं
a:	आ	ã:	आं

From :- KŨṚUX PHONETIC READER - Dr. Francis Ekka

APPENDIX - E3

150/KŨṚUX AND THE DEVANAGARI SCRIPT

CONSONANTS

Primary Symbols		Primary Symbols	
p	प्	ss	स्स्
t	त्	m	म्
ṭ	ट्	n	न्
c	च्	ñ	ञ
k	क्	ṅ	ङ्
?	ʔ	ph	फ्
b	ब्	th	थ्
d	द्	ṭh	ठ्
ḍ	ड्	ch	छ्
j	ज्	kh	ख्
g	ग्	bh	भ्
pp	प्प्	dh	ध्
tt	त्त्	ḍh	ढ्
ṭṭ	ट्ट्	jh	झ्
cc	च्च्	gh	घ्
kk	क्क्	pph	पफ्
bb	ब्ब्	tth	त्थ्
dd	द्द्	ṭṭh	ट्ठ्
ḍḍ	ड्ड्	cch	च्छ्
jj	ज्ज्	kkh	क्ख्
gg	ग्ग्	bbh	ब्भ्
s	स्	ddh	द्ध्
h	ह्	ḍḍh	ड्ढ्
x	ख़्	jjh	ज्झ्

From :- KŨṚUX PHONETIC READER - Dr. Francis Ekka

APPENDIX - E4

KŨṛUX PHONETIC READER/151

CONSONANTS

Primary Symbols		Primary Symbols	
ggh	ग्घ्	l	ल्
mm	म्म्	ll	ल्ल्
nn	न्न्	r	र्
ñ̃ñ̃	ञ्ञ्	rr	र्र्
ṅṅ	ङ्ङ्	ṛ	ड्

Finally, representation of the KŨṛux consonant clusters in the Devanagari script needs to be mentioned. Alike Hindi system of pronunciation, any consonant letter which closes a syllable is pronounced as a pure consonant, that is, without the vowel a. When a sequence of two or more consonants closes a syllable, then all such consonants shall form, wherever possible, a combined letter or sanyuktakshar and shall be pronounced as pure consonant letters. For example, /barckan/ 'I came' shall be written as बरचकन /xandradan/ 'I sleep' as ख़न्दरकन , and /ambrkan/ 'I am left' as अम्बरकन , etc. When a consonant cluster begins a syllable, then such consonants shall similarly form a combined letter. For example, /calxt?a:dan/ 'I am causing one to open' shall be written as चलख्त्?आदन , /khatrt?-a:dan/ 'I am making one fall by oneself' as खतरत्त्?आदन , and /lathrt?a:dan/ 'I am making one

APPENDIX - F

READY REFERENCE CARD

A. VOWELS

1. (i) as in *bit* (bit)
2. (i:) as in *beat* (bi:t)
3. (e) as in *get* (get)
4. (æ) as in *hat* (hæt)
5. (ʌ) as in *but* (bʌt)
6. (a:) as in *far* (fa:)
7. (ɔ) as in *pot* (pɔt)
8. (ɔ:) as in *port* (pɔ:t)
9. (u) as in *pull* (pul)
10. (u:) as in *pool* (pu:l)
11. (ə)as in *above* (ə'bʌv)
12. (ə:) as in *bird* (bə:d)

B. DIPHTHONGS

1. (ei) as in *day* (dei)
2. (ou) as in *own* (oun)
3. (ai) as in *time* (taim)
4. (au) as in *how* (hau)
5. (ɔi) as in *boy* (bɔi)
6. (iə) as in *hear* (hiə)
7. (eə) as in *fair* (feə)
8. (ɔə) as in *pour* (pɔə)
9. (uə) as in *poor* (puə)

C. CONSONANTS

1. (f) as in *fine* (fain)
2. (v) as in *very* ('veri)
3. (θ) as in *thin* (θin)
4. (ð) as in *then* (ðen)
5. (s) as in *see* (si:)
6. (z) as in *zoo* (zu:)
7. (ʃ) as in *she* (ʃi:)
8. (ʒ) as in *measure* ('meʒə)
9. (p) as in *pull* (pul)
10. (b) as in *bat* (bæt)
11. (t) as in *ten* (ten)
12. (d) as in *dog* (dɔg)
13. (k) as in *keep* (ki:p)
14. (g) as in *gone* (gɔn)
15. (tʃ) as in *chin* (tʃin)
16. (dʒ) as in *jam* (dʒæm)
17. (m) as in *met* (met)
18. (n) as in *net* (net)
19. (ŋ) as in *sing* (siŋ)
20. (h) as in *head* (hed)
21. (r) as in *red* (red)
22. (l) as in *live* (liv)
23. (w) as in *wit* (wit)
24. (j) as in *yes* (jes)

NOTE — (i) "c" has two sounds : like "s" in city ('siti)
"k" in cat (kæt)

(ii) "s" has two sounds : like "s" in see (si:)
"z" in is (iz)

(iii) "g" has two sounds : like "g" in get (get)
"j" in gin (dʒin)

(iv) "x" has the sound of "ks" at times
"gs" at other times

(v) "q" is written kw as queen (kwi:n)

Please remember that
(1) what is in round brackets represents the phonetic form / /;
(2) the symbol ð represents the *delta crossed* in phonetics.

From- IMPROVE YOUR PRONUNCIATION- Victor W. Tucker

Appendix - G

Key to phonetic symbols

Vowels and diphthongs

1	iː	*as in*	**see** /siː/	11	ɜː	*as in*	**fur** /fɜː(r)/
2	ɪ	*as in*	**sit** /sɪt/	12	ə	*as in*	**ago** /ə'gəʊ/
3	e	*as in*	**ten** /ten/	13	eɪ	*as in*	**page** /peɪdʒ/
4	æ	*as in*	**hat** /hæt/	14	əʊ	*as in*	**home** /həʊm/
5	ɑː	*as in*	**arm** /ɑːm/	15	aɪ	*as in*	**five** /faɪv/
6	ɒ	*as in*	**got** /gɒt/	16	aʊ	*as in*	**now** /naʊ/
7	ɔː	*as in*	**saw** /sɔː/	17	ɔɪ	*as in*	**join** /dʒɔɪn/
8	ʊ	*as in*	**put** /pʊt/	18	ɪə	*as in*	**near** /nɪə(r)/
9	uː	*as in*	**too** /tuː/	19	eə	*as in*	**hair** /heə(r)/
10	ʌ	*as in*	**cup** /kʌp/	20	ʊə	*as in*	**pure** /pjʊə(r)/

Consonants

1	p	*as in*	**pen** /pen/	13	s	*as in*	**so** /səʊ/
2	b	*as in*	**bad** /bæd/	14	z	*as in*	**zoo** /zuː/
3	t	*as in*	**tea** /tiː/	15	ʃ	*as in*	**she** /ʃiː/
4	d	*as in*	**did** /dɪd/	16	ʒ	*as in*	**vision** /'vɪʒn/
5	k	*as in*	**cat** /kæt/	17	h	*as in*	**how** /haʊ/
6	g	*as in*	**got** /gɒt/	18	m	*as in*	**man** /mæn/
7	tʃ	*as in*	**chin** /tʃɪn/	19	n	*as in*	**no** /nəʊ/
8	dʒ	*as in*	**June** /dʒuːn/	20	ŋ	*as in*	**sing** /sɪŋ/
9	f	*as in*	**fall** /fɔːl/	21	l	*as in*	**leg** /leg/
10	v	*as in*	**voice** /vɔɪs/	22	r	*as in*	**red** /red/
11	θ	*as in*	**thin** /θɪn/	23	j	*as in*	**yes** /jes/
12	ð	*as in*	**then** /ðen/	24	w	*as in*	**wet** /wet/

/'/ *represents* primary stress *as in* **about** /ə'baʊt/
/ˌ/ *represents* secondary stress *as in* **academic** /ˌækə'demɪk/

(r) An 'r' in parentheses is heard in British pronunciation when it is immediately followed by a suffix or a word beginning with a vowel. Otherwise it is omitted. In American pronunciation no 'r' of the phonetic spelling or of the ordinary spelling is omitted.

/-/ Hyphens preceding and/or following parts of a repeated transcription indicate that only the repeated part changes.

⇨ the Introduction for a full explanation of the phonetic information.

From - Oxford Advanced Learner's Dictionary of Current English : A S Hornby

Appendix - H_1

उच्चारण शैली

Consonants

IPA* symbol	Usage	Hindi symbol	Usage
P	cap /kæp/	प्	/ कैप् /
b	rub /rʌb/	ब्	/ रब् /
t	fit /fɪt/	ट्	/ फ़िट् /
d	red /red/	ड्	/ रेड् /
k	flak /flæk/	क्	/ फ़्लैक् /
g	rig /rɪg/	ग्	/ रिग् /
tʃ	rich /rɪtʃ/	च्	/ रिच् /
dʒ	pledge /pledʒ/	ज्	/ प्लेज् /
f	life /laɪf/	फ़्	/ लाइफ़् /
v	wave /weɪv/	व्	/ वेव् /
θ	filth /fɪlθ/	थ्	/ फ़िल्थ् /
ð	bathe /beɪð/	द्	/ बेद् /
s	fuss /fʌs/	स्	/ फ़स् /
z	filings / 'faɪlɪŋz/	ज़्	/ 'फ़ाइलिङ्ज़् /
ʃ	fish /fɪʃ/	श्	/ फ़िश् /
ʒ	fuselage / 'fju:zəlɑ:ʒ/	श्	/ 'फ़्यूज़लाश् /
h	hunk /hʌŋk/	ह	/ हङ्क् /
m	fame /feɪm/	म्	/ फ़ेम् /
n	fin /fɪn/	न्	/ फ़िन् /
ŋ	ring /rɪŋ/	ङ्	/ रिङ् /
l	file /faɪl /	ल्	/ फ़ाइल् /
r	run /rʌn/	र	/ रन् /
(r)	for /fɔ:(r)/	र्	/ फ़ॉर् /
j	granular / 'grænjələ(r)/	य	/ 'ग्रैन्यलर् /
w	won /wʌn/	व	/ वन् /

From - Oxford English-Hindi Dictionary अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश

Appendix - H_2

Vowels and diphthongs

i	happy /hæpi/	इ / ि	/ हैपि /
ɪ	fig /fɪg/	इ / ि	/ फ़िग् /
i:	see /si:/	ई / ी	/ सी /
e	ten /ten/	ए / े	/ टेन् /
æ	cat /kæt/	ऐ / ै	/ कैट् /
ɑ:	far /fɑ:(r)/	आ / ा	/ फ़ार् /
ɒ	lot /lɒt/	ऑ / ॉ	/ लॉट् /
ɔ:	saw /sɔ:/	ऑ / ॉ	/ सॉ /
ʊ	put /pʊt/	उ / ु	/ पुट् /
u	actual / 'æktʃuəl/	उ / ु	/ 'ऐक्चुअल् /
u:	too /tu:/	ऊ / ू	/ टू /
ʌ	cut /kʌt/	अ	/ कट् /
ɜ:	bird /bɜ:d/	अ+र् / अ+ॅ	/ बर्ड् /
ə	about; paper /ə'baʊt; 'peɪpə(r)/	अ	/अ'बाउट्; 'पेपर्/
eɪ	fade /feɪd/	ए / े	/ फ़ेड् /
əʊ	go /gəʊ/	ओ/ ो	/ गो /
aɪ	five /faɪv/	आ+इ / ा+इ	/ फ़ाइव् /
ɔɪ	boy /bɔɪ /	ऑ+इ / ॉ+इ	/ बॉइ /
aʊ	now /naʊ/	आ+उ / ा+उ	/ नाउ /
ɪə	near /nɪə(r)/	इ+अ / ि+अ	/ निअर् /
eə	flair /fleə(r)/	ए+अ / े+अ	/ फ़्लेअर् /
ʊə	pure /pjʊə(r)/	उ+अ / ु+अ	/ प्युअर /

इस शब्दकोश में दी गई उच्चारण शैली *Oxford Advanced Learner's Dictionary* में दी गई शैली के यथासंभव समान है। यथार्थ उच्चारण के लिए *Oxford Advanced Learner's Dictionary* देखिए।

*International Phonetic Alphabet

From - Oxford English-Hindi Dictionary अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश

Appendix - I_1

AZÍYAT अज़ीयत (ع - مث) اذیت
1. यातना (Yátaná یاتنا) पीड़ा (Pírá پیڑا) अज़ाब (Azáb عذاب)
2. क्लेश (Klesh کلیش) कष्ट (Kasht کشٹ) तक्लीफ (Taklif تکلیف)

IRÁDAT इरादत (ع - مث) ارادت
1. श्रद्धा (Shrid,dhá شردھا) आस्था (Ás,thá آس تھا) एतिक़ाद (Etiqád اعتقاد)
2. विश्वास (Vish,shwás وش شواس) प्रतीति (Pratíti پرتیتی) यक़ीन (Yaqín یقین)

IRÁDA इरादा (ع - مذ) ارادہ
1. संकल्प (Sankalp سنکلپ) निश्चय (Nish,chai نش چے) अहद (Ahd عہد)
2. विचार (Vichár وچار) ख़याल (Khayál خیال)

ARÁZÍ अराज़ी (ع - مث) اراضی
ارض کی جمع ہے
1. भूमि (Bhumi بھومی) ज़मीन (Zamín زمین)
2. खेत (Khet کھیت) काश्त (Kásht کاشت)

ARÁKÍN अराकीन (ع - مذ) اراکین
رکن کی جمع الجمع ہے دیکھو 'رکن'

ARBÁB अरबाब (ع - مذ) ارباب
رب کی جمع

IDKHÁL इदख़ाल (ع - مذ) ادخال
प्रवेश (Pravesh پرویش) दाख़िला (Dákhila داخلہ)

IDRÁK इद्राक (ع - مذ) ادراک
1. बोध (Bodh بودھ) ज्ञान (Gyán گیان) तमीज़ (Tamíz تمیز)
2. बुद्धि (Bud, dhi بدھی) अक़्ल (Aql عقل)

ADAQ अदक़ (ع - ص) ادق
दुर्बोध (Dur bodh در بودھ) दुर्ज्ञेय (Dur,ge,ya دروگیہ) कठिन (Kathin کٹھن)

AD,NÁ अद्ना (ع - ص) ادنی
तुच्छ (Tuch,chh تچھ) अधम (Adham ادھم) पामर (Pámar پامر) नीच (Nich نیچ)

ADÍB अदीब (ع - مذ) ادیب
साहित्यकार (Sáhittya kár ساہتیہ کار) साहित्य सेवी (Sáhittya sevi ساہتیہ سیوی) कलाकार (Kala kár کلا کار) फ़नकार (Fan kár فن کار)

IZ,N इज़्न (ع - مذ) اذن
1. आज्ञा (Ág, gyá آگ گیا) इजाज़त (Ijázat اجازت)
2. निर्देश (Nir,desh نردیش) हुक्म (Hukm حکم)

UZN उज़्न (ع - مذ) اذن
कर्ण (Karn کرن) कान (Kán کان)

साभार : हिन्दी-उर्दू डिक्सनरी - अंजुमन तरक्की उर्दू (हिन्द) प्रकाशन

Appendix - I_2

IJÁBAT इजाबत (ع - مث) اجابت

1. स्वीकृति (Swikriti سوئي كرتي) मंज़ूरी (Manzúri منظوري)
2. शौच (Shauch شوچ) पाख़ाना (Pákhána پاخانه)

IJÁRÁ इजारा (ع - مذ) اجاره

1. अधिकार (Adhikár ادهيكار) हक़ (Haq حق)
2. एकाधिकार (Ekádhikár ايكا دهيكار) ठेका (Theka ٹھیکه)

IJAZÁT इजाज़त (ع - مث) اجازت

1. अनुमति (Anumati انومتي) रज़ामन्दी (Razámandi رضامندي)
2. आज्ञा (Aggya آگيا) हुक्म (Hukm حكم)
3. स्वीकृति (Swikriti سوئي كرتي) मन्ज़ूरी (Manzúri منظوري)

IJÁZAT-NÁMA इजाज़त नामा اجازت نامه (عف - مذ)

अनुमति पत्र (Aaumati pattr انومتي پتر) आज्ञा पत्र (Ággya pattr آگيا پتر)

IJTIMÁA इज्तिमाअ اجتماع (ع - مذ)

1. सम्मेलन (Sammelan سم ميلن) गोष्ठी (Goshthí گوشٹھي)
2. जमाव (Jamáo جماؤ) भीड़ (Bhír بهير)
3. अधिवेशन (Adhiveshan ادهي ويشن) इजलास (Ijlás اجلاس)

IT,TIHÁM इत्तिहाम اتهام (ع - مذ)

दोष (Dosh دوش) अपराध (Aprádh اپرادھ) लांछन (Lánchhan لانچهن) तुहमत (Tuhmat تهمت)

ASÁSA असासा اثاثه (ع - مذ)

1. संपत्ति (Sampatti سمپتي) धन दौलत (Dhan-daulat دهن دولت)
2. सामग्री (Sámaggri سامگري) सामान (Sámán سامان)

ISBÁT इस्बात اثبات (ع - مذ)

प्रमाणित करना (Pramánit karna پرمانت كرنا) साबित करना (Sábit Karna ثابت كرنا)

ASAR असर اثر (ع - مذ)

1. प्रभाव (Prabháo پربهاؤ)
2. चिह्न (Chinh چنه) निशान (Nishán نشان)
3. गुण (Gun گن) ख़ासियत (Khásiyat خاصيت)

ASAR-ANDÁZ असर अन्दाज़ اثر انداز (عف - ص)

प्रभावकारी (Prabháo kári پربها و كاري) असर डालने वाला (Asar dálne vála اثر ڈالنے والا)

ASAR-PIZÍR असर पिज़ीर اثر پزير (عف - ص)

प्रभावित होने वाला (Prabhávit-hone-vála پربهاوت هونے والا)

ASNA अस्ना اثنا (ع - ص)

मध्य (Maddhya مدهيه) बीच (Bich بيچ)

साभार : हिन्दी-उर्दू डिक्सनरी - अंजुमन तरक्की उर्दू (हिन्द) प्रकाशन

Appendix - I_3

(Khush hál خوش حال) खुशहाल

3. शोभन (Shobhan شوبھن) बारौनक (Bá raunaq باروںق)

آباواجداد (ع - مذ)

ÁBÁ-O-AJDÁD आबाओ अजदाद पूर्वज (Púrvaj پورواج) बापदादे (Báp dádo باپ دادے)

ÁBAÍ आबाई (ف - مث) آبائی पैत्रिक (Paittrik پیترک) पुश्तैनी (Pushtaini پشتینی)

آب پاشی (ف - مث)

ÁB-PÁSHI आब पाशी सिंचन (Sinchan سنچن) सिंचाई (Sinchái سنچائی)

ÁB-E-HAYAT आबे हयात آبِ حیات अमृत (Amrit امرت) सुधा (Sudha سدھا)

ÁB-RÚ आबरू (ف - مث) آبرو

1. प्रतिष्ठा (Pratishtha پرتشٹھا) सम्मान (Sam-mán سم مان) सत्कार (Sat-kár ست کار) इज़्ज़त (Izzat عزت)

2. सतीत्व (Satitv ستیتو) इस्मत (Ismat عصمت)

AB आब (ف - مذ) آب

1. वारि (Vári واری) सलिल (Salil سلل) जल (Jal جل) पानी (Páni پانی)

2. रस (Ras رس) निचोड़ (Nichor نچوڑ)

3. आसव (Ásav آسو) अरक (Araq عرق)

4. आभा (Ábhá آبھا) चमक Chamak چمک)

5. तीक्ष्णता (Tikchhnatá تیکچھنتا) बाढ़ (Bárh باڑھ) तेज़ी (Tezi تیزی)

6. शोभा (Shobha شوبھا) रौनक (Raunuq رونق)

ÁBA आबा (ع - مذ) آبا

اب کی جمع

पूर्वज (Púrvaj پورواج) बापदादा (Báp dáda باپ دادا)

ÁBÁD आबाद (ف - ص) آباد

1. बसित (Vasit وست) आबाद bád آباد)

2. सम्पन्न (Sampann سم پن)

साभार : हिन्दी-उर्दू डिक्सनरी - अंजुमन तरक्की उर्दू (हिन्द) प्रकाशन

Appendix - I_3

(Khush hál خوش حال) खुशहाल

2. शोभन (Shobhan شوبھن) बारौनक (Bá raunaq باروںق)

آباواجداد (ع ـ مذ)

ÁBÁ-O-AJDÁD आबाओ अजदाद पूर्वज (Púrvaj پورواج) बापदादे (Báp dáde باپ دادے)

ÁBAÍ आबाई (ف ـ مث) آبائی पैत्रिक (Paittrik پیتری) पुश्तैनी (Pushtaini پشتینی)

آب پاشی (ف ـ مث)

ÁB-PÁSHI आब पाशी सिंचन (Sinchan سنچن) सिंचाई (Sinchái سنچائی)

ÁB-E-HAYAT आबे हयात آبِ حیات अमृत (Amrit امرت) सुधा (Sudha سدھا)

ÁB-RÚ आबरू (ف ـ مث) آبرو

1. प्रतिष्ठा (Pratishtha پرتشٹھا) सम्मान (Sam-mán سم مان) सत्कार (Sat-kár ست کار) इज़्ज़त (Izzat عزت)

2. सतीत्व (Satitv ستیتو) इस्मत (Ismat عصمت)

AB आब (ف ـ مذ) آب

1. वारि (Vári واری) सलिल (Salil سلل) जल (Jal جل) पानी (Páni پانی)

2. रस (Ras رس) निचोड़ (Nichor نچوڑ)

3. आसव (Ásav آسو) अरक (Araq عرق)

4. आभा (Ábhá آبھا) चमक Chamak چمک)

5. तीक्ष्णता (Tikshhnatá تیکشھنتا) बाढ़ (Bárh باڑھ) तेज़ी (Tezi تیزی)

6. शोभा (Shobha شوبھا) रौनक (Raunuq رونق)

ÁBA आबा (ع ـ مذ) آبا

اب کی جمع

पूर्वज (Púrvaj پورواج) बापदादा (Báp dádo باپ دادا)

ÁBÁD आबाद (ف ـ ص) آباد

1. बसित (Vasit وست) आबाद bád آباد)

2. सम्पन्न (Sampann سم پن)

साभार : हिन्दी-उर्दू डिक्सनरी - अंजुमन तरक्की उर्दू (हिन्द) प्रकाशन

Appendix - J_1

The alphabetical order followed is that of the English alphabet with certain modifications due to the use of letters with diacritical marks. The pronunciation will be stated in its proper place under each letter.

The diacritical marks are the following:

With vowels, above the letter: (˜) shows nasalization.

— — , below the letter: (_) shows that the vowel has an open sound. Is found under *ę* and *ǫ*.

— — — — : (.) shows that the vowel is resultant. Is found under *ą* and *ǫ*.

With consonants, above the letter: (´) found above the nasal *ṅ* to show that it is palatal.

— — — — : (˙) used above the nasal *ṅ* to show that it is guttural.

— — — — : (’), an apostrophe above or at the right hand top shows that the consonant is checked. Used with *c’*, *k’*, *p’* and *t’*.

— — below the letter: (.) shows that the consonant is a cerebral sound. Found with *ḍ*, *ḍh*, *ṇ*, *ṛ*, *ṭ* and *ṭh*.

Note: In the etymological references *ǫ* is used in Bengali, Bihari and Desi words, ordinarly written *a*, partly because the Santali word has the same sound, partly as a help to the users of this work in appreciating the pronunciation.

The order is as follows: First the unaccented English letter; then the same letter with a diacritical mark. If the same letter has different diacritical marks, then first the letter with a mark above, thereafter the same with a mark below. An aspirated consonant is treated as a separate sound and will be found after all words with the same unaspirated sound. Vowels with nasalization are not given a separate place in the order of the alphabet.

The order followed is consequently this: *a, ą, b, bh, c, (c’), ch, d, dh, ḍ, ḍh, e, ę, g, gh, h, i, j, jh, k, (k’), kh, l, m, n, nh, ṅ, (ṅ), (ṇ), o, ǫ, ǫ, p, (p’), ph, r, (r), s, t, (t’), th, ṭ, ṭh, u, (v, w), y.*

The letters in parenthesis are not initial in the language; letters omitted do not occur in the language.

Abbreviations:

When the common gram. abbreviations are used, it is to be understood that the word to which one or more of these are added, may function as a

Appendix - J_2

noun (n.), an adjective (adj.), a verb (v.), etc.; m. may stand for Medium (or Passive), or for masculine; f. for feminine; v. a. d. means a verb constructed with indirect object in the Active; v. m. d., the same in the Medium; anim. means animate, inanim. inanimate; Perform. stands for Performative, Intent. for Intentional.

In the etymological references the following abbreviations are those most commonly occurring:

A. stands for Arabic (prefixed to B. or H. to show origin of words).
B. „ „ Bengali.
Bih. „ „ Bihari.
H. „ „ Hindi (without prefixed letter signifying a word generally of Sanskrit origin).
P. „ „ Persian (prefixed to B. or H. to show origin of words).
Skr. „ „ Sanskrit.

Desi means that the word referred to is used by other races living in the same country with the Santals. Such words may be of Aryan origin, but do not belong to the literary language.

Khar. stands for Kharwari and signifies that the word dealt with — in the same or nearly the same form — is common to several Munḍa languages and taken to be indigenous.

The names of other, especially Eastern, languages will as a rule be found unabbreviated or only slightly abbreviated and easily recognizable.

C. stands for Campbell's Santali Dictionary. Added to a para it signifies that the word dealt with, or frequently only the form quoted, is not heard among the Santals with whom the writer has come into contact. In many cases such words are in a form written by persons who have had little proper training. In other cases they are words used only by persons who have been accustomed to speak or write especially Hindi.

Mat. I stands for the writer's Materials for a Santali Grammar, part I, printed at the Santal Mission Press, Benagaria 1922; and Mat. II for the second part of the same work, printed at the same place, 1929.

From - SANTALI DICTIONARY : P.O. Bodding

Appendix - K

mucigeko jo̱me kana. Ado̱ uni babṛẽ̱ do̱ onko gidi ńe̱lte miť ghaṛiye ṭhak utạrena, are hahaṛayena; me̱nkeťae onko gidi samaṅre, Bhala noko gidi do̱ ạḍiko lelhagea, noko bes besko jo̱mlekope do̱, nui muci do̱ oka sebelpe jo̱me kana. Ado̱ ona kathage uni miťṭen haṛam gidi do̱e aṅjo̱m tioḱkeťa, ado̱e metae kana, Henda, babṛẽ̱, am do̱ no̱ṇḍe̱ he̱ćlenme, ado̱ń lạiama, ona hahaṛa reaṅ bhe̱dem ńam kan khan.

Ado̱ uni babṛẽ̱ uni haṛam gidi ṭhene se̱n sorena; ado̱e metae kana, Ma se̱ bhalaṅ aṅjo̱m tama, ceť lekan katha kana. Ado̱ uni haṛam gidi aćaṅ kanso il miťṭe̱ne toťkeťa, ar uniye emadea, are metadea, Ma se̱ noa am do̱ amaḱ mẽ̱ť ṭhen co̱sma leka oṭkaome ar noko go̱ć ho̱ṛge ńe̱lkom, bhala ceť lekako ńe̱lo̱ḱa.

Ado̱ uni babṛẽ̱ ona kanso ilteye ńe̱lkeťkoa, onko bes bes go̱ć ho̱ṛ do̱ manwa do̱ko baṅ kana, onko do̱ janwar kanako, metaḱme emantenko, setako, pusiko. Ado̱ ńe̱lkateye kulikedea, Cele, ado̱m ńe̱lkeťkoa se̱? Ado̱e me̱neťa, Hẽ̱ń ńe̱lkeťkoa. Ado̱ uni gidiye metadea, Acha, ado̱ do se̱ amaḱ oṛaḱte calaḱme, ado̱ onka kate amren era bhala ńe̱letam, cele kanae. Ado̱ uni babṛẽ̱ do̱ o̱ṇḍe̱ khone ruạṛena aćaḱ oṛaḱte; ado̱ o̱ṇḍe̱ thoṛa danaṅ khone ńe̱lkedea, uni aćren oṛaḱ ho̱ṛ uni hõ̱ manwa do̱e baṅ kana, uni do̱e seta eṅga kana.

Ado̱ mo̱ne̱ mo̱ne̱reye me̱nwana, Nui seta ṭhen do̱ tahẽ̱kate ceť po̱rho̱ baṅ ńam? Iń do̱ bidesrege bhageń se̱nlena. Ado̱ arhõ̱e ruạṛena bidestege.

Khange ona gidi reaṅ kanso il do̱ so̱ṅge̱regeye do̱ho̱keťa; ado̱ calaḱ calaḱte miť ṭhen aema utạr ho̱ṛ muci oṛaḱreko jarwa akana; ado̱ onko ńe̱lte uni babṛẽ̱ hõ̱ o̱ṇḍe̱ye se̱n sorena; ado̱ ona gidi reaṅ kanso ilteye ńe̱lkeťkoa, ado̱ onko sanamgeko janwar kana, unkin mucitikin haṛam buḍhi do̱ seta ar pusi kanakin; me̱nkhan unkinren miťṭaṅ ho̱po̱nerae tahẽ̱kantạkina, uni doe manwa jạt kangea.

[3] The language has a special name (kanso il) for the three or four big feathers of a bird's wing.

From : SANTHAL FOLK TALES - P. O. BODDING

kept for more than a year: *bale ariko* cap̃ilekore mačom huringe senoa, dāli puṛgo uruṇoa, when one rinses *bale ariko*, a little blood goes out but much pure lae is got.

II. adj., with *ērēko*, same meaning: *ari ērēkore* soben mačom rōrojaṇa-akana, in crude lac the insects are dried up together with the lac they have made.

III. trs., to put the crude lac to dry: cimin ērēkope *aritaḱkoa*?

ari-o p. v., of crude lac to be put to dry.

arian I. adj., too little salted: bulunḍo bulunakana, *ariangea*. Also used as adj. noun: *ariando* kale sukua, ale puṛa bulunle lagaõĕa.

II. trs., to salt too little, to put too little salt. This has two different constructions: if *bulun* stands as d. o. then the word denoting the food takes the afx. *re*, uture bulunpe *ariankeda*. If the name of the food stands as d. o. then *bulun* falls away, utupe *ariankeda*.

arian-o p. v., to be salted too little: utu *arianjana*; uture bulun *arian-jana*.

ariange adv., with *bulun*, to salt insufficiently: Bilait horoko uture bulun huṛingeko lagaõĕa, ena ale nagente *ariange* bulunakana.

ari-ari intrs. imprsl., to feel despondent, discouraged on account of repeated failures, in the presence of apparently unsurmountable difficulties: ne kamia *riarijgiña*, I am quite dejected about this work and tired of it.

ariari-o p. v., (1) to become downcast, discouraged: ne hon bujaõbujaõten *ariarijana*, I have lost all hope of ever bringing this child to reason. (2) impersonally, it makes one dejected: *ariarioa*.

ariaritan adv., (1) with *rika*, to deject, to discourage: ne ularua *ariaritan* rikajaiña, this fever with (constant) vomiting discourages me. (2) with *rikao*, to get discouraged.

arid (Sk. *arit*, to look, to see) I. intrs., (1) to open one's eyes: beṭekane ruaakana, raliremo kae *ariđĕa*. (2) to open one's eyes wide: *ariđĕme* ranuin lagaõĕa. (3) to look at, to stare at: aloma! gomke *aridtana*, don't, the master is looking.

II. trs., to open someone's eye and keep it open by lifting his eyelid: *aridime*, ranuin lagaõĕa.

arid-en rflx. v., to look at part of one's own body: gaõe *aridentana*, he is looking at his wound.

a-p-arid repr. v., (1) to throw a rapid glance at each other. (2) to wink at each other: okilko *aparid-jana*, ente okoẽ ṭaka taikena inig digrijana, the pleaders winked at each other and then a decree was given in favour of the client who had money. (2) with *maraṇ*, to stare at each other with great surprise: daparomloge maraṇgekin *aparid-jana*.

N. B. This is also used sbstly.: *mid aparidrekin* saparijana is the same as, misa *aparidtekin* saparijana, by a single glance at each

From: ENCYCLOPEDIA MUNDARICA-John Hoffmann, S.J.

Appendix - L_2

ıer they knew each other.

d-ǫ p. v., denotes the possibility opening one's eyes: meḍmûâṛâ akane taĭkena kā *aridǫleka*, his e was swollen to such an extent .t it was impossible for him to 'n his eyes.

ı-ariḍ vrb.n., (1) the manner of king, the look: amạ *anarid* kagea enamenteko nirtana, thy k is bad, i.e., forebodes no good · them, that is why they run ay. (2) *miḍ anariḍ*, (*a*) just one ment: kula leldoiṇ lellịa mendo *ḍ anariḍregee* danaṇjana, I ı see the tiger, but in one instant lisappeared (behind the bushes). a good steady look or a hard k: *moḍ anariḍtegee* aridakạia.

ıriḍ-mariḍ, ariḍ-tariḍ, tariḍ-mariḍ ı. of *aṇgaruṇgur*.

ari-hon, hon-ari sbst., a small nd-saw.

ar.ka (Greek *ergon*, Eng. *Work*, ıtch *werk*, Germ. *wirken*,? T. *ıkattam*, let it be) var. of *irika*, *ıa*, *iri*, *acika*, *icika*, *cika*, *ici*, *ateka*, *ıa*, *atika*, causative or permissive ɛ. to prds. These variants are all ɔd everywhere but *irika* and *iri* are ɔre commonly used. As independ- t prds. only *rika* and *cika*, to do, act, are used.

ıril (Or. *ālī*; H. *olā*) I. sbst., (1) the enomenon of hail: niminuṇ *arilre* ekatem baneaŏjana ? How didst ou remain safe in such a hail ? (2) ɔ hailstones: *aril* simjarom impi- ṇ taĭkena. N. B. Hailstorm is ndered by *hoĕoaril*.

. intrs., to hail; it takes the prsl. prnl. afx. *e* as sbj. like all natural phenomena: misamisa mopoṭogee *aril-ĕa* urịmeromko tergoẹleka, sometimes there fall such big hailstones that they kill bullocks and goats; *ariljadae*.

III. trs., to hail on smb.: *arilkeḍleae*.

a-n-aril vrb. n. (1) the manner or the violence of the hail: *anarile* arilkeḍlea rabaṇtele keṭeserǫtan taĭkena, it hailed on us in such a way that we were quite stiff with cold (2) the phenomenon: musiṇ *anarilte* goṭa birreạ sakam cecạcabajana, in a single hailstorm all the leaves of the forest were torn to shreds.

aril-aṛạ, aril-bā, aril-jō, syn. of *kâṛaaṛạ*, *ṛimilaṛạ*, (Sad. *bhaduli sāg*) sbst., an Olax of which the species has not been identified. It is an unarmed shrub of the jungles, 6-7 ft. high with woody branches and twigs, and orange berries in axillary clusters of three together. This description shows that it must be Olax acuminata, Wall.; Olacineae, rather than Olax nana, Wall. which is an undershrub and has solitary flowers. The last one of the names, *rimilaṛạ*, is more generally given to Olax scandens, Roxb., an extensive, prickly climber. The young leaves of this, as well as those of the unarmed shrub, are used as a potherb.

aril-dạ sbst. (1) a storm in which there is hail and rain: *arildạe* gamalạ. (2) melted hailstones. The Mundas, or at least some of them, believe that the water got by melting hailstones has a special virtue and they use it as an eye medicine.

From : ENCYCLOPEDIA MUNDARICA-John Hoffmann, S.J.

Appendix - L_3

arililī ! var of *arelele* !

aril-rimbi I sbst., a hail cloud : *arilrimbile* uruṇakeda, a hail cloud has formed.

aril-ṭoke, adj., used of mangos which have a blighted spot where they were struck by hail, and which have ripened before the time : *aril-ṭoke* uliko uĩṇtana. *Arilṭoke*, ltly., hit by a hailstone, is used in Has. In Nag. they say *kukupada*, kicked by the koel (bird). Also used as adj. noun : *arilṭokele* jomtana.

arilṭoke-ǫ, p. v. of mangos : to ripen before the time, having been blighted by hail : ulipe jomtana, jaromakana ei ?—kāge, *arilṭokeakana*.

arisa (H.) syn. of *meṭaĭ* or *meṭaĭlaḍ* I. sbst., a kind of sweetmeat made by Hindus from rice-flour and molasses and sold by them in the markets.

II. trs., to make into sweetmeat : cīkaṇako *arisakeda* ?

arjaŏ (Sk. *arj*, to obtain ; H. *arjānā* ; Sad. *arjai*, field produce ; Or. *arja'ānā*, to earn) trs., to get a good harvest : niula khūbpe *arjaŏakada*.

arjaŏ-ǫ p. v., of the harvest, to be abundant, used especially in the pf. ts. : baba *arjaŏakana*.

arji (A. *arzi*) I. sbst., (1) an observation, a counter-remark, a point of law : eṭaeṭa *arji* paŏge seṇǫjana, all other counter-remarks were in vain. (2) a prayer, a petition, a supplication : aĩṅagą *arji* aĩumǫka.

II. intrs., to urge in reply : okile *arjilą* mendo kā gonoṇjana, the pleader replied but it was not taken into consideration.

III. trs., to ask for smth. more than that which is offered : bar ṭakaiṇ *arjikeda* mendo samage.

arji-ǫ p. v., (1) to be observed or remarked in reply. (2) to be asked in excess of what is offered.

arji-binti I. sbst., an instant request, an urgent prayer : aĩṅagą *arjibinti* aloka radioa !

II. trs , to make an instant request ; cemaǫkaiṇ mente *arjibintitane taĭkena*, he begged most urgently to be pardoned.

* **arjo** Kera. **arjom**, I. sbst. One kind of ear-pendant which the Mundas have adopted from the Hindus, requires, in the ear-lobe, a hole large enough to pass a finger or even a thumb through it. To obtain that result, they proceed as follows : when the lobe is pierced they insert into it a small bamboo needle so as to protrude a little on either side. A few days later they insert a second, then a third, a fourth, etc., after a couple of days' interval, until the distention caused by this increasing bundle of needles has acquired the desired size or very nearly so. Then it is replaced by a roll of very thinly split bamboo, which, by its natural tension, keeps the opening for some time at the desired size. This roll is painted a bright red, so as to be already a kind of ornament by itself. After some time it is removed and replaced by the Hindu pendant, called *taṛăki* by the Mundas. All these inserted

Appendix - M_1

displeasure syn. of *iṇi*, that chap : medre ranuin lagaŏlia usurkici *aṇidoe* eraṇkiña, I dropped medicine in his eye, as it pricked him, that chap (fellow) scolded me.

aṇi-nai syn. of *haṇi nai*, this one and that one, several people.

anre syn. of *hanre*, over there.

ante syn. of *hante*, to yonder place.

aṇt-saṇt, aṇte-saṇte Nag. in. jest or displeasure referring to talk, saying, syn. of *haṭikuṭi* of various things that do not agree.

aṇt ad saṇt, aṇte ad saṇte syn. of *aṇtsaṇt* but used only as adv.

aṇt na saṇt, aṇte na saṇte syns. of *aṇt ad saṇt*.

aṇtle saṇt, aṇtele saṇte syns. of *aṇt ad saṇt*.

aṇgal occurs in a sacrificial formula as var. and syn. of *aṛa* to leave smb. i.e. to stop harming smb. with sickness: ne dukutani aṛataime *aṇgaltaime*.

aṇ-maṛaṇo 1. syn. of *aṇsidaǫ́* : nidare senole monela mendo *aṇmaṛaṇjana*, aledo duṛumakangele taikena, we had decided to leave during the night, but it became full dawn, we were fast asleep. 2. fig., occurs in a sacrificial formula and the Asur legend, to exist before Sinboga and everything : alege *aṇmaṛaṇlena*, alege turcapaṇlena (see Asur legend).

aṇmaṛaṇ-turcapaṇ jingle syn. of *aṇmaṛaṇturmaṛaṇ*.

aṇomā, aṇo muṭid syns. of *dinaki* every day.

ą̄-ǭ plural or repetition of ǭ, the retching sound. I. sbst., en hoṛoą *ą̄ǭ* aĭumkedte aiṇo uladeo namkiña; en hondo *ą̄ǭ* namkia. II. adj., with *saṛi, kakāla* same meaning as the sbst. : *āō* saṛiṇ aĭumleda. III. intrs., to retch : hensąree *ą̄ǭjada* (tana).

ą̄ǭ-n rflx. v., same meaning as the intrs. : hantere okoe *ą̄ǭntana* ?

ą̄ǭ-gǫ́ p. v. (1) this sound to be produced: kundamsąre

Appendix - M_2

aŭria, it is not yet ready for use, consumption.

aŭrjaci ! ltly. is he not yet grown up ? interj. used in anger, meaning is he still a baby ? : kuri lelle idilja, kuridoe jondamjana mentee hĩnkja-Aędo *aŭrjaci* !, we took him to see the girl (step in marriage arrangement) but he found fault with her saying she is too old-And he ! is he still a little boy ?

aŭriamci ! **aŭrimaci** ! are you still a baby ?

aŭrilǫ, aŭrilǫge adv. meaning though it is (was) not ready; jonrado *aŭrilǫpe* orękeda, you tore the maize before it was ripe.

aŭrimaci ! var. of aŭriamci ! N.B. all the prsl. prns. may be used thus.

aŭrire adv. when it was (is) not ready : ne kantarado *aŭrirepe* godtada, you plucked this jackfruit when it was not ready.

aŭritąte, aŭritelǫ also with enclitic ge, adv. 1. syn. of *aŭrilǫ* 2. meaning too early; horędo *aŭritątem* hertada, jargi dinkorege bāoa ente bā ururuua ād kā jōoa, you sowed the horę pulse too early, it will flower during the rainy season and the flowers will wither and not form fruit.

ayah, aea a nurse. Constructed like dasi.

ayub var. of *aiub* evening.

âḍ-ûḍ (both nasals long) plurality of *ûdûd* the call of the *uḍulu* bird.

âe 2-children's talk, syn. of *keŋa* a buffalo.

âĕâ syn. of *âĕâbâĕâ* perplexity, helplessness, but no adv.

âṛaĕ-akar var. of *anḍaĕakar* distress, anxiety about one's means of subsistence.

âṛagar var. of anḍagar swelling of gland in the bent of the groin.

âṛia var. of *anḍia* adj. syn. of *sanḍi*, male.

âṛiki var. of *anḍiki* protruding buttocks.

âṛol-basol var. of *anḍolbasol* slovenliness.

âṛuku var. of *anḍuku* swelling of the male glands.

âûraŏ Nag. syn. of *labid.*, stale.

From : **ENCYCLOPEDIA MUNDARICA - P. Ponette, S. J.**

Appendix - N

stays in its shade too long it causes giddiness.

ambari-sundui: - a strong term of contempt used when reviling someone.

****ambari-tuta*** - a generic term for epilepsy.

ambarob (अम्बारोब) - an orphan; a widow with no one to support her

ambarūtu (अम्बारूतु) - a guava, Psidium guayava, L., Myrtaceae, B.63/6, H.63/4/1

ambau (अम्बाउ) - a large tree both planted and wild. Its fruit is eaten. Spondias mangifera, Willd., Anacardiaceae, B.51/6, H.51/8/1 - the Hog Plum tree.

amin (अमिन) - a surveyor (Hindi). The more common Ho pronunciation is *umin*.

amin (अमिन) - to watch expectantly for someone or something to come, e.g. *amgele amintan ṭaikena,* "it is you we were waiting for" (a shortened form of *nel-amin*)

amiń (अमिञ) - to clear land of trees, shrubs, grass, etc,. Verbal affix - clean.

****amiń-nam*** - to acquire by clearing, (e.g. to acquire a piece of cultivable land by clearing off all trees, etc.)

****amiń-sapa*** - same as *amiń*

amol (अमोल) - indigestion; to have indigestion.

amul-takul (अमुल–तकुल) - very quickly and excitedly; excited; disturbed; (also *hamur-takur*)

-an - (affixed to nouns) possessed of, equipped with, having; when the verbal affix - *-jom,* meaning "to one's advantage or benefit" is used in future tense verb forms, *-an* is used in past tense verb forms, e.g. ***kiriń-jomme*** - **"buy for yourself"**, ***kiriń-an-eń*** - **"I bought for myself**

aṅ (अञ) - I

aṅ (अङ) - dawn; to become dawn; verbal affix -to do the action indicated in the principal verb until dawn

****aṅ-maskal*** - pass. - to become bright dawn

****aṅ-nam*** - to last until dawn

****año: gapa*** - every day

****año: ipil*** - the morning star (a planet over the morning horizon)

****año: mutiḍ*** - every day (every dawn)

****aṅ-pãyã*** - of the dawn, to clear up

****aṅ-piyã-payã*** - the morning light when one can see clearly, after *mɪr-mɪr* and just before sunrise.

****aṅ pirae:-parae:*** - same as *aṅ-piyã-payã*

****aṅ piyar-poyor*** - same as *aṅ-piyã-payã*

****aṅ torsa*** - at the break of day.

anachu (अनाचु) - an assignment to do something (verbal noun of *achu*)

****anachu-pē:*** - authority

anader (अनादेर) - a bringing in (verbal noun of *ader*); the name of a ceremony held as given under *anader bonga.*

****anader bonga*** - the sacrifice held on the occasion of purifying the *desauli* (sacred grove) about two weeks previous to the *mage* and *bā* feasts. Usually a goat and chicken are offered.

****anader ḍiyaṅ*** - rice beer used at the *anader bonga*

****anader jilu*** - the meat of the animals offered at the *anader bonga.*

From : HO-ENGLISH DICTIONARY - J. DEENEY

Appendix - O_1

अतः क्लिक स्वर को हम एक विशुद्ध-स्वर ध्वनि ही मानें, व्यंजन ध्वनि नहीं। खड़िया भाषी इसे स्वर ध्वनि ही महसूस करते हैं और विसर्ग (:) के स्थान में किसी भिन्न स्वर संकेत की खोज देवनागरी लिपि के अन्तर्गत करते हैं क्योंकि प्रचलित उच्चारण के अनुसार विसर्ग में व्यंजन "ह" की क्षीण ध्वनि का आभास होता है। अतः खड़िया में निम्नलिखित स्वर वर्ण एवं व्यंजन वर्ण होंगे।

स्वर वर्ण

अ आ अऽ आऽ इ ई ईऽ इऽ उ ऊ उऽ ऊऽ ए एऽ ओ ओऽ
— ा ऽ ाऽ ि ी ीऽ िऽ ु ू ुऽ ूऽ े ेऽ ो ोऽ

(संयुक्त स्वर ऐ तथा औ एवं ऋ (ृ) अन्य भाषाओं के शब्दों के लिए, लिये जा सकते हैं।)

व्यंजन वर्ण

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ (ण)
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल (व) ह स ड़ ढ़

तथा **अर्धव्यंजन**

ञ़ ण़ म़ होंगे।

मुँह के अन्दर उच्चारण स्थान के सहारे व्यंजन ध्वनि का विश्लेषण

खड़िया लेखकों में अर्धस्वर (हेंड़ोऽ) को देवनागरी के संकेतों या अक्षरों द्वारा व्यक्त करने की दिशा में मतभेद होता रहा है, जैसा कि स्वर की व्याख्या में दिखाया गया है। वे इस क्लिक ध्वनि को व्यक्त करने के प्रयास में ही इस तरह उलझे हुए हैं कि अर्धव्यंजनों की ठीक अभिव्यक्ति पर तर्क-वितर्क के लिए अवसर उन्हें नहीं मिला है। अर्धव्यंजनों (इचरीऽञ़ मेने जाङसाऽम़) को ज, ड एवं ब की क्षीण ध्वनि मानकर ऐसा संतोष कर लिया गया है कि उसकी वास्तविकता की ओर पहुंचने की कोशिश को अनावश्यक मससूस किया जाता है।

३२

साभार : खड़िया ध्वनी शास्त्र — जूलियस बाऽ

Appendix -O_2

स्वरों एवं व्यंजनों का उच्चारण हम कैसा करते हैं? अ आ इ ई उ ऊ ए ओ, सामान्य स्वर वर्णों का उच्चारण करते समय हम मानो अपना मुंह खोल भर देते हैं और अन्दर से हवा बिना अवरोध के बाहर निकालते हैं। हमारे दांत, जीभ आदि की कोई विशेष क्रिया नहीं होती है। इसीलिए स्वर ध्वनि को "आडसाऽम्" कहा गया है। हमारे मुंह की स्थिति चित्र १ एवं २ की तरह होती है।

अ, आ, इ, ई, ए, उ, ऊ, ओ, विभिन्न स्वर निकालते समय अन्य भाषाओं के स्वरों के उच्चारण करने की तरह ही हमारे मुंह की स्थिति में थोड़ी-बहुत भिन्नता होती है पर विशेष परिवर्तन "क्लिक स्वर" के उच्चारण में होता है (चित्र ३ देखा जाय)। (व्याख्या पृ० १४, १५ एवं ३६ देखें।)

अ (ह्रस्व अ) का उच्चारण – (चित्र न० १ देखा जाय)। हम अपना मुंह ऐसा खोल कर ध्वनि और हवा मुंह के रास्ते से ढकेलते हैं कि हमारा निचला जबड़ा थोड़ा सा खुलकर एक विशेष कोण बनाते हुए ऊपर के जबड़े से सटे रहने की कोशिश करता है। जबड़ा ढीला न होकर निकलती हुई वायु तथा आवाज को दबाने की कोशिश करता है। आवाज को हम उतना ही लंबा तानते हैं जितनी लम्बाई को ह्रस्व माना गया है।

आ (दीर्घ आ) – (चित्र न० २ देखा जाय)। ह्रस्व अ के विपरीत हम अपने जबड़े को ढीला कर उसे पूरी तरह खुलने देते हैं अर्थात् जबड़े को नीचे की ओर गिरने देते हैं और आवाज की लम्बाई उतनी ही रखते हैं जिस को दीर्घ माना गया है। हम रेखाय (प्लुत) की परिधि में आवाज को जाने से रोकते हैं।

इन्हीं ह्रस्व अ एवं दीर्घ आ की लम्बाई के अनुसार ही क्रमशः इ (ह्रस्व इ), (ह्रस्व उ) तथा दीर्घ ई एवं दीर्घ ऊ की उच्चारण अवधि रखते हैं। ए तथा ओ भी इसी माप में लघु और दीर्घ हो सकते हैं।

व्यंजन (चित्र न० ४) – (१) क वर्ग के अक्षरों के लिए, क ख ग घ तक जीभ का A क्षेत्र कंठ (न० १) क्षेत्र से लग-लगकर हटता है और ध्वनि मुंह के रास्ते निकालता है। ङ के समय ध्वनि मुंह के रास्ते तथा नाक के रास्ते भी निकलता हैं।

(२) च वर्ग के च छ ज झ तक जीभ का B क्षेत्र तालू (न० २ क्षेत्र) से लग-लगकर हटता है और ध्वनि मुंह के रास्ते निकाल देता है। ञ के समय ध्वनि नाक के रास्ते भी निकलती है (चित्र न० ५)।

(३) त वर्ग के त थ द ध तक जीभ का C क्षेत्र दाँत एवं तालू के न० ४ क्षेत्र से लग-लगकर हटता है और ध्वनि मुंह के रास्ते निकल जाती है पर न के समय नाक के रास्ते भी ध्वनि निकलती है।

साभार : खड़िया ध्वनी शास्त्र – जूलियस बाऽ

Appendix - P

2. KHERIYA LIKHANA?
International Pattern
Aŋsa?m (Vowels)

Tomoŋso? (oral) *Romoŋso? (Nasal)*

a	i	u	e	o	ã	ĩ	ũ	ẽ	õ
A	**I**	**U**	**E**	**O**	**Ã**	**Ĩ**	**Ũ**	**Ẽ**	**Õ**
आ	ई	ऊ	ए	ओ	आँ	ईं	ऊँ	एँ	ओं

Laŋsa?m (Consonants)

1. Luchurso? (Bilabial)	p P प	ph Ph फ	b B ब	bh Bh भ	w W व				m M म
2. Goneso? (Dental)	t T त	th Th थ	d D द	dh Dh ध	s S स				n न
3. Toreso? (Alveolar)		l L ल	r R र						n N न
4. Mugom Kala?ŋka?ŋso? (Retroflex)	ṭ Ṭ ट	ṭh Ṭh ठ	ḍ Ḍ ड	ḍh Ḍh ढ	ṛ Ṛ ड़	ṛh Ṛh ढ़			ŋ ण् (अन्)
5. Mo?jhi Kala?ŋka?ŋso? (Palatal)		ch Ch च	chh Chh छ	j J ज	jh Jh झ	y Y य			ɲ ञ
6. Koŗom Kala?ŋka?ŋso? (Velar)		k K क	kh Kh ख	g G ग	gh Gh घ				ŋ ङ
7. Ṭho?ṭhorso? (Glottal)	h H ह								
8. Ṭho?ṭhor–ro?ŋ (Glottal stop)	?								

J. Baa? Daso
Patron
Kharia Sahitya Samiti

From : KHERIA OS?NLO? - Kharia Sahitya Samiti

Appendix - Q

(e) **Post** (prep.) **tres dies proficiscar,** *I shall start in three days.* **Paucis post** (adv.) **diëbus proficiscar,** I shall start in a few dsys.
Post with the Acc., or the Abl. alone followed by **post**, denotes 'how long after ?'

(f) **Eum ad cenam invitävit in posterum diem,** *he invited him to dinner for the next day.* — **In** with the Acc. denotes ' for what time ?'.

(g) **Ter in die, in anno,** *three times a day, a year.* — **In** with the Abl. accompanied by the numeral adverb denotes 'how often a day, a year ?'.

(h) **Ab hora quarta neminem vidi,** *I have seen nobody since four o'clock.*
Ab hora quinta ad vesperum, *from five o'clock till the evening.*
Ab (a) with the Abl. denotes 'since when ?', 'from what time ?'. **Ad** with the Acc. denotes 'till when ?'.

PRICE

R. 60. Viginti talentis oratiönem vendidit, *he sold a speech for twenty talents.* — The Abl. is used to denote the definite price at which a thing is valued, bought or sold (Abl. of price). Thus

aestimäre, *to value, estimate*
constäre, *to cost*
emere, *to buy*
vendere, *to sell*
venïre, *to be sold,* etc.

R. 61. Agrum magni aestimäbat, et magno vendidit, *he valued the field at a high figure, and sold it at a high price.* — The indefinite price is expressed by certain Gen. and abl. as shown below (Abl. and Gen. of indefinite price).

(i) The following Gen. with verbs of estimation:

magni, *high(ly)*
parvi, *little*
nihili, *nothing*
maximi, *very high(ly)*
minimi, *very little*

Verbs of estimation:

aestimäre, ducere, putäre, *to value, estimate,* etc.

From : LATIN GRAMMAR - J. VAN BOGAERT, S.J.

Appendix - R_1

यजुर्वेद

पूर्व विंशति

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥

ऋषि—परमेष्ठी प्रजापति । देवता—सविता, यज्ञः, विष्णुः, अग्निः, प्रजापतिः, अप्सवितारौ, इन्द्रः, वायुः, द्यौविद्युतौ । छन्द—बृहती, उष्णिक्, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पंक्ति, गायत्री) ।

॥ॐ॥ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽ ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बाह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।१। वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो धर्मोऽसि विश्वधाऽअसि परमेण धाम्ना दꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ।२।

हे शाखे ! (पलाश) यज्ञ का फल रूप जो वृष्टि है, उसके निमित्त मैं तुझे ग्रहण करता हूँ । हे शाखे ! रस और बल की प्राप्ति के लिए मैं तुझे गीधी और स्वच्छ करता हूँ । हे गो वत्सो ! तुम क्रीड़ास्थ हों अर्थात् माता से पृथक् होकर दूर देश में भी द्रुतवेग वाले होकर आओ । वायु देवता तुम्हारे रक्षक हैं । गौओं! सबको प्रेरणा देने वाले दिव्य गुण सम्पन्न ज्योतिमान् परमेश्वर तुम्हें श्रेष्ठ यज्ञ कर्मके निमित्त

साभार : यजुर्वेद-संस्कृति संस्थान, बरेली

Appendix - R_2

द्वितीयोऽध्याय

(ऋषिः—परमेष्ठी प्रजापतिः, वसिष्ठः, वामदेवः । देवता-यज्ञः अग्नि विष्णुः, इन्द्रः, द्यावापृथिवी, सविता, बृहस्पति, अग्नीषोमौ, इन्द्राग्नः मित्रावरुणौ, विश्वेदेवताः, अग्निवायुः अग्निसरस्वती, प्रजापतिः त्वष्ट्रा, ईश्वरः, आप । छन्द—पंक्तिः जगती, गायत्री, बृहती,अनुष्टुप्, उष्णिक्)

कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ।१। अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णो स्तुपोस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा ।२

हे इध्म ! तुम होमीय काष्ठ हो। तुम कठिन वृक्ष से उत्पन्न हुए हो अथवा आह्वानी अग्नि में वास करने वाले हो । इसलिए अग्नि में डालने के लिए मैं तुम्हें जल से धोकर शुद्ध करता हूँ । हे वेदी, तुम जल की नाभि हो । तुम्हें कुशा धारण करने के लिये भले प्रकार जल से धोता हूँ । हे दर्भ ! तुम कुलों का समूह होने से समर्थ हो । तुम्हें तीन स्रुकों के सहित टिकना है, इसलिए मैं तुम्हें जल से स्वच्छ करता हूँ ।१।

हे प्रोक्षण से शेष जल ! तुम इस वेदी रूप पृथिवी को सींचते हो । हे कुशाओ ! तुम यज्ञ की शिखा के समान हो । हे वेदी ! तुम ऊन के समान अत्यन्त मृदु हो । मैं तुम्हें देवताओं के सुखपूर्वक बैठने का स्थान बनाने के लिए कुशों से ढकता हूँ । यह हवि भुवन पति देव के लिए प्रदान की है । यह हवि भुवनपति देवता के लिए प्रदान की है । यह हवि भूतों के स्वामी के निमित्त है ।२।

साभार : यजुर्वेद-संस्कृति संस्थान, बरेली

Appendix - S_1

उदाहरण और संकेत है । पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' के वैदिक व्याकरण से सम्बन्धित अंशों से तथा 'सिद्धान्तकौमुदी' की वैदिक प्रक्रिया से इस सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञात हो सकता है । पहले वैदिक भाषा सामान्य जनता की बोलचाल की भाषा रही होगी, जिससे उस युग में ऋषियों ने वैदिक ऋचाओं का संकलन किया । हजारों वर्षों की अवधि में भाषागत परिवर्तन होते रहे । पाणिनि के समय में जो भाषा शिष्टजनों में व्यवहृत होती थी, उसको उन्होंने नियमों से बाँधकर एक परिष्कृत रूप दिया । उसके बाद संस्कृत भाषा का रूप अविच्छिन्न रूप से उसी प्रकार का बना रहा ।

वेदों की स्वर-प्रक्रिया

वेदों की भाषा को संगीतात्मक कहा जाता है । वेद-मन्त्रों का पाठ विशेष स्वरों द्वारा तथा विशेष अक्षरों पर बल देकर किया जाता है । किसी शब्द के किसी अक्षर को स्वर में पढ़ा जाता है, इससे उस शब्द के अर्थ का निर्णय होता है । यदि किसी शब्द के अक्षर के स्वर को बदल दिया जाये, तो उस शब्द का अर्थ परिवर्तित हो जावेगा । उदाहरण के लिये 'इन्द्रशत्रुः' शब्द है । इसमें दो पद हैं, इन्द्र और शत्रु । यदि आदि पद को उदात्त समझा जावे, तो इसका विग्रह बहुव्रीहि समास में 'इन्द्रः शत्रु यस्य सः' होगा । अर्थात् 'इन्द्र उसको मारने वाला' होगा । यदि अन्तिम पद को उदात्त माना जावे तो इसका विग्रह तत्पुरुष समास में 'इन्द्रस्य शत्रु' होगा । अर्थात् इन्द्र को मारने वाला होगा । इस प्रकार के स्वर के परिवर्तन से अर्थ विपरीत हो जाता है ।

वैदिक भाषा की स्वरगत यह विशेषता प्राचीन ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं में भी रही थी । जर्मन आदि भाषाओं में अब भी यह विशेषता मिलती है । ग्रीक शब्द (Litboblos) में यदि अन्तिम स्वर पर बल दिया जावे तो इसका अर्थ 'पत्थर फैंकने वाला' होगा तथा आदि के स्वर पर बल दिया जाने पर 'पत्थरों से आहत' अर्थ होगा । जर्मन भाषा के 'Urirg hen' शब्द के अन्तिम स्वर पर स्वराघात होने पर इसका अर्थ 'उपेक्षा करना' होगा, एवं पहले स्वर पर स्वराघात होने पर इसका अर्थ 'पार करना या ऊपर से जाना' होगा । अंग्रेजी भाषा के 'Conduct' शब्द को लें । यह संज्ञावाची और क्रियावाची दोनों में है । यदि 'Con' पर बल देंगे तो संज्ञावाची होगा एवं 'Duct' पर बल देने पर क्रियावाची शब्द होगा । स्वर की यह प्रक्रिया प्रायः सभी भाषाओं में कुछ न कुछ अवश्य मिलती है ।

वेदों के अर्थों को समझने के लिये स्वरों का ज्ञान जरूरी है । इसलिये 'तैत्तिरीय उपनिषद्' के दूसरे अनुवाक में लिखा है—"वर्णः स्वरः मात्रा बलम् इत्येतज्जिज्ञासितव्यम्", अर्थात् वेदों के अर्थों को समझने के लिये वर्ण, स्वर, मात्रा, बल इन सबको जानना चाहिये । पाणिनि ने अपनी 'पाणिनीय शिक्षा' में एवं 'अष्टाध्यायी' में स्वरों के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना की है तथा स्वरों से सम्बन्धित नियमों को बताया है ।

साभार : ऋक् सूक्त संग्रहः डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार

Appendix - S_2

भूमिका

स्वर तीन होते हैं—उदात्त, अनुदात्त और स्वरित । इनके उच्चारण के सम्बन्ध में पाणिनि ने बताया है—उच्चैरुदात्तः, नीचैरुदात्तः, समाहारः स्वरितः । अर्थात् जिस स्वर पर बल देकर ऊँचा उच्चारण किया जाता है, वह उदात्त होता है । इसके से उच्चारण किया जाने वाला स्वर अनुदात्त है और स्वर स्वरित है । वेदों में प्रत्येक स्वर उदात्त, अनुदात्त या स्वरित निश्चित होगा एवं यह उच्चारण उसके अर्थ का निश्चय करेगा । इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

'मा:' शब्द के दो अर्थ हैं—पूछना और निषेध करना । 'मा' यदि अनुदात्त है तो इसका अर्थ सर्वनाम वाची 'मुझको' होगा । यदि उदात्त है तो इसका अर्थ निषेधात्मक होगा ।

'सूर्य गतः देवदत्तः' वाक्य में 'सूर' शब्द के दो अर्थ हैं—सूर और सूत । यदि सूर शब्द को आद्युदात्त मानें तो इसका अर्थ सूर होगा तथा अन्तोदात्त मानने पर सूत होगा ।

'अर्य' शब्द के स्वामी और वैश्य दो अर्थ हैं । इसको आद्युदात्त मानने पर वैश्य तथा अन्तोदात्त मानने पर स्वामी अर्थ होगा । 'पुरुष' को अन्तोदात्त मानने पर इसका दुष्ट पुरुष एवं आद्युदात्त मानने पर सज्जन होगा ।'

स्वरों के अन्यान्य नियम—

व्याकरण-ग्रन्थों में स्वरों के सम्बन्ध में विस्तृत नियम दिए गए हैं । कुछ विशेष नियम इस प्रकार हैं—

(१) वैदिक भाषा में एक पद में प्रायः एक ही पद उदात्त होता है और शेष अनुदात्त होते हैं । प्रतिपादकों और धातुओं का प्रायः अन्तिम पद उदात्त होता है ।

(२) निपातों, आदि को छोड़कर अन्य उपसर्गों और प्रत्ययों का आदि स्वर उदात्त होता है ।

(३) लुङ् लङ् लङ् लकारों में धातु के पहले आने वाले 'अ' और 'आ' उदात्त होते हैं ।

(४) चित् (जिसमें च् का लोप हुआ हो), तित् तद्धित (वे तद्धित) प्रत्यय जिनमें त् का लोप हुआ हो, समस्त पद, वो अन्तोदात्त होते हैं ।

(५) देवता वाचक शब्दों में एक स्वर उदात्त होता है । पर द्वन्द्व समास होने पर यथा 'मित्रावरुणा' में दो उदात्त होते हैं । द्वन्द्व समास को छोड़कर देवता वाचक शब्द के समास में एक पद में एक ही स्वर उदात्त या स्वरित होगा । शेष अनुदात्त होंगे ।

(६) च आदि अव्ययों के सभी स्वर अनुदात्त होते हैं ।

(७) सम्बोधन के पदों में प्रायः उदात्त नहीं होता । सर्वनाम शब्दों के वैकल्पिक रूपों में आदि में उदात्त नहीं होता ।

(८) तित् (जिसके त् का लोप हुआ हो) स्वरित होता है ।

साभार : ऋक् सूक्त संग्रहः डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार

Appendix - S_3

(९) यदि क्रिया पद आदि में न हो तो उसके सभी स्वर अनुदात्त होते हैं।
(१०) पुनः प्रयुक्त किये जाने पर दूसरा पद अनुदात्त होगा।

सन्धियों होने पर स्वर में परिवर्तन—

(१) उदात्त और अनुदात्त की सन्धि होने पर उदात्त होगा।
(२) अनुदात्त और उदात्त की सन्धि होने पर उदात्त होगा।
(३) स्वरित और उदात्त की सन्धि होने पर उदात्त होगा।
(४) उदात्त और अनुदात्त की सन्धि होने पर स्वरित होगा।
(५) उदात्त और स्वरित की सन्धि नहीं होती।
(६) अनुदात्त और अनुदात्त की सन्धि होने पर अनुदात्त होता है, परन्तु तीसरी सन्धि होने पर स्वरित होता है।
(७) स्वरित और अनुदात्त की सन्धि से स्वरित होता है।

स्वरों में परिवर्तन के सामान्य नियम—

(१) उदात्त से परवर्ती अनुदात्त को स्वरित होता है, किन्तु उस अनुदात्त के बाद कोई स्वरित या उदात्त नहीं होना चाहिये। ऐसा होने पर वह अनुदात्त ही रहता है।
(२) उदात्त से व्यवहित पूर्व अनुदात्त ही रहता है।
(३) सामान्यतः एक पद में एक ही स्वर उदात्त रहता है।

स्वराङ्कन की विधि—

स्वराङ्कन की भारतीय पद्धति से निम्न प्रकार से किया जाता है—
(१) उदात्त—कोई चिह्न नहीं।
(२) अनुदात्त—अक्षर के नीचे पड़ी रेखा (—)।
(३) स्वरित—अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा (।)
कुछ विदेशी विद्वान् स्वराङ्कन इस प्रकार से करते हैं—
(१) उदात्त—(ऊपर) (।) चिह्न।
(२) अनुदात्त कोई चिह्न नहीं।
(३) स्वरित—नीचे (—) रेखा.

संहिता पाठ और पद पाठ

वैदिक मन्त्रों के दो प्रकार के मुख्य पाठ उपलब्ध होते हैं—संहिता पाठ और पद पाठ। साहित्य में वेदों को श्रुति भी कहा जाता है। श्रुति परम्परा से गुरु वेदों का ज्ञान शिष्यों को दिया करते थे, अतः इनको श्रुति कहा गया था। वेद-मन्त्रों के रूप को सुरक्षित रखने के लिये ऋषियों ने विभिन्न पाठों का प्रचलन किया था।

संहिता पाठ को अधिक पवित्र और प्रामाणिक समझा जाता है। भारतीय परम्पराओं के अनुसार ऋषियों को वेदों का ज्ञान संहिताओं के रूप में हुआ था। वेदों

साभार : ऋक् सूक्त संग्रह: डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार

Appendix - S_4

ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १९

आग्निमारुत सूक्त

ऋषि—मेधातिथि देवता—अग्निमरुतौ छन्द—गायत्री

संहिता-पाठः

१. प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥

पद-पाठः

प्रति। त्यम्। चारुम्। अध्वरम्। गोऽपीथाय। प्र। हूयसे।

मरुत्ऽभिः। अग्ने। आ। गहि॥१॥

अन्वय—अग्ने! त्यम् चारुम् अध्वरम् प्रति गोपीथाय प्रहूयसे। मरुद्भिः आगहि।

सायण—त्यच्छब्दः सर्वनामतच्छब्दपर्यायः। हे अग्ने यो यज्ञः चारुः अङ्गवैकल्यरहितः त्यं तथाविधं चारुमध्वरं प्रतिलभ्य गोपीथाय सोमपानाय प्रहूयसे प्रकर्षेण त्वं हूयसे। तस्मादस्मिन्नध्वरे त्वं मरुद्भिः सह देवविशेषैः सह आगहि आगच्छ।

शब्दार्थ—**त्यम्**=उस प्रसिद्ध। **चारुम्**=सब अङ्गों से पूर्ण सुन्दर। **अध्वरम्**=हिंसा से रहित यज्ञ। **गोपीथाय**=सोमपान करने के लिये। **प्रहूयसे**=बुलाये गये हो। **आगहि**=आइये।

व्याकरण—

हिन्दी अनुवाद—हे अग्नि देवता! तुमको उस प्रसिद्ध सब अङ्गों से पूर्ण सुन्दर यज्ञ में सोमपान करने के लिये बार-बार बुलाया गया है। इसलिये हे अग्निदेव! आप मरुत् नामक देवताओं के साथ आइये।

त्यम्—'त्यत्' सर्वनाम शब्द है और 'तत्' का पर्यायवाची है। द्वितीय विभक्ति का एकवचन।

चारुम्—चर् धातु से "दृसनिजनिचरीत्यादि०" (१–३) उणादि सूत्र से उण् प्रत्यय। चर्+उ=चारु।

अध्वरम्—ध्वृ हिंसायाम्+अप्=ध्वर। न ध्वरः यत्र स=न+ध्वर=अध्वर।

हूयसे—ह्वे धातु (कर्मवाच्य), लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

साभार : ऋक् सूक्त संग्रहः डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार

दूरवाणी/Phones : 0821-2345006
निदेशक / Director : 0821-2515820
फ़ैक्स (सामान्य) / Fax: 0821-2515032

वेब साइट /Website : http://www
ई-मेल / Email : ada@ciil.org

सत्यमेव जयते

भारत सरकार/Government of India
मानव संसाधन विकास मंत्रालय/ Ministry of Human Resource Development
उच्चतर शिक्षा विभाग / Department of Higher Education
भारतीय भाषा संस्थान /Central Institute of Indian Languages
मानसगंगोत्री, हुणसूर रोड, मैसूर –570006 / Manasagangotri, Hunsur Road, MYSURU- 570006

MOST U

F. No.8/5-5/2016-17/Estate/Civil/CPWD/CIIL **SPEED POST** 06/10/

To,

The Executive Engineer (Civil),
CPWD, Nirman Bhavan,
T.Narasipura Road, Siddarthanagar,
Mysore- 570 011.

Sub: Issue of Demand Draft for Rs.27, 00, 000/- -reg

This is in continuation of our earlier dated regarding revalidation of DD for Rs. 27, (
We are Issue new **DD No. 511530 dated 06/10/2017 for Rs. 27, 00, 000/-** (Rupees Twen
Lakhs Only) towards the Renovation of CIIL Main Building Bath rooms. Kindly acknow
receipt of the DD and intimate to undersigned for beginning of the works as soon as possible

This is issues with approval of Director.

Yours faithfully

06/10/2017

(PANKAJ DWIVEDI)
Assistant Director (Admin.) i/

सहायक निदेशक (प्रशा) प्र
Assistant Director (Admin)
भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Langua
मानसगंगोत्री, मैसूरु - 570006

Copy to : Account Section
Encl: DD No. 511530 dated 06/10/2017 for Rs. 27, 00, 000/-

Payee Only

केनरा बैंक Canara Bank जयलक्ष्मीपुरम्, मैसूर
JAYALAXMIPURAM, MYSORE - 570 012 (0566)

यह लिखत जारी करने की तारीख से
Valid for three months only from the d

0610

056613025521

मांगने पर On Demand Pay

E E MYSORE CENTRAL DIVISION CPWD

को या उनके आदेश पर Or Order प्रा

रूपये Rupees

TWENTY SEVEN LAKH ONLY

अदा करें For Value Received

₹ **********270

MANIPAL TECHNOLOGIES LTD, MANIPAL

एह OT
दह TT
एला OL
दला TL

केनरा बैंक Canara Bank NOT OVER Rs.2700000

कृते केनरा बैंक For Ca

MYSORE ACCOUNTS SECTION (1716)

प्राधिकृत हस्ताक्षर कर्ता AUTH. SIGNATORY

आनंद एम. एस. / ANANDA M.S.
अधिकारी / OFFICER
एस. पि. नं.:६५५७२ /S.P.No.: 65572

नाम NAME पदनाम DESIGNATION एस.पी.नं. S.P.No.

प्राधिकृत हस्ताक्षर कर्ता AUTH. SIGNATORY नाम NAME पदनाम DESIGNAT

DRAWEE BRANCH. D.P. CODE 15CTDMD

₹ 1 Lakh और उससे अधिक डीमांड ड्राफ्ट के लिए दो प्राधिकृत हस्ता
Demand Drafts of ₹ 1 Lakh and above require signature of t
Please sign above

⑈511530⑈ 000015000⑆ 520566⑈ 16

Appendix - S_5

व्याकरण—

पूर्वपीतये—पूर्वा चासौ पीति पूर्वपीतिः तस्यै । पा + क्तिन् = पीति ।

सोम्यम्—सोम शब्द से 'सोमम् अर्हति' अर्थ में 'अर्हति' सूत्र से यत् प्रत्यय होकर सोम + य = सोम्य ।

मधु—'मनु अवबोधने' धातु "फलिपाटिनमि०" (उणादि सूत्र १.१६) सूत्र से 'उ' प्रत्यय होकर 'न' को 'ध' होकर मधु ।

सृजामि—सृज् धातु, लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन ।

विशेष—यहाँ गायत्री छन्द है । परन्तु दूसरे पाद में सात वर्ण हैं । अतः छन्दपूर्ति के लिये 'सोम्यम्' को 'सोमियम्' इस प्रकार उच्चारण करना चाहिये ।

मण्डल १ सूक्त २५

२. वरुण-सूक्त

ऋषि—शुनःशेप देवता—वरुण छन्द—गायत्री

सहिता-पाठः

१. यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् ।
मिनीमसि द्यविद्यवि ॥

पद-पाठः

यत् । चित् । हि । ते । विशः । यथा । प्र । देव । वरुण । व्रतम् ।
मिनीमसि । द्यविंऽद्यवि ॥ १ ॥

अन्वय—वरुण देव ! यथा विशः ते व्रतम् यत् चित् हि द्यविद्यवि प्रमिनीमसि ।

सायण—हे वरुण ! यथा लोके विशः प्रजाः कदाचित् प्रमादं कुर्वन्ति तथा वयमपि ते तव सम्बन्धि यच्चिद्धि यदेव किञ्चिद् व्रतं कर्म द्यविद्यवि प्रतिदिनं प्रमिनीमसि प्रमादेन हिंसामतिक्रान्तः । तदपि व्रतं प्रमादपरिहारेण राद्धं कुर्विति शेषः ।

शब्दार्थ—यत् चित् = जो कुछ । विशः = प्रजाजन । व्रतम् = नियम को । द्यविद्यवि = प्रतिदिन । मिनीमसि = प्रमाद से उल्लंघन करते हैं ।

हिन्दी अनुवाद—हे वरुण देव ! जिस प्रकार संसार में प्रजाजन कभी प्रमाद करते हैं, उसी प्रकार हम भी आपके नियमों का जो कुछ भी प्रतिदिन प्रमाद से उल्लंघन करते हैं, हमारे प्रमादों का परिमार्जन करके उन नियमों को पूर्ण बनाइये ।

साभार : ऋक् सूक्त संग्रहः डॉ हरिदत्त शास्त्री, डॉ कृष्ण कुमार

Appendix -T

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी

ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्यस्यर-
श्मिभिः ॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्य यत्कामःपुनेतच्छकेयम् ।
इति पवित्रे धृत्वा पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति त्रिरुच्चार्य सेकं कृत्वा
विष्णवे नमः ३ इत्याचम्य शिखां बध्वा सपत्नी- कः अपत्नीको वा
हस्ते ऽक्षतपुष्पाणिगृहीत्वा गणपतिं ध्यात्वा स्वस्तिवाचनं कुर्यात् ।

ॐ आनोभद्राःक्रतवोयन्तुविश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥
देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानां-
भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬरातिरभिनोनिवर्त्तताम् ॥ देवानाᳬस-
ख्य मुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुःप्रतिरन्तुजीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्वयानि-
विदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्य्यमणंव्वरुणᳬसोम-
मश्विनासरस्वतीनःसुभगामयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातुभे-
षजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्वि-
नाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धिय-
ञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः
स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वा-
मरुतः पृश्निमातरःशुभंय्यावानोविदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वामनवः
सूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयाम-

Appendix - U_1

अइउवर्णानां संज्ञा। एवमच्हल्अलित्यादयः* ॥

ऊकालोऽज्ह्रस्वदीर्घप्लुतः १। २। २७॥

उश्च ऊश्च ऊ३श्च वः; वां काल इव कालो यस्य सोऽच् क्रमाद् ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञः स्यात्। स प्रत्येकमुदात्तादिभेदेन त्रिधा॥

उच्चैरुदात्तः १। २। २९॥

नीचैरनुदात्तः १। २। ३०॥

समाहारः स्वरितः १। २। ३१॥

स नवविधोऽपि प्रत्येकमनुनासिकत्वाननुनासिकत्वाभ्यां द्विधा॥

मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः १। १। ८॥

---

* [illegible]

१ अण्	८ ऊठ्	१५ ऐच्	२२ जश्	२९ यय्	३६ ऋत्
२ अक्	९ अच्	१६ ञय्	२३ झय्	३० यम्	३७ ऌत्
३ अट्	१० इट्	१७ ङय्	२४ झर्	३१ यञ्	३८ ऋत्
४ अण्	११ इण्	१८ ङम्	२५ झल्	३२ यण्	३९ ऌत्
५ अण्	१२ उक्	१९ चय्	२६ झश्	३३ यम्	४० ऋत्
६ अम्	१३ एङ्	२० चर्	२७ झष्	३४ यय्	४१ ऌत्
७ अल्	१४ एच्	२१ छव्	२८ बश्	३५ यर्	४२ ऌत्

महेश्वरसूत्रसिद्धानां सवार्तिकपाणिनिसूत्रव्यवहृतानामेव प्रत्याहाराणामियं संख्येति बोध्यम्॥

१-एकमात्रिकोकारोच्चारणकालसदृशकालकोऽच् ह्रस्वसंज्ञः, द्विमात्रिकोकारोच्चारणकालसदृशकालकोऽच् दीर्घसंज्ञः, त्रिमात्रिकोकारोच्चारणकालसदृशकालकोऽच् प्लुतसंज्ञ इति भावः॥ २-स लब्धह्रस्वादिसंज्ञकोऽच्॥ ३-ताल्वादिषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽजुदात्तः॥ ४-ताल्वादिषु स्थानेष्वधोभागे निष्पन्नोऽजनुदात्तः॥ ५-उदात्तत्वानुदात्तत्वयोरेकत्र समाहारो यत्र सोऽच् स्वरितः॥ ६-स लब्धोदात्तादिसंज्ञकः॥ ७-मुखेन सहिता मुखसहिता, सा चासौ नासिका च मुखनासिका, उच्यतेऽसाविति वचनः, मुखनासिकया वचन इति विग्रहः॥

साभार - लघु सिद्धांत कमौदी : श्रीमद्विद्वद्वर-वरदराचार्यप्रणीता

Appendix - U_2

मुखसहितनासिकयोच्चार्यमाणो वर्णोऽनुनासिकसंज्ञः स्यात्। तदित्थम्[1]—अ इ उ ऋ ऌ एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादश भेदाः। ऌवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्। एचामपि द्वादश तेषां ह्रस्वाभावात्*॥

तुल्यास्यप्रयत्नं[2] सवर्णम् १। १। ९॥

ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यात् (ऋऌवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्)। अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः। इचुयशानां तालु। ऋटुरषाणां मूर्धा। ऌतुलसानां दन्ताः। उपूपध्मानीयानामोष्ठौ। ञमङणनानां नासिका च[3]। एदैतोः कण्ठतालु। ओदौतोः कण्ठोष्ठम्। वकारस्य दन्तोष्ठम्।

१–पूर्वोक्तैः 'उकालोऽच्–' इत्यादिभिः पञ्चभिः सूत्रैर्यत्कार्यमुक्तं तदित्थमनेन प्रकारेण ज्ञेयमित्यर्थः॥

* अचामष्टादशभेदविवरणम्—

अ इ उ ऋ ऌ	अ इ उ ऋ ए ओ ऐ औ	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ
ह्रस्वभेदाः।	दीर्घभेदाः।	प्लुतभेदाः।
१ उदात्तानुनासिकः	७ उदात्तानुनासिकः	१३ उदात्तानुनासिकः
२ उदात्ताननुनासिकः	८ उदात्ताननुनासिकः	१४ उदात्ताननुनासिकः
३ अनुदात्तानुनासिकः	९ अनुदात्तानुनासिकः	१५ अनुदात्तानुनासिकः
४ अनुदात्ताननुनासिकः	१० अनुदात्ताननुनासिकः	१६ अनुदात्ताननुनासिकः
५ स्वरितानुनासिकः	११ स्वरितानुनासिकः	१७ स्वरितानुनासिकः
६ स्वरिताननुनासिकः	१२ स्वरिताननुनासिकः	१८ स्वरिताननुनासिकः

२–अस्यन्ति उच्चारयन्ति वर्णान् अनेनेति आस्यम्, आस्ये भवमास्यं प्रकृष्टो यत्नः प्रयत्नः आस्यं च प्रयत्नश्च आस्यप्रयत्नौ तुल्यावास्यप्रयत्नौ यस्य तत्तुल्यास्यप्रयत्नम्॥

३–चकारेण स्वस्ववर्गानुकूलं तालव्यादि समुच्चीयते॥

साभार – लघु सिद्धांत कमौदी : श्रीयद्विद्वद्वर–वरदाचार्यप्रणीता

Appendix - V_1

प्रश्नमाला

१. सन्धि करें—नै + अकः, गै + अनम्, श्रौ + अणः, ने + अनम्, भौ + उकः, पौ + अकः ।

२. सन्धि-विच्छेद करें—शयनम्, भवनम्, चयनम्, नाविकः, भावुकः, धावितम्, लावीश्वरौ, विधावुदिते, नाव्यम, विनायकः, सख्यागच्छ, प्रभ्वागच्छ, प्रभ्वेहि, शिवार्थः ।

अतिरिक्त सन्धि (पाणिनीय सूत्रानुसार)

पूर्वरूप-सन्धि

(एङः पदान्तादति)

यह अयादि सन्धि का अपवाद है। यदि पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' हो और उसके बाद 'अ' हो तो उस 'अ' का लोप हो जाता है। उसके स्थान पर 'ऽ' चिह्न लगा दिया जाता है। जैसे — रामे + अपि = रामेऽपि, प्रभो + अत्र = प्रभोऽत्र, कः + अयम् = कोऽयम् । **(91S)** **(Board Model, 84 A)** सः + अवदत् = सोऽवदत् **(88 A)**

प्रगृह्य-सन्धि

(ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

इसे प्रकृतिभाव सन्धि भी कहते हैं। ईकारान्त, ऊकारान्त या एकारान्त शब्द यदि द्विवचन रहता है तो कोई सन्धि नहीं होती है। जैसे—मुनी + आगच्छतः = मुनी आगच्छतः। साधू + इमौ = साधू इमौ (यण्-सन्धि का निषेध), लते + एते = लते एते, सविते + एतौ = सविते एतौ (अयादि-सन्धि का निषेध)।

पररूप-सन्धि

(एङि पररूपम्)

उपसर्ग के आकार के बाद यदि धातु का 'ए' अथवा 'ओ' रहे तो उपसर्ग का आकार भी बाद के स्वर का रूप ले लेता है। यह वृद्धि-सन्धि का अपवाद है। जैसे—प्र + एषयति = प्रेषयति **(Board Model)**, प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति।

प्रश्नमाला

१. पूर्वरूप, पररूप तथा प्रगृह्य सन्धि के कुछ उदाहरण बतलाएँ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

	क्या है ?	दीर्घ	गुण	वृद्धि	यण्	अयादि
(क)	पवित्रम्	—	—	—	—	—
(ख)	पावकः	—	—	—	—	—
(ग)	इत्यालोच्य	—	—	—	—	—
(घ)	सदैव	—	—	—	—	—
(ङ)	सूर्योदयः	—	—	—	—	—
(च)	वधूत्सवः	—	—	—	—	—
(छ)	नदीशः	—	—	—	—	—
(ज)	गिरीशः	—	—	—	—	—

(उपर्युक्त शब्दों के समक्ष रिक्त स्थानों में √ चिह्न द्वारा सन्धि बतलाएँ)

व्यञ्जन-सन्धि

स्वर या व्यञ्जन वर्णों के कारण व्यञ्जन-वर्ण में जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं। इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं—

Appendix -V_2

१. **झलां जशोऽन्ते**—यदि वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वर्ण रहे या य, व, र, ल रहे या कोई स्वर-वर्ण रहे तो प्रथम वर्ण का उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। उदाहरण —

दिक् + गजः = दिग्गजः
वाक् + दानम् = वाग्दानम् **(91S)**
अच् + अन्तः = अजन्तः
तत् + रूपम् = तद्रूपम्
जगत् + ईशः = जगदीशः। **(85 A)**
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः **(90A)**
अप् + जम् = अब्जम्
दिक् + भ्रमः = दिग्भ्रमः
वाक् + दत्तः = वाग्दत्तः।
सत् + उक्तिः = सदुक्तिः **(86 A)**

२. **अचोरहाभ्यां द्वे** — र् या ह के बाद उष्म-वर्णों को छोड़कर अन्य व्यञ्जन-वर्णों का विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे--कर्म-कर्म्म, सर्वम्-सर्व्वम्, अर्चना-अर्च्चना।

३. **समःसुटि**—यदि सम् के बाद कृ धातु से निष्पन्न कोई शब्द हो तो म् का अनुस्वार हो जाता है एवं स् का आगमन हो जाता है। जैसे—सम् + कारः = संस्कारः, सम् + कृतिः = संस्कृतिः। **(92 A)**

४. **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा**— यदि वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद पंचम वर्ण आए, तो प्रथम वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का तृतीय या पंचम वर्ण हो जाता है जैसे—

वाक् + मयः = वाङ्मयः,
प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः,
जगत् + नाथः = जगन्नाथः, जगद्नाथः **(Board Model, 87 A)**
महत् + नाम = महन्नाम
सत् + मित्रम = सन्मित्रम् **(88 A)**
उत् + नतिः = उन्नतिः
षट् + मुखः = षण्मुखः
तत् + मात्रम् = तन्मात्रम् **(89 A)**
उत् + मुखः = उन्मुखः **(89 S)**

नोट — पंचम वर्ण का प्रयोग अधिक होता है। उत् + दामः = उद्दामः **(B.M.)**

५. **वा पदान्तस्य**— यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या बाद वाले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे—

अहम् + कारः = अहंकारः, अहङ्कारः
सम् + गमः = संगमः, सङ्गमः
किम् + चित् = किंचित, किञ्चित्
पम् + चम = पंचम, पञ्चम

६. **झयो होऽन्यतरस्याम्**— यदि वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आये तो वह पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण और पूर्व वर्ण तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे—

उत् + हृतम् = उद्धृतम् **(Board Model)**
वाक् + हरिः = वाग्घरिः **(85)**
उत् + हारः = उद्धारः
तत् + हितः = तद्धितः **(85 A)**

७. **छे च। पदान्ताद्वा**— ह्रस्व-स्वर के बाद 'छ' हो तो 'छ' के पहले 'च्' जुट जाता है। दीर्घ-स्वर रहने पर यह विकल्प से होता है। जैसे—

परि + छेदः = परिच्छेदः, शाला + छादनम् = शालाच्छादनम्, शालाछादनम्, वि + छेदः = विच्छेदः, राज + छत्रम् = राजच्छत्रम् **(84 A)**

८. **मोऽनुस्वारः**— यदि 'म्' के बाद अन्तःस्थ या उष्म वर्ण हो तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। जैसे—

सम् + योगः = संयोगः
सम् + सारः = संसारः **(84 A)**
सम् + वादः = संवादः
स्वयम् + वरः = स्वयंवरः
सम् + हारः = संहारः

९. यदि 'च्' या 'ज्' के बाद 'न्' हो तो न् के स्थान में 'ञ्' हो जाता है। जैसे— किम् + चित् = किञ्चित् **(84 A)**

याच् + ना = (याञ्चा)
यज् + नः यज्ञः।

साभार : संस्कृत सहचर — आचार्य राधामोहन उपाध्याय

Appendix - V_3

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

शुद्ध शब्द के समक्ष रिक्त स्थान पर (√) का चिह्न अंकित करें—

१.	किंकरोति	—	किम्करोति	—
२.	जगतान्तः	—	जगदन्तः	—
३.	दिक्पालः	—	दिग्पालः	—
४.	दिक्नाथः	—	दिग्नाथः	—
५.	तत्लयः	—	तल्लयः	—

विसर्ग-संधि

स्वर व्यञ्जन के मेल से विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं। इसके कुछ प्रमुख नियम नीचे दिये जाते हैं—

१. **हशि च**— यदि विसर्ग के पहले 'अ' स्वर रहे और बाद में वर्गों का तृतीय, चतुर्थ, पंचम या य, र, ल, व, ह, में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग का उ, हो जाता है। वही 'उ' अपने पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर 'ओ' का रूप धारण कर लेता है। जैसे—

मनः + रथ = मनोरथः **(81A, 85A, 87A),** सरः + वरः = सरोवरः, मनः + रमम् = मनोरमम् **(84 S),** तेजः + मयः = तेजोमयः, पयः + धरः = पयोधरः, यशः + धरा = यशोधरा, पुरः + हित = पुरोहित, नमः + विश्वसृजे = नमोविश्वसृजे। पयः + दः = पयोदः **(92 A)**

२. यदि विसर्ग के बाद 'च्' या 'छ्' हो तो विसर्ग का श् हो जाता है। 'ट्' या 'ठ्' हो तो 'ष्' हो जाता है। जैसे निः + छलः = निश्छलः, धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः, निः + चयः = निश्चयः।

३. **वा शरि**— यदि विसर्ग के बाद कोई सकार हो तो विसर्ग का वही सकार हो जाता है, विकल्प से। जैसे—

दुः + शासनः = दुश्शासनः, निः + शब्दः = निश्शब्दः, निः + संदेह = निस्संदेहः अथवा दुःशासनः, निःशब्दः, निःसन्देहः।

४. **रोरि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः**— यदि विसर्ग के बाद 'र्' आये तो विसर्ग का पहला वाला स्वर दीर्घ हो जाता है तथा विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—निः + रवः = नीरवः, दुः + राजः = दूराजः, निः + रोगः = नीरोगः, प्रातः + रम्यम् = प्रातारम्यम् **(89A)**

५. **ससजुषो रुः**— यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई स्वर रहे तथा बाद में कोई स्वर हो या वर्गों का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है। जैसे—

निः + उपायः = निरुपायः **(91 A)** निः + जलम् = निर्जलम्, निः + झरः = निर्झरः, दुः + गन्धः = दुर्गन्धः।

६. **अतोरोरप्लुतादप्लुते**— यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' आए तो विसर्ग एवं प्रथम 'अ' को मिलाकर 'ओ' (विसर्ग का उत्व, गुण-सन्धि) हो जाता है तथा बाद वाला 'अ' अर्ध अ (ऽ) का रूप धारण कर लेता है। जैसे—

शिवः + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः। प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी। सः + अवदत् = सोऽवदत्। **(88A)** कः + अयम् = कोऽयम् **(91 S)**

७. **विसर्ग के बाद क, ख, प, फ, रहने पर विसर्ग में परिवर्तन नहीं आता**— प्रातः + कालः = प्रातःकालः, उषः + कालः = उषःकालः, अन्तः + पुरम् = अन्तःपुरम्।

८. **विसर्जनीयः सः**— जिस विसर्ग का स् हो जाता है उसे "सत्व" सन्धि कहते हैं। जैसे—

Appendix - W$_1$

THE STUDENT'S

SANSKRIT-ENGLISH DICTIONARY.

अ' The first letter of the Nâgarî Alphabet.—अः 1 N. of Vishṇu, the first of the three sounds constituting the sacred syllable ओम्; अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः । मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मकः ॥- 2 N. of Śiva, Brahmâ, Vâyu, or Vaiśvânara—*ind.* 1 A prefix corresponding to Latin *in*, Eng. *in* or *un*, Gr. *a* or *an* and joined to nouns, adjectives, indeclinables (or even to verbs) as a substitute for the negative particle नञ् and changed to अन् before vowels except in the word अक्षणिन्. The senses of न usually enumerated are six:—(*a*) सादृश्य 'likeness' or 'resemblance'; अब्राह्मणः one like a Brâhmaṇa (wearing the sacred thread &c.), but not a Brâhmaṇa, but a Kshatriya or Vaiśya. (*b*) अभाव 'absence', 'negation', 'want,' 'privation;' अज्ञानं absence of knowledge, ignorance; अकीर्तिः, अनयः, अकेटकः, रुटः &c. (*c*) भेद 'difference' or 'distinction'; अपटः not a cloth, something different from, or other than, a cloth. (*d*) अल्पता 'smallness', 'diminution', used as a diminutive particle; अनुदरा having a slender waist (कृशोदरी or तनुमध्यमा). (*e*) अप्राशस्त्य 'badness', 'unfitness', having a depreciative sense; अकालः wrong or improper time; अकार्य not to be done, improper, unworthy, bad act. (*f*) विरोध 'opposition', 'contrariety'; अनीतिः the opposite of morality, immorality; असित not white, black. These senses are put together in the following verse:—सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ See न also. With verbal derivatives, it has usually the sense of 'not'; अदत्त्वा; अपश्यन् not seeing; so असकृत् not once; sometimes अ does not affect the sense of the second member; as अपक्षिम, अक्षुद्रम, the words. 2 An interjection of (*a*) Pity (*aho!*) अ अवयं. (*b*) Reproach, censure (fie, shame); अ धिक् त्वे जात्म, see अकरणि, अजीवनि also. (*c*) Used in addressing; अ अनंत. (*d*) It is also used as a particle of prohibition. 3 The augment prefixed to the root in the formation of the Imperfect, Aorist and Conditional Tenses.

अऋणिन् *a.* (ऋ being regarded as a consonant) Not a debtor, free from debt. The form अनृणिन् also occurs in this sense.

अंश् 10 U. (अंशयति-ते) To divide, distribute, share among; also अंशापयति in this sense. With वि- 1 to distribute.—2 to cheat.

अंशः 1 A share, part, portion; सकुटुंबो निषति Ms. 9, 47; R. 8. 16; अर्धेन दंशीलाङ्गुलता K. 159 partly. 2 A share in property, inheritance; स्वर्गीशतः Ms. 8, 408; 9. 201; Y. 2. 3 The number of a fraction; sometimes used for fraction itself. 4 A degree of latitude (or longitude). 5 The shoulder (more generally written अंस, q. v.). —Comp.—अंशः a secondary incarnation; part of a portion.—अंशेन *adv.* share by share. —अवतारः-सरणं descent (on earth) of parts of deities, partial incarnation; °वार इव धर्मस्य Dk. 153; N. of Adhyâyas 64–67 of Âdiparvan of Bhârata. —भाज्, —हर, —हारिन् *m. f.* an heir, coheir; पिंडर्क्षाहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः Y. 2. 132, 133.—सवर्णनं —reduction of fractions to the same denominator. —स्वरः the keynote.

अंशकः 1 One having a share, a coheir; relative. 2 A share, portion, division.—कं A solar day.

अंशनं Act of dividing.

अंशयितृ *m.* A divider, sharer.

अंशल *a.* 1 Having, or entitled to, a share. 2=अंसल, q. v.

अंशिन् *a.* 1 Sharer, coheir; (पुनर्विभागकरणे) सर्वे वा स्युः समांशिनः Y. 2. 114. 2 Having parts.

अंशुः 1 A ray, beam of light; चंड°, घर्म° hot-rayed, the sun; सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविंदं Ku. 1. 32; lustre, brilliance. 2 A point or end. 3 A small or minute particle. 4 End of a thread. 5 Garment; decoration; dress. 6 Speed.—Comp. —जालं a collection or rays, blaze or halo of light. —धरः, —पतिः —भृत्, —भाणः, भर्तृ, —स्वामी, —हस्तः the sun, (bearer of rays or lord of rays.). —पट्टं a kind of silken cloth. —मालः a garland of light, halo.—मालिन् *m.* the sun.

अंशुमत् *a.* 1 Luminous, radiant; ज्योतिषा रविरंशुमान् Bg. 10. 21. 2 Pointed. —*m.* (मान्) 1 The sun; बालभिल्यैरिवांशुमान् R. 15. 10. 2 N. of the grandson of Sagara, son of Asamanjasa and father of Dilipa.

अंशुकं 1 A cloth, garment in general; सितांशुका V. 3. 12; यवांशुकक्षेपविलक्षितानां Ku. 1. 14; *S.* 1. 34. 2 A fine or white cloth; Me. 62; usually silken or muslin. 3 An upper garment; a mantle; also an under garment. 4 A leaf. 5 Mild or gentle blaze of light.

अंशुमत्फला The plantain tree.

अंशुल *a.* Radiant, luminous.—लः N. of the sage Châṇakya.

अंसः (असयति, असायति) See अंश्.

अंसः 1 A part, portion, see अंशः. 2 Shoulder, shoulderblade.—Comp. —कूटः a bull's hump, the protuberance between the shoulders.—त्रं 1 an armour to protect the shoulders. —2 a bow.—फलकः the upper part of the spine.—भारः a burden or yoke put upon the shoulder. —भारिक, —भारिन् *a.* (असे°) bearing a yoke or burden on the shoulder.—विवर्तिन् *a.* turned towards the shoulders; *S.* 3. 26.

अंसल *a.* Strong, lusty, powerful, having strong shoulders; बभौ युगव्यायतबाहुरंसलः R. 3. 34.

अंह् 1 A. (अंहते, अंहित, अंहित) To go, approach; set out.—*Caus.* 1 To send. 2 To shine. 3 To speak.

अंहतिः—ती *f.* 1 A gift. 2 Anxiety; trouble, care, distress; illness. (Ved.).

अंहस् *n.* (अंहः—असी &c.) 1 A sin; महता संहतिमंहसां विहंतुं...अलं Ki. 5. 17. 2 Trouble, anxiety, care.

अंहितिः—ती *f.* A gift, donation.

अंहिः 1 A foot. 2 The root of a tree, cf. अंघ्रि. 3 The number four. —Comp. —पः 'foot-drinker', a tree. —स्फटः the upper part of the sole of the foot.

अक् 1 P. (अकति, अकित) To go, tortuously like a serpent.

अकं Absence of happiness; pain, misery; sin.

अकच *a.* Bald.—चः N. of Ketu (the descending node).

अकनिष्ठ *a.* Not the youngest (such

Appendix - W_2

his place. Gautama, when he knew of her seduction, expelled her from his hermitage and cursed her to be a stone and become invisible till she should be touched by the feet of Dasarathi Rama which would restore her to her former shape. Rama afterwards delivered her from her wretched state, and she was reconciled to her husband. Ahalya is one of the five very chaste and pure women whose names every one is recommended to repeat in the morning; अहल्या द्रौपदी सीता तारा मंदोदरी तथा । पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिनीः ॥ –Comp. –जारः Indra. –नंदनः the sage Satânanda, son of Ahalyâ.

अहह *ind.* A particle or interjection implying (*a*) sorrow or regret ('alas,' 'ah'); अहह कष्टमपंडितताये: Bh. 2. 92, 3. 21; अहह ज्ञानगरिम्णेदृशः Mu. 2. (*b*) Wonder or surprise; अहह महतां निरीक्षमाणमविकृतमेव Bh. 2. 35, 36. (*c*) Pity; Bv. 4. 39. (*d*) Calling. (*e*) Fatigue.

अहिः 1 A serpent, snake; अहयः सर्पिषः सर्वे निर्विषा क्षुद्रजाः स्मृताः Ks. 14, 84. 2 The sun. 3 The planet Râhu. 4 The demon Vritra. 5 A cheat, rogue. 6 A cloud. –Comp. –कांतः air, wind. –कोषः the slough of a snake. –छत्रकं a mushroom. –जित् *m.* 1. N. of Krishna (the slayer of the serpent Kâliyâ). –2 N. of Indra. –तुंडिकः a snake-catcher, conjurer, juggler. –द्विष्, –द्रुह्, –मार, –रिपु, विद्विष्, *m.* 1. N. of Garuda. –2 an ichneumon. –3 a peacock. –4 Indra. –5 Krishna; Ki. 4. 27; *Si.* 1. 41. –नकुलं snakes and ichneumons. –नकुलिका the natural antipathy between a serpent and an ichneumon. –निर्मोकः, slough of a snake. –पतिः 1. 'the lord of snakes,' Vâsuki. –2 any large serpent. –पुच्छकः a kind of boat (serpent-shaped). –फेनः, नं opium. –भयं 1 the fear of a lurking snake. –2 apprehension of treachery, of danger arising from one's own allies. –भुज् *m.* 1. N. of Garuda. –2 a peacock. –3 an ichneumon–भुत् *m.* Siva.

अहिंसा 1 Harmlessness, abstaining from killing or giving pain to others in thought, word, or deed; as अहिंसा परमो धर्मः; Bg. 10. 5; Ms. 10, 63, 5. 44; 6. 75. 2 Security.

अहिंस्र *a.* Harmless, innocent; Ms. 4. 246.

अहिकः A blind snake.

अहित *a.* 1 Not placed, put, or fixed. 2 Unfit, improper; Ms. 3. 20. 3 Hurtful, injurious. 4 Disadvantageous. 5 Inimical, hostile. —तः An enemy; अहितानिलोद्धतेस्तर्जयंश्चिर केतुभिः R. 4. 28, 9. 17, 11. 68. —तं Damage.

अहिम *a.* Not cold, hot.–Comp. –अंशुः, –करः, –तेजस्, –द्युतिः, –रुचिः the sun.

अहीन *a.* 1 Unimpaired, whole, entire. 2 Not inferior, great; अहीनबाहुप्रविणः शशास R. 18. 14. 3 Not deprived of, possessed of; Ms. 2. 183. 4 Not outcast or vile. —नः A sacrifice lasting for several days (–नं also). –Comp. –वादिन् *m.* a witness unfit for or incapable of giving evidence.

अहीरः A cowherd.

अहुत *a.* Not sacrificed or offered (as an oblation); Ms. 12. 68. —तः Religious meditation, prayer, and the study of the Vedas (considered as one of the five great Yajnas and necessary duties); Ms. 3. 73, 74.

अहे *ind.* A particle implying (*a*) Reproach. (*b*) Regret. (*c*) Separation.

अहेतु *a.* Causeless, spontaneous; अहेतुः पक्षपातो यः U. 5. 17.

अहेर (रे) तुक *a.* Groundless, causeless, without any motive; Bg. 18. 22.

अहो *ind.* 1 A particle showing (*a*) Surprise or wonder often agreeable (ah, how great or wonderful); अहो कामी स्वतां पश्यति *S.* 2. 2; अहो मधुरमासां दर्शनं *S.* 1. Ah, it is B.; अहो रूपमहो वीर्यमहो सत्त्वमहो द्युतिः Râm. (how wonderful his form &c.). (*b*) Painful surprise; अहो ते विगतचेतनत्वं K. 146. 2 Sorrow or regret in general; ('alas,' 'ah'); अहो दुष्यंतस्य संशयमारूढाः पिंडभाजः *S.* 6; विधिरहो बलवानिति मे मतिः Bh. 2. 91. 3 Praise ('bravo,' 'well done'); अहो देवदत्तः पचति शोभनं Sk. 4 Reproach ('fie,' 'shame'). 5 Calling out or addressing. 6 Envy or jealousy. 7 Enjoyment, satisfaction. 8 Fatigue. 9 Sometimes merely as an expletive; अहो नु खलु (भोः) generally indicates surprise, often agreeable (आश्चर्ये); अहो नु खल्वीदृशमिवस्थां प्रपन्नोऽस्मि *S.* 5; अहो नु खलु भोस्तेदृत्कालीयं नाम Mâl. 5. अहो बत shows (*a*) compassion, pity, regret; अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयं Bg. 1. 44; (*b*) satisfaction or admiration (संतोष); अहो बतासि श्लाघनीयवीर्यः Ku. 3, 20 (Malli. here takes अहो बत in the sense of संबोधन); (*c*) addressing, calling; (*d*) fatigue.–Comp. –पुरुषिका =आहोपुरुषिका q. v.

अहोरात्र *ind* Instantly, speedily, at once; अहोरात्र सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज Ku. 5. 86; अहोरात्र तावदरुणेन तमो निरस्तं R. 5. 71; Ki. 16. 16.

अह्रीक *a.* Shameless, impudent.–कः A Buddhist mendicant.

आ.

आ The second letter of the Alphabet.

आ 1 Used as a particle, or interjection showing (*a*) assent; 'yes'. (*b*) Compassion 'Ah'. (*c*) Pain or regret (usually written आः or आः q. v.), 'alas'. (*d*) Recollection 'Ah', 'Oh'; आ एवं किलासात् U. 6. (*c*) Sometimes used as an expletive; आ एवं मन्ये. 2 (As a prefix to verbs and nouns) (*a*) it expresses the senses of near, near to, towards, from all sides, all around (see the several verbs). (*b*) With verbs of motion, taking, carrying &c. it shows the reverse of the action; as गम् to go, आगम् to come; दा to give, आदा to take. 3 (As a separable preposition with abl.) it shows either (*a*) the limit inceptive (अभिविधि); from, ever since, away from, out of, off, from among; आमूलात् श्रोतुमिच्छामि *S.* 1; आ जन्मनः *S.* 5. 25. (*b*) Or, it expresses the limit exclusive or conclusive (मर्यादा), till, until, upto, as far as, unto; आ परितोषाद्विदुषां *S.* 1. 2; कैलासात् Me. 11 upto or as far as Kailâsa. (*c*) In both these senses आ frequently enters into compound, forming either Avyayibhâva comp. or compound adjectives; आचार्यं (or आचार्येभ्यः) हरिभक्तिः. Sometimes the compound so formed stands as the first member of other compounds; सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणां । आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनां R. 1. 5; आगंडविलंबि *S.* 6. 17. 4 With adjectives (or sometimes with nouns) आ has a diminutive force; आपाण्डुर little white, whitish; आलक्ष्य *S.* 7. 17 आकंपः gentle shaking; so आनील, आरक्त.

आः=आम् q. v.

आः 1 =आम् q. v. 2 N. of Lakshmî (आ).

आकत्थनं Boasting, swaggering.

आकंपः 1 Shaking a little. 2 Shaking, trembling.

आकंपनं Trembling motion, shaking.

आकंपित, आकंप्य *a.* Shaking, trembling; moved, agitated.

आकरः 1 A mine; मणिराकरोद्भवः R. 3. 18; आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः H. Pr. 44; (fig.) a mine or rich source of anything; मासो नु वृक्षाकरः V. 1. 9; अशेषगुणाकरं Bh. 2. 92. 2 A collection,

From - Student's Sanskrit-English Dictionary - V. S. APTE

Appendix - W_3

fication or आरोप of उपमान or उपमेय in रूपक of which the speaker is fully cognisant. 5 Conveyed or effected by decoration or ornamentation, one of the 4 kinds of अभिनय q. v.

आहावः 1 A trough near a well for watering cattle. 2 War, battle. 3 Invoking, calling. 4 Fire.

आहिंडिकः A man of mixed origin, the son of a Nishâda father and Vaidehî mother; आहिंडिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते Ms. 10. 37.

आहित *p. p.* 1 Placed, set, deposited. 2 Felt, entertained. 3 Performed, done.—COMP. —**अग्निः** a Brâhmana who consecrates the sacred fire. —**अंक** *a.* marked, spotted. —**लक्षण** *a.* bearing a characteristic epithet; ककुत्स्थ-इत्याहितलक्षणोऽभूत् R. 6. 71 (according to Malli. = noted for good qualities).

आहिंडिकः A juggler, a snake-catcher, conjurer; अहं सत्याहिंडिको जीर्णविषो नाम Mu. 2.

आहुतिः *f.* 1 Offering an oblation to a deity, any solemn rite accompanied with oblations; होतुराहुतिसाधनं R. 1. 82. 2 An oblation offered to a deity.

आहुतिः *f.* Calling, invoking.

आहेय *a.* Pertaining to a serpent; Pt. 1. 111.

आहो *ind.* An interjection expressing (*a*) Doubt or alternative (or), and usually standing as a correlative of किं; किं वेत्थानसं व्रतं निर्वर्तितव्यं... आहो निवर्त्स्यति समं हरिणांगनाभिः *S.* 1, 27; दारत्यागी भवान्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः *S.* 5. 26. (*b*) Interrogation.—COMP. —**पुरुषिका** 1 great self-conceit or pride; आहोपुरुषिका वापि स्यात्संभावनात्मनि Ak.; आहोपुरुषिकां पक्ष्म मम सद्गुणकीर्तिभिः Bk. 5. 27. 2 military vaunting, boasting. 3 vaunting of one's own prowess; निजभुजबलाहोपुरुषिकां Bv. 1. 84. —**स्वित्** *ind.* a particle implying doubt, 'or perhaps,' or 'may it be' &c., (corr. of किं); आहोस्वित्सत्त्वसंपन्नं समरेष्वपराजितं वरिष्ठं *S.* 5. 9; किं द्विजः पचति आहोस्विद् गच्छति Sk.

आह्न A series of days, many days.

आह्निक *a.* (**की** *f.*) Daily, diurnal, performed every day or on a day; आह्निकः स्वाध्यायः daily course of study. —**कं** 1 Any religious rite or duty which is to be performed every day at a fixed hour; anything to be performed daily, such as taking meals, bathing &c.; कृताह्निकः संवृत्तः V. 1. 2 Daily food. 3 Daily work or occupation.

आह्लादः Delight, joy; साह्लादं, सवं Pt. 4.

आह्लादनं Gladdening, delighting.

आह्वं *a.* Who or what calls, a crier. —**ह्वः** 1 Calling, calling out. 2 A name, appellation, oft. at the end of comp; अमृताह्वः, शताह्वः &c.

आह्वयः 1 A name, appellation (as last member of comp.); काव्यं रामायणाह्वयं Râm. 2 A law-suit arising from a dispute about games with animals, as cock-fighting &c.; (one of the 18 titles of law); पणपूर्वकपक्षिमेषादिविषयं आह्वयः Râghavânanda on Ms. 8. 7.

आह्वयनं Name, appellation.

आह्वानं 1 Calling, inviting. 2 A call, invitation, summons, (in general); उद्वाहाह्वानं प्रकुर्वीत Pt. 3. 47. 3 A legal summons (from court or govt. to appear before a tribunal). 4 Invocation of a deity; *Ms* 9. 126. 5 A challenge. 6 A name, appellation.

आह्वायः 1 A summons. 2 A name.

आह्वायकः A messenger, courier, आह्वायकान् भूमिपतेरयोध्यां Bk. 2. 43.

ह.

ह् N. of Kâmadeva. —*ind.* An interjection of (1) anger; (2) calling; (3) compassion; (4) reproach; (5) wonder.

हा I. 2 P. (जहाति, हात) 1 To go, go to or towards, come to or near; शरीरं पुनरेति शर्वसं R. 8. 56. 2 To arrive at, reach, attain to, go to; निर्बुद्धिः क्षयमेति Mk. 1. 14 goes to ruin, is ruined. so वशं, शरणं, शून्यतां &c. —II. 1 U. =अव् q. v. —III. 4. A. 1 To come, appear, 2 To run, wander. 3 To go quickly or repeatedly. With **अति** 1 to go over or beyond, cross; pass over; जवादतीये हिमवान्वेोसूनैः Ki. 14. 54; स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः Me. 34 passes out of sight. 2 to excel, surpass, outstrip; सत्यमतीत्य हरितो हयांश्च नयेत वाजिनः *S.* 1; त्रिस्रोतसः कांतिमतीत्य तस्थौ Ku. 7. 15; *Si.* 2. 23. 3 to pass by, leave behind; omit, neglect; *S.* 6. 16; R. 15. 37. 4 to pass, elapse (as time); अत्येति रजनी सा तु Râm.; अतीते दशरात्रे; see अतीत. —**अधि** 1 (P.) to remember, think of, remember with regret (with gen.); रामस्य दयमानोऽधत्येति तव लक्षणः Bk. 8. 149, 18. 38; Ki 11. 74. 2 (अधीते, always Atm. in this sense) to learn, study, read through; उपाध्याया यादधीते Sk; सोऽध्येष्ट वेदान् Bk. 1. 2. (—*Caus.* अध्यापयति; *desid.* अधिजिगांसते). —**अनु** 1 to follow, go after; प्रयतां प्रातरन्वेतु R. 1. 90. 2 to succeed. 3 to follow, (in grammar or construction). 4 to obey, conform to; imitate. —**अन्वा** to go after, follow —**अंतर्** 1 to go between, intervene. 2 to hinder, obstruct. 3 to hide, conceal, screen; see अंतरित. —**अप** 1 to go away, depart, withdraw, retire; अपेहि begone, avaunt. 2 to be deprived of, be free from; see अपेत. 3 to die, perish. —**अभि** 1 to go to, approach; draw near; अस्मानभ्येति Bk. 7. 84. 2 to follow, serve. 3 to get, meet with, undergo (said of good or bad things). —**अभिप्र** to go to; intend, mean, aim at; कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानं P. 1. 4. 32. —**अभ्या** to approach, —**अभ्युद्** 1 to rise, go up. 2 (fig.) to thrive, prosper. —**अभ्युप** 1 to go near, approach, arrive; व्यतीतकालस्त्वहमभ्युपेतः R. 5. 14, 16. 22. 2 to go to a particular state, attain to; सत्यं न तथच्छलमभ्युपैति H. 3. 61. 3 to undertake, to agree, accept, promise (to do a thing); मंदायंते न खलुसुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः Me. 38. 4 to admit, own, grant. 5 to obey, submit to. —**अव** to know, learn, be aware of; अवेहि मां किंकरमष्टमूर्तेः R. 2. 35; Ku. 3. 13, 4. 9. —**आ** to come, draw near. —**उद्** 1 to rise; (as a star &c.); (fig. also) come or go up; उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं *S.* 7. 30; उदेति सविता ताम्रः &c. 2 to arise, spring, be produced. 3 to thrive, prosper. —**उप** 1 to approach, draw near; go to; योगी परं स्थानमुपैति चाद्यं Bg. 8. 28. 2 to go to or pass into, attain to, reach (a state); उपैति सख्यं परिणामरम्यतां. Ki. 4. 22. 3 to befall. —**निर्** to depart, go or set out.—**परा** 1 to go or run away, flee, retreat; यः पलायते स जीवति Pt. 5 88. 'he who runs away saves his life'; cf. 'to run for one's life'. 2 to reach, attain to; Ki. 1. 39. 3 to depart from this world, die; see परेत. —**परि** 1 to go round, circumambulate; चरणन्यासं भक्तिनम्रः परीयाः Me. 55, Ms. 2. 48. 2 to surround, encompass; हुतवहपरीतं गृहमिव *S.* 5. 10; विषवाहिभिः परीतामिवौषधिं: R. 12. 61; so कोपपरीत. 3 to go to, think of (objects &c.). 4 to change, transform oneself. —**प्र** 1 to go out of, depart from; धरिः प्रेत्यास्मालोकादमुना भवति Ken. 2 (hence) to depart life, die; प्रेत्य after death; न च तत्प्रेत्य नो इह Bg. 17. 28; Ms. 2. 9, 26. —**प्रति** 1 to go back to, return; प्रतीयाय गुरोः सकाशं R. 5. 35, Bk. 3. 19. 2 to believe, trust; कः प्रत्येति सेवेयमिति U. 4.

Appendix - W_4

travelling (in a foreign country), sojourning. 4 An affray.

ईदृक्ता Quality (opp. इयत्ता); विष्णोरिवास्यानवधारणीयं ईदृकतया रूपमियत्तया वा R. 13. 5.

ईदृश -श *a.* (शी-शी *f.*), also ईदृक्ष, Such, of this kind, of this aspect, endowed with such qualities.

ईप्सा 1 Desire to obtain. 2 A wish, desire.

ईप्सित *a.* Desired, wished for, dear to. —तं Desire, wish.

ईप्सु *a.* Striving to obtain, wishing or desiring to get (with acc. or inf., but usually in comp.); सौरमणीप्सुरिव ते मुखमाकतस्य R. 5. 63.

ईर् 2 A. (ईर्ते, ईर्ण); also 1 P. (*p. p.* ईर्ति) 1 To go, move, shake (trans. also). 2 To rise, arise or spring from. —10 U. or *Caus.* (ईरयति, ईरित) 1 To throw, cast; disharge, dart; ऐरिरत् महाद्रुमं Bk. 15. 52. 2 To utter, pronounce, repeat; इतीरयंतीव तया निरैक्षि N 14. 21; *Si.* 9. 69; Ki 1. 26; R.9.8, Mal. 1. 25. 3 To set in motion, move, shake; वातेरितपल्लवांगुलिभिः *S.* 1. 4 To employ, use. —With उद् to rise. (—*Caus.*) 1 to utter, pronounce, tell, speak; उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते Pt. 1. 43; R. 2. 9. 2 to put forth; यदशोकोऽयमुदीरयिष्यति R. 8. 62. 3 to throw, roll down (as dice); R. 6. 18. 4 to raise (as dust). 5 to display; bring about. —प्र 1 to cast. throw; *S.* 2. 2. 2 to propel, send forth; R. 4. 24. 3 to incite, instigate, set on. —सं 1 to utter. 2 to shake, move. —समुद् to utter, pronounce.

ईरण: The wind —णं 1 Agitating, moving, driving. 2 Going. 3 =इरण q. v.

ईरिण *a.* Desert, barren. —णं A desert, barren soil; सहृतेमिव निःशब्दमासीदीरिणसंनिभं Râm.

ईर्क्ष्य See ईर्ष्य.

ईर्म A wound.

ईर्या Wandering about (as a religious mendicant).

ईर्वारुः *m. f.* A cucumber.

ईर्षा=ईर्ष्या q. v.

ईर्ष्य्, ईर्क्ष्य् 1 P. (ईर्ष्यति, ईर्षित) To envy, be jealous of, be impatient of the success of (with dat. of person) हरये ईर्ष्यति Sk.; *Si.* 8. 36.

ईर्ष्य, ईर्ष्यु, ईर्ष्यक *a.* Envious, jealous.

ईर्ष्या -र्षा Envy, jealousy, envy of another's success.

ईर्ष्या (र्षा) लु, ईर्ष्यु (र्षु) *a.* Envious, impatient.

ईलिः (ली *f.*) A weapon, a cudgel or a short sword.

ईश् 2 A. (ईष्टे, ईशित) 1 To rule, be master of, govern, command (with gen.); अर्थानामीशिषे त्वं वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थं Bh. 3. 30. 2 To be able, have power; expressed by 'can'; मानुषमीशे हरिणान् ग्रहीतुं R. 18. 13. 3 To own, possess.

ईश *a.* 1 Owning, master or lord of; see below. 2 Powerful, supreme. —शः 1 A lord, master; with gen. or in comp; कथंचिदीशा मनसां बभूवुः Ku. 3. 34; so वागीश, सुरेश &c. 2 A husdand. 3 The number 11. 4 N. of *Siva.* -शा 1 N. of Durgâ. 2 A woman having supremacy; a rich lady. —Comp. —कोणः the north-east quarter. —पुरी, —नगरी N. of Benares. —सखः an epithet of Kubera.

ईशानः 1 A ruler, master, lord. 2 N. of *Siva*; Ku. 7. 56. 3 The sun (as a form of *Siva*). 4 N. of Vishṇu. —नी N. of Durgâ.

ईशिता, -त्वं Superiority, greatness, one of the eight *siddhis* or attributes of *Siva.* See अणिमन् or सिद्धि.

ईश्वर *a.* (रा-री *f.*) 1 Powerful, able, capable of (with inf.); Ku. 4. 11. 2 Rich, wealthy. —रः 1 A lord, master; ईश्वरं लोकोऽर्थतः सेवते Mu. 1. 14. 2 A king, prince, ruler. 3 A rich or great man; मा प्रयच्छेश्वरे धनं H 1. 15; cf. "To carry coals to Newcastle." 4 A husband; Ki 9 39. 5 The Supreme God (परमेश्वर). 6 N. of *Siva*; V. 1. 1. 7 The God of love, Cupid. —रा, —री N. of Durgâ. —Comp. -निषेधः denial of the existence of god, atheism. —पूजक *a.* pious, devout. —सद्मन् *n.* a temple. —सभं a royal court or assembly.

ईष् 1 U. (ईषति-ते, ईषित) 1 To fly away. 2 To look, see. 3 To give. 4 To kill.

ईषः The month *Asvina*; cf. इष.

ईषत् *ind.* Slightly, to some extent, a little; ईषत् चुंबितानि *S.* 1. 3. Comp. —उष्ण *a.* tepid. —कर *a.* 1 doing little. 2 easy to be accomplished. —जलं shallow water. —पांडु *a.* a little white or pale, whitish. —पुरुषः a mean or contemptible person. —रक्त *a* pale red —लभ, —प्रलंभ *a.* to be got for little. —हासः slight laughter, a smile.

ईषा The pole or shafts of a carriage or a plough.

ईषिका 1 An elephant's eyeball. 2 A painter's brush. 3 A weapon, arrow, dart.

ईषिरः Fire.

ईषीका 1 A painter's brush. 2 An ingot-mould. 3=इषीका q. v.

ईष्मः-ष्वः See इष्मः, इष्वः.

ईह् 1 A. (ईहते, ईहित) 1 To wish, desire, think of (with acc. or inf.); Bg. 16. 12; Bk. 1. 11. 2 To endeavour to obtain. 3 To aim at or attempt, endeavour, strive; मानुषं मधुरिमसूक्तिरचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते Bh. 2. 6; Y. 2. 116. —With सं 1 to wise, desire. 2 to strive to do or perform, strive for; क्रियाणि वांछत्यसुभिः समीहितुं Ki. 1. 19.

ईहा 1 Wish, desire. 2 Effort, exertion, activity; Ms 9. 205. —Comp. —मृगः 1 a wolf. 2 a division of the drama consisting of four acts; for definition &c. see S. D. 518 —वृकः a wolf.

ईहित *p. p* Wished; sought, striven for &c. —तं 1 A wish, desire. 2 Effort, exertion. 3 An undertaking, deed, act; Ki. 1. 20.

उ.

उः N. of *Siva*, the second of the three syllables in ओम्; see अ. —*ind.* 1 As a particle used expletively; उमेशः Sk. 2 An interjection of:— (*a*) calling; उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम Ku. 1. 26; (*b*) anger; (*c*) compassion; (*d*) command; (*e*) acceptance; (*f*) interrogation; or (*g*) used merely as an expletive. In classical literature used chiefly with अथ (अथो), न (नो) and किम् (किमु); see these words.

उक्त *p. p.* (fr. वच्) 1 Said, spoken. 2 Utterd, spoken (opp. अनुमित or संभावित). 3 Told, addressed; असावनुक्तोऽपि सहाय एव Ku. 3. 26. 4 Describeb, related. —क्तं A speech, words collectively; a sentence. —Comp. —अनुक्त *a.* spoken and not spoken —उपसंहारः a brief description, résumé, peroration. —निर्वाहः maintaining an assertion. —पुंस्कः a word (feminine or neuter) of which also a masculine exists, and the meaning of which differs from that of the masculine only by the notion of gender. —प्रत्युक्तं speech and reply, discourse.

उक्तिः *f.* 1 Speech, expression, statement; उक्तिरर्थांतरन्यासः स्यात्सामान्यविशे-

१३

From - Student's Sanskrit-English Dictionary - V. S. APTE

Appendix - W_5

…) -कृत् N. of Vishṇu. -बुद्धि 1 Increase, growth. 2 A demonstrated conclusion; distinct result.

ऋद्धिः *f.* 1 Growth, increase. 2 Success, prosperity; affluence. 3 Extent or magnitude; magnificence. 4 Supernatural power or supremacy. 5 Accomplishment.

ऋध् 4. 5. P. (ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध) 1 To prosper, flourish, thrive, succeed. 2 To grow, increase (fig. also). 3 To satisfy, gratify, please, propitiate; Mâl. 5. 20. WITH सम् to thrive.

ऋभुः A deity, divinity; a god.

ऋभुक्षः 1 N. of Indra. 2 Heaven (of Indra) or paradise.

ऋभुक्षिन् *m.* (Nom. ऋभुक्षाः, acc. pl. ऋभुक्षः) N. of Indra.

ऋलकः A player on a kind of musical instrument.

ऋश्यः A white-footed antelope. -र्श्यं Killing. -COMP. -केतुः, -केतनः 1 N. of Aniruddha, son of Pradyumna. 2 N. of the god of love.

ऋष् I. 6 P. (अर्षति, ऋष्ट) 1 To go, approach. 2 To kill, injure. -II. 1 P. (अर्षति) 1 To flow. 2 To glide.

ऋषभः 1 A bull. 2 The best or most excellent (as the last member of a comp.); as पुरुषर्षभ, भरतर्षभः &c. 3 The second of the seven notes of the gamut; ऋषभोऽत्र धैवत इति Aryā S. 141. 4 A boar's tail. 5 A crocodile's tail. -भी 1 A woman with masculine features (as a beard &c.). 2 A cow. 3 A widow. -COMP. -कूटः N. of a mountain. -ध्वजः N. of Śiva.

ऋषिः 1 An inspired poet or sage. 2 A sanctified sage, an ascetic, anchorite. 3 A ray of light. -COMP. -कुल्या a sacred river. -तर्पणं libation offered to the Rishis. -पञ्चमी N. of a festival or ceremony on the fifth day in the first half of Bhâdrapada (observed by women). -लोकः the world of the Rishis. -स्तोमः 1 praise of the Rishis. 2 a particular sacrifice completed in one day.

ऋष्टिः *m. f.* 1 A double-edged sword. 2 A sword (in general). 3 Any weapon (as a spear or lance &c.).

ऋष्यः A white-footed antelope. -COMP. -अङ्कः, -केतनः, -केतुः N. of Aniruddha. -मूकः a mountain near the lake Pampâ which formed the temporary abode of Râma with the monkey-chief Sugrîva; ऋष्यमूकस्तु पंपायाः पुरस्तात् पुष्पितद्रुमः. -शृङ्गः N. of a sage. [He was the son of Vibhaṇḍaka. He was brought up in the forest by his father, and he saw no other human being till he nearly reached his manhood. When a great drought well nigh devastated the country of Anga, its king Lomapada, at the advice of Brahmaṇas, caused Rishyaśringa to be brought to him by means of a number of damsels, and gave his daughter Śântâ (adopted by him, her real father being Daśaratha) in marriage to him, who being greatly pleased caused copious showers of rain to fall in his kingdom. It was this sage that performed for king Daśaratha the sacrifice which brought about the birth of Râma and his three brothers].

ऋष्यकः A painted or white-footed antelope.

ॠ.

ॠ *ind.* An interjection of (1) terror; (2) warding off; (3) reproach or censure; (4) compassion; (5) remembrance. -*m.* (ॠः) 1 N. of Bhairava. 2 A Dânava or demon.

ॠ 9 P. (ॠणाति, ईर्ण) To go, move.

ऌ.

ऌः *m.* N. of Vishṇu. -*ind.* An interjection of (1) remembering; (2) envy; (3) compassion; (4) calling; (5) contempt or censure.

एक *pron. a.* 1 One, single, alone, only. 2 Not accompanied by any one. 3 The same, one and the same, identical; एकार्थे … H. 1. 101. 4 Firm, unchanged. 5 Single of its kind, unique, singular. 6 Chief, supreme, prominent, sole; … Bh. 3. 121. 7 Peerless, matchless. 8 One of two or many; Me. 30, 78. 9 Oft. used like the English indefinite article 'a' or 'an'; … S. 5. 30; एकः -अन्यः, or अपरः the one-the other; एक is used in the plural in the sense of some, its correlative being अन्ये or अपरे (others) see अन्य, अपर also. -COMP. -अक्ष *a.* 1 having only one axle. 2 having one eye. (-क्षः) 1 a crow. 2 N. of Śiva. -अक्षर *a.* monosyllabic. (-रं) 1 a monosyllable. 2 the sacred syllable ओम्. -अग्र *a.* 1 fixed on one object or point only. 2 closely attentive, concentrated, intent; R. 15. 66; … Ms. 1. 1. 3 unperplexed. -अग्र्य -°ग्र. (-ग्र्यं) concentration. -अङ्गः 1 a body-guard. 2 the planet Mercury or Mars. -अनुदिष्टं a funeral ceremony performed for only one ancestor (recently dead). -अन्त *a.* 1 solitary. 2 aside, apart. 3 directed towards one point or object only. 4 excessive, great; Ku. 1. 36. 5 absolute, invariable, perpetual; … Bh. 2. 7; Me. 109. (-न्तः) 1 a lonely or retired place, solitude. 2 exclusive aim or boundary. (-न्तं) an exclusive recourse, a settled rule or principle; … Śi. 2. 83. (-न्तं, -न्तेन, -न्ततः, -न्ते) *ind.* 1 solely, invariably, always, absolutely. 2 exceedingly, quite, wholly; … Bh. 3. 24; … Me. 109. -अन्तर *a.* next but one, separated by one remove; S. 7. 27. -अन्तिक *a.* final, conclusive. -अयन *a.* 1 passable for only one (as a foot-path). 2 closely attentive, intent; see एकाग्र. (-नं) 1 a lonely or retired place. 2 a meeting-place, rendezvous. 3 monotheism. 4 the sole object; … M. 2. 15. -अर्थः 1 the same thing, object, or intention. 2 the same meaning. -अहन् (हः) 1 the period of one day. 2 a sacrifice lasting for one day. -आतपत्र *a.* characterized by only one umbrella (showing universal sovereignty); … R. 2. 47, Śi. 12. 33; V. 3. 19. -आदेशः one substitute for two or more letters (got by either dropping one vowel, or by the blending of both); as the आ in … -आवलिः, -ली *f.* 1 a single string of pearls, beads &c.; … Vikr. 1. 30. … V. 1. 2 (in Rhetoric) a series of statements in which there is a regular transition from a predicate to a subject, or from a subject to a predicate; … K. P. 10. -उदकः (a relative) connected by the offering of funeral libations of water to the

१६

From - Student's Sanskrit-English Dictionary - V. S. APTE

Appendix - W$_6$

ऐडक a. (की f.) Belonging to a sheep. —कः A species of sheep.

ऐड (ल) विकः (ल) N. of Kubera

ऐण a. (णी f.) Of or belonging to an antelope (as skin, wool &c.); Y. 1. 259.

ऐणेय a. (यी f.) Produced from the black doe or from anything connected with her.—यः A black antelope. —यं A kind of coitus (इतिवेध).

ऐतदात्म्यं The state of having this property or peculiarity.

ऐतरेयिन् m. A reader of the Aitareya Brâhmana.

ऐतिहासिक a. (की f.) 1 Traditional. 2 Historical. —कः 1 An historian. 2 One who knows or studies ancient legends.

ऐतिह्यं Traditional instruction, legendary account; ऐतिह्यमनुमानं च शब्दश्चापि चतुष्टयम् RAmt.; किलेत्यैतिह्ये. (ऐतिह्य is regarded as one of the Pramâṇas or proofs by the Paurâṇikas and reckoned along with प्रत्यक्ष, अनुमान &c.; see अनुमान).

ऐदंपर्यं Substance, scope, bearing (lit. state of being इदंपर, i. e. having this meaning, purport or scope): इदं ऐदंपर्यं Mâl. 2. 7.

ऐनस् Sin.

ऐन्दव a. (वी f.) Luna —वः A lunar month.

ऐन्द्र a. (न्द्री f.) Belonging or sacred to Indra; R. 2. 50. —न्द्रः N. of Arjuna and of Vâli. —न्द्री 1 N. of a *Rik* addressed to Indra; इत्यादिका काचिदैंदी समाम्नाता J. N. V. 1 The east, (presided over by Indra); Ki. 9, 18. 3 Misfortune, misery. 4 An epithet of Durgâ. 5 Small cardamoms.

ऐन्द्रजालिक a. (की f.) 1 Deceptive, magical, illusive. 2 Familiar with magic. —कः A juggler; Si. 15. 25.

ऐन्द्रलुप्तिक a. (की f.) Affected with morbid baldness of the head

ऐन्द्रशिरः A species of elephant.

ऐन्द्रिः 1 N. of Jayanta, Arjuna, or Vâli, the monkey chief. 2 A crow; ऐन्द्रिः किल नखैरतस्त्वा विव्यार स्तनौ द्विजः R. 12. 22.

ऐन्द्रिय, -यक a. 1 Belonging to the senses, sensual. 2 Present, perceptible to the senses. —यं The world of the senses.

ऐन्धन a. (नी f.) Consisting of fuel. —नः N. of the sun.

ऐयत्तं Quantity, number.

ऐरावणः Indra's elephant.

ऐरावतः 1 N. of the elephant of Indra. 2 An excellent elephant. 3 One of the chiefs of the Nâgas or serpent-race (inhabiting Pâtâlâ.) 4 The elephant presiding over the east. 5 A kind of rainbow. —ती 1 The female of Indra's elephant. 2 Lightning. 3 N. of the river Râvî in the Panjâba (=इरावती).

ऐरेय Spirituous liquor (prepared from food).

ऐलः 1 N. of Purûravas (son of Ilâ and Budha). 2 The planet Mars.

ऐलवालुकः N. of a perfume.

ऐलविलः 1 N. of Kubera; 18. 2 The planet Mars.

ऐलेयः 1 A nd of pa 2 Mars.

ऐश a. (शी f.) Belonging t R. 2. 75. 2 Supreme regal.

ऐशान a. Belonging to Siva. 1 The north-eastern direction, of Durgâ.

ऐश्वर a. (री f.) 1 Majes Powerful, mighty. 3 Belong Siva; R. 11. 76. 4 Supreme, 5 Divine. —री N. of Durgâ.

ऐश्वर्यं 1 Supremacy, sovereig ऐकैश्वर्यंस्थितोपि M. 1. 1. 2 Might, po away. 3 Dominion. 4 Affl wealth, greatness. 5 The fa faculties of omnipotence, omn sence &c.

ऐषमस्य ind. During this year, in present year.

ऐषमस्यक-मस्य a. Belong g to present year.

ऐहिक a. (की f.) Be ceremonial. —Comp. —पूर्तिक a. ing to इष्टापूर्त (belonging to sacrifi or charitable works).

ऐहलौकिक a. (की f.) Happen in or belonging to this wor temporal, sublunary (opp. पारलौकिक).

ऐहिक a. (की f.) 1 Of this wor or place, temporal, secular, worldl 2 Local. —कं Business (of the world).

ओ.

ओ m. (ओः) N. of Brahmâ. —ind. 1 A vocative particle (oh). 2 An interjection of (1) calling; (2) remembran ; (3) compassion (ah!).

ओकः 1 A house. 2 A refuge, shelter. 3 A bird. 4 A Śûdra.

ओकणः (णिः) A bug; so ओकोदनी.

ओकस् n. 1 A house, residence; as in त्रिदीवौकस् or स्वर्गौकस् a god. 2 An asylum, refuge.

ओख 1 P. (ओखति, ओखित) 1 To be dry. 2 To be able; be sufficient. 3 To adorn or grace. 4 To refuse. 5 To ward off.

ओघः 1 A flood, stream, current; पुलोमेन हि कुञ्यते नदी Ku. 4. 44. 2 An inundation. 3 A heap, quantity, multitude 4 The whole. 5 Continuity. 6 Tradition, traditional instruction. 7 A king of dance.

ओंकारः See under ओम्.

ओज् 4, 10. U. (ओजति, ओजयति, ओजित) To be strong or able.

ओज a. Odd, uneven. —अं =ओजस् q. v.

ओजस् n. 1 Bodily strength, vigour; energy. 2 Virility, the generative faculty. 3 Splendour, light. 4 (In Rhet.) An elaborate form of style, abundance of compounds (considered by Dandin to be the 'soul of prose'); ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् Kâv. 1. 80; said to be of 5 kinds in R. G. 5 Water. 6 Metallic lustre.

ओजसिन, ओजस्य a. Strong, powerful.

ओजस्वत्, ओजस्विन् a. Strong, vigorous, energetic, powerful.

ओड्रः (m. pl.) N. of a people and their country (the modern Orissa); Ms. 10. 44. —ड्रं The *Javâ*-flower.

ओत a. Woven, sewn with threads across. —Comp. प्रोत a. 1 sewn crosswise and length-wise. 2 extending in all directions.

ओदः A cat (f. also); as in स्थूलो (ली) दः.

ओदनः, -नं 1 Food, boiled rice; दध्योदनः, घृतौ°. 2 Grain mashed and cooked with milk

ओम् ind. 1 The sacred syllable, uttered as a holy exclamation at the beginning and end of a reading of the Vedas, or previous to the commencement of a prayer or sacred work. 2 As a particle it implies (a) solemn affirmation and respectful assent (so be it, amen!); (b) assent or acceptance (yes, all right); ओमित्युच्यतामात्यः Mâl. 6; ओमित्युक्त्वातोष शार्ङ्गिण इति Si. 1. 75; द्वित्रियमेत्योमिति हरः S. D. 1. (c) ommand. (d) auspiciousness; (e) removal or warding off. 3 Brahman. —Comp. —कारः 1 the sacred syllable ओम्. 2 the exclamation ओम्.

ओरेपः A hard scratch; Mal. 7.

ओल a. Wet, damp.

ओलंड् 1 P., 10 U. (ओलंडति, ओलंडयति, ओलंडित) To cast or throw upwards, throw up.

From - Student's Sanskrit-English Dictionary - V. S. Apte

Appendix - X

नागरी लिपि में अंकित अँगरेजी शब्दों का उच्चारण

- सब, घर, मकान आदि की तरह बूम, मैन, बोट आदि सभी अकारान्त शब्दों का हलन्त उच्चारण करना चाहिए।
- बलाघात वाला अक्षर मोटे टाइप में छपा है; इसके बाद आने वाला अस्पष्ट 'अँ' बहुधा अलग नहीं किया गया है। शॅफ़ॅल (Shuffle) = शॅफ़्-अॅल।
- निम्नलिखित अपवादों को छोड़ कर सर्वत्र नागरी लिपि का प्रचलित हिन्दी उच्चारण करना चाहिए।

स्वर (स्वतन्त्र और क् आदि व्यंजनों के साथ)

अॅ	[कॅ]	= ago का a; maker का er; broken का e	> अॅगो; मेक्-अॅ; ब्रोकॅन
अॅः	[कॅः]	= earth का ear bird का ir ... word का or; turn का ur ...	> अॅःथ; बॅःड; वॅःड; टॅःन
अॅं	[कॅं]	= but का u; come का o ...	> बॅट; कॅम
ऑ	[कॉ]	= officer, on, not का o ...	> ऑफ़्-इ-सॅ; ऑन; नॉट
ऑः	[कॉः]	= order का or; law का aw ...	> ऑःड्-अॅ; लॉः
ऑइ	[कॉइ]	= oyster, boy का oy ...	> ऑइस्-टॅ; बॉइ
आइ	[काइ]	= idea, line का i ...	> आइडिअॅ; लाइन
आउ	[काउ]	= out, house का ou ...	> आउट; हाउस
ए	[के]	= late का a, day का ay ...	> लेट; डे
एं	[कें]	= egg, men का e ...	> एंग; मेंन
एंअॅ	[कें'अॅ]	= airplane का air; careful का are where का ere ...	> एंअॅप्लेन; के'अॅफ़ुल > वेंअॅ
ऐ	[कै]	= act, man का a ...	> ऐक्ट; मैन
ओ	[को]	= home का o, boat का oa, mould का ou ...	> होम; बोट; मोल्ड

व्यंजन

ट और ड	= अँगरेजी t और d	
थ	= theory, filth का th ...	> थिअॅरि; फ़िल्थ
द	= father, this का th ...	> फ़ादॅ; दिस
ङ्ग	= making, kingdom का ng ...	> मेक्-इङ्ग; किङ्ग्डॅम
व्	= violence, divide का v ...	> वाइअॅलॅन्स; डिवाइड
श्ज	= occasion का si; pleasure का su ...	> अॅकेश्ज़ॅन; प्लेश्ज़्-अॅ

टि० । १. अॅ और अॅं दोनों अर्धविवृत हैं; किन्तु अॅ मध्यस्वर और अॅं पश्चस्वर है। अँगरेजी ए और ओ द्विस्वर हैं। ट और ड मूर्धन्य नहीं हैं, वर्त्स्य हैं। ब दन्त्य संघर्षी, ङ्ग कण्ठ्य अनुनासिक, व् दन्तोष्ठ्य संघर्षी और श्ज तालव्य-वर्त्स्य संघर्षी है।

२. लिप्यन्तरण में प्रयुक्त सभी विशिष्ट चिह्न इन वाक्यों में सन्निविष्ट हैं—

Father does not travel by airplane. On this earth men must learn.
फ़ादॅ डॅज़ नॉट ट्रैवॅल बाइ एंअॅप्लेन। ऑन दिस अॅःथ मेंन मॅस्ट लॅःन।
There was an eminent, outstanding boy. Law and order on all occasions.
देंअॅ वॉज़ अॅन एंम्-इ-नॅन्ट, आउट्स्टैंन्-डिङ्ग बॉइ। लॉः ऐण्ड ऑःड्-अॅ ऑन ऑःल अॅकेश्ज़ॅन्ज़।

उद्धृत : अँग्रेजी—हिन्दी कोश — फादर कामिल बुल्के

Appendix - Y_1

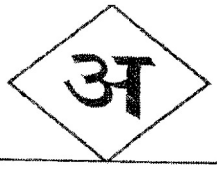

अ—देवनागरी या संस्कृत वर्णमाला का प्रथम वर्ण, ओंकार की प्रथम ध्वनि; first letter, begining sound of *Oṁkāra*. व्यंजन शब्द से पूर्व लगकर निषेध का अर्थ देता है। दे. (नतञ्); negative particle prefixed to words beginning with a consonants (see नञ)

अः *(पुं.)* [*अव्+ड*] विष्णु; Viṣṇu.

अंशः *(पुं.)* [*अंश्+अच्*] टुकड़ा, भाग, हिस्सा; part, portion, share.

अंशकरण *(पुं.)* विभाजन करना act of dividing.

अंशकः *(पुं.)* [*अंश्+ण्वुल्*] वैवाहिक लग्न, पुत्र, सुत; propitious time for marriage, son.

अंशु *(पुं.)* [*अंश्+कु*] किरण, सोम की डण्ठल; ray, shoot or stem of the *soma* plant.

अंशुमत् *(पुं.)* किरणवाला, सूर्य; radiant, Sun.

अंशुमालिन् *(पुं.)* सूर्य; Sun.

अंसल *(वि.)* [*अंस+लच्*] बलवान, हृष्टपुष्ट, मांसल; strong, powerful.

अंहस् *(नपुं.)* [*अम्+असुन् हुक् च*] चिन्ता, कष्ट, पाप; anxiety, sin, distress.

अकटुक *(पुं.)* तीता या तिक्त न हो; not acrid.

अकण्ट *(पुं.)* गलाहीन; having no neck.

अकथ्य *(पुं.)* जो कहने योग्य न हो; unspeakable.

अकर्तव्य *(वि.)* अकार्य, अनुचित कर्म; not to be done, improper act.

अकर्मक *(वि.)* बिना कर्म का *(धातु)*; objectless.

अकल्प *(वि.)* अनियंत्रित, अतुलनीय, दुर्बल; unrestrained, having no comparison, weak.

अकल्य *(वि.)* बीमार, अस्वस्थ; ill, not healthy; अविचार्य; not to be guessed.

अकवि *(वि.)* जो कवि न हो; not a poet.

अकस्मात् *(क्रिवि.)* अचानक, एकाएक; accidentally, unexpectedly, suddently.

अकातर *(वि.)* निडर; undaunted.

अकाम *(वि.)* अनभिलाषी, इच्छारहित, प्रेम से अछूता; one without desire, uneffected by love.

अकामता *(स्त्री.)* काम का अभाव; freedom from desire. –**म्** *(क्रिवि.)* कारण के बिना; causelessly.

अकारणोत्पन्न *(पुं.)* स्वेच्छा से उत्पन्न; porduced spontaneously.

अकार्य *(वि.)* न करने योग्य; improper, not to be done.

अकार्यकारिन् *(वि.)* बुरा काम करनेवाला; an evil-doer.

अकाल *(पुं.)* बुरा समय, खोटे दिन, दुर्भिक्ष; a wrong or bad time, not a high time, famine.

अकाल कुसुमम् *(नपुं.)* बिना समय या मौसम के खिला फूल; a flower bloom before.

अकालज्ञ *(वि.)* समय को न परखने-वाला, समय को न जाननेवाला; not knowing or appreciating time.

अकिंचन *(वि.)* निपट गरीब, जिसके पास कुछ न हो; utterly destitute, poor.

अकिल्बिष *(वि.)* निष्पाप, निर्दोष; sinless.

अकीर्तन *(नपुं.)* अकथन; lack of mention.

अकीर्ति *(स्त्री.)* बदनामी, अपयश; non-fame, disgiace.

अकुञ्चित *(वि.)* सीधा; जो टेढ़ा न हो; not crooked, straight.

अकुटिल *(वि.)* जो टेढ़ा न हो, सीधा, ईमानदार; not crooked, straight, honest.

अकुण्ठ *(वि.)* कुंठित न होने वाला; not blunted;.

अकुण्ठित *(वि.)* तेज, जो कुंठ न हो; sharp, not blunted.

From : Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey

Appendix - Y_2

आस्फोटक *(नपुं.)* चर्म; skin.
आस्फोटनम् *(नपुं.)* ताल ठोकना, प्रहार; noise of clapping hands on thic, stroke.
आस्रवः *(पुं.)* [आ+स्रु+अप्] पीड़ा, कष्ट, बहाव, स्रवण, पकते चावलों पर का झाग, क्लेश; pain, grief, flow, the foam on boiling rice, flowing, distress.
आस्वादः *(पुं.)* [आ+स्वाद्+आ+स्वद्+घञ् 'आस्वादने'] स्वाद लेना, चखना, उपभोग; tasting, taste, enjoying.
आस्वेद *(पुं.)* [आ+स्विद् 'गात्रप्रक्षरणे'] पसीना; sweat.
आहत *(वि.)* [आ+हन्+त] चोट खाया, घायल, मारा गया; struck, beaten, hit, killed.
आहतिः *(स्त्री.)* [आ+हन्] हत्या करना, चोट; to kill, blow.
आहय (अहि-) सांप या अहिसंबन्धी : belonging to a snake.
आहर्तृ *(वि.)* [आ+हृ] करनेवाला, लानेवाला; one who brings forth, an offerer.
आहवनम् *(नपुं.)* [आ+हु+ल्युट 'जुहोति'] याग, आहुति; sacrifice.
आहवनीय *(वि.)* [आ+हु+आनीयर् आहूयते आज्यादिरस्मिन् गार्हपत्यादुद्धृत्य होमार्थं यः संस्क्रियते स यज्ञाग्निविशेषः] यज्ञीय; of or for oblation.
आहार *(पुं.)* [आ+हृ+घञ् 'प्रापणे, स्वीकारे, स्तेये, नाशने च'] लाना, भोजन, अन्न, हितमितमेध्याशन; taking food, fetching, food.
आहार्य *(वि.)* [आ+हृ+ण्यत्] लाया जानेवाला, बाह्य, आहरणीय; to be fetched, to be removed.
आहित *(वि.)* [आ+धा+क्त 'धारणपोषणदानेषु'] रखा हुआ, रखा (धरोहर के रूप में), दिया; pledged, placed, bestowed.
आहितकम् *(न.)* धरोहर; pledge.
आहितविनय *(वि.)* आज्ञा माननेवाला, विनीत; who follow the order, tractable.
आहुतिः *(स्त्री.)* [आ+हु+क्तिन 'दानादनयोः'] किसी देवता को आहुति देना या हवन, हवनीय द्रव्य, आदि; offering, libation.
आहूत *(वि.)* [आ+हे] आमंत्रित, बुलाया गया; called, summoned.
आ+हृ [आहरति, आहृत] पास लाना, लाना, देना, लेना, कहना, बुलाना; to bring, give, bring near, offer, take, accept, use.
आहेय *(वि.)* (=अहौ भवम्) [अहि+ढक्] सांपों से संबंध रखने वाला, सर्पसंबन्धी; belonging to snake.
आह्निक *(वि.)* (अह्ना निर्वृत्तम्) एक दिन का, दिन-क्रिया; daily, performed everyday.
आह्लाद *(पुं.)* [आ+ह्लाद्+घञ् 'सुखे', ह्लादते] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी; delight.
आह्लादन *(वि.)* आनन्द की प्रचुरता, मनोरम; gladdening, delighting.
आह्वयः *(पुं.)* [आ+ह्वे+उ] जो पुकारता है, बुलाता है, नाम, पक्षिमेषादि-योधन; name, fight of animals and birds (as cock-fight).
आह्वा *(स्त्री.)* [आ+ह्वे+अङ्+टाप्] बुलाना, पुकारना, संज्ञा, अभिधान; name.
आह्वानम् *(नपुं.)* बुलावा, न्यौता; invitation, call.
आह्वायितव्य *(वि.)* न्यायाधिकरण द्वारा आहूत या के समक्ष उपस्थित; to be called before a tribunal.

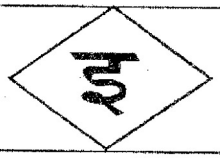

इ संस्कृत व नागरी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण। ['गतौ', एति, इत आपयति ईयते] जाना, बहना, चलना (हवा), आगे बढ़ना, आना, पहुंचना; third letter of *Samskrta* and *Devanāgarī* alphabet; to go, flow, blow (air), advance, come to.
इ- *(पुं.)* [इ+इच्] कामदेव god of love; *(अव्य.)*, क्रोध, पुकार, करुणा, झिड़की, तथा आश्चर्य की

From : Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey

Appendix - Y_3

ईडा *(स्त्री.)* [ईड्+अ+टाप्] स्तुति, प्रशंसा; praise, commendation.
ईदृक्ष *(वि.)* [=ईदृश, ईदृश] इस प्रकार की शक्ल का, ऐसा; of this aspect, such.
ईप्सु *(वि.)* [आप्+सन्+उ, स.] प्राप्त करने का प्रयत्न, पाने की इच्छावाला; desirous to obtain.
ईर् ['गतौ कम्पने च', ईर्ते, ईरयति, ईरित] उठना, हिलना, (सक.) हरकत देना, प्रेरणा करना; rise, to move, arise, (trans.) to set in motion, impel.
ईरित *(वि.)* क्षुब्धित, प्रेरित, प्रेषित, कम्पित; set in motion, sent, shaken.
ईर्मम् *(नपुं.)* [ईर्+मक्] घाव, चोट, व्रण; wound. *(पुं.)* बाहु; arm.
ईर्ष्या *(स्त्री.)* [ईर्ष्य+अप्, ईर्ष्य+घञ्, यलोप, 'ईर्ष्यृ ईर्ष्यायाम्'; also -र्षा] डाह, जलन, द्वेष, अक्षमा; envy, ill will, jealousy.
ईलिका *(स्त्री.)* [also ईला, ईली] छुरी, कृपाणी; dagger.
ईश् ['ऐश्वर्ये', ईष्टे, ईशित] अधिकार में कर लेना, अपना बना लेना; possess, to own, master, rule, govern.
ईशः *(पुं.)* मालिक, रुद्र, स्वामी; master, lord, Rudra.
ईशान *(वि.)* शासन करता हुआ, अपना बनाता हुआ; owning, ruling. **ईशानः** *(पुं.)* शिव; lord Śiva.
ईशानी *(स्त्री.)* दुर्गा; Durgā.
ईशिता, ईशित्वम् [ईशिनो भावः ईशिन्+तल्+टाप्, त्वल वा] सर्वोपरिता, महत्त्व; importance, superiority.
ईष *(पुं.)* [ईष+क] आश्विन मास; month of Āśvina.
ईषणा *(स्त्री.)* तीव्रता, त्वरा; haste, speed.
ईषत्कर *(वि.)* थोड़ा करने वाला, अनायास होने वाला, आसान, सुकर; easy to do.
ईषा *(स्त्री.)* [इष+क+टाप] (रथे पूर्वापरायतं काष्ठम्) गाड़ी की फड़, हल की फड़, हलस; the pole of the carriage, pole of plough.
ईषिका *(स्त्री.)* [ईषा+कन, इत्वम्] हाथी की आंख की पुतली, पेंटर का ब्रश, तीर; elephant's eye-ball, painter's brush, arrow.
ईह् ('चेष्टायम्', ईहते, ईहित) लक्ष्य साधना, प्रयत्न करना, इच्छा करना; aim at, to strive after, desire.
ईहामृग *(पुं.)* रूपक का एक भेद, भेड़िया; a variety of drama, consisting of four acts, a wolf.
ईहावृक *(पुं.)* भेड़िया; wolf.
ईहित *(नपुं.)* (भू.क.कृ.) [ईह्+क्त] इच्छित, चाहा हुआ, खोजा हुआ, मनोरथ, चेष्टित; wished for desire, effort.

□□

उ

उ संस्कृत व नागरी वर्णमाला का पांचवां स्वर वर्ण; The fifth word of *Nāgarī* and *Saṁskṛta* alphabet. *(अ.)* [अत्+उ] शिव का नाम ओम् की तीन अक्षरों [अ+उ+म] में से दूसरा; और, भी, दूसरी ओर, और आगे; and, also, further, on the other hand.
उ *(पुं.)* शिव; Śiva.
उक्त *(वि.)* [वच्+क्त] कहा हुआ, बताया या बोला हुआ; told, said.
उक्ति *(स्त्री.)* कथन, भाषण, अभिव्यक्ति, वाक्य; speech, expression, sentence.
उक्थ्य *(वि.)* [उक्थ-+य-] प्रशंसनीय; deserving praise of verses. **—थ्यः** *(पुं.)* प्रातः और मध्याह्न आहुति; libation at the morning and midday sacrifice.
उक्षणम् *(नपुं.)* छिड़काव; sprinkling.

From : Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey

Appendix - Y_4

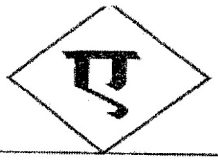

ए

एः संस्कृत व नागरी वर्णमाला का आठवां स्वर वर्ण। *(पुं.)* [इ+विष्] विष्णु; Viṣṇu. [अव्य.] स्मरण, ईर्ष्या, करुणा, आमंत्रण और घृणा तथा निंदा व्यंजक विस्मयादि द्योतक अव्यय; An interjection used for memory jealousy, pity, invitation and hate.

एक *(सर्व., वि.)* एक, अकेला, श्रेष्ठ, अनुपम, अनोखा, साधारण, सर्वोत्तम, समान, कुछ; one, single, alone, –म् *(नपुं.)* एकता, एकक; unity, a unit.

एककपाल *(वि.)* एक कपाल या प्याला-भर; contained in one cup.

एककर *(वि.)* एक हाथ वाला, एक काम करने वाला; doing only one thing.

एककालिक *(वि.)* (or –कालीन) केवल एक बार होने वाला; contemporary.

एकगम्य *(वि.)* परब्रह्म; Supreme Being.

एकचक्रः *(पुं.)* सूर्य का रथ; sun's chariot.

एकचर *(वि.)* एकाकी चरने या घूमने वाला; moving or living alone.

एकचर्या *(वि.)* तत्पर; occupied with that only.

एकच्छत्र *(वि.)* एक छतरी वाला राज्य, एक राजा से शासित; ruled by one king, unlimited sovereignty.

एकजन्मन् *(वि.)* शूद्र, राजा; king, Śūdra.

एकजात *(वि.)* एक माता-पिता से उत्पन्न; born of the same parents.

एकजातीय *(वि.)* एक ही परिवार या कुल का, समान-जातीय; of the same king.

एकज्योतिस् *(पुं.)* शिव; Śiva, the sole light.

एकतम *(वि.)* बहुतों में से एक; one of many. –तर दो में एक; one of two.

एकतस् *(क्रिवि.)* एक ओर; on one side.

एकतालः *(पुं.)* समन्वित लय, संगति, गीतों का यथार्थ समंजन; harmony, unison.

एकतीर्थ *(वि.)* (or –तीर्थिन्) समान-सा, एक ही पावन जल में स्नान करने वाला, समानाश्रमी on who bathed in same sacrec water, of the same āśrama.

एकत्र *(क्रिवि.)* इकट्ठा, एक जगह; at one place

एकदण्डिन् *(पुं.)* संन्यासियों की एक विधा, एकहंस a class of ascetics.

एकदा *(क्रिवि.)* एक समय, एक बार, उसी समय once, at one time, at the same time.

एकदिश् *(वि.)* एक-देशवासी; living in the same region.

एकदृष्टि *(स्त्री.)* स्थिर दृष्टि; fixed look or gaze. *(वि.)* स्थिर दृष्टि वाला; of fixed gaze.

एकदेवत्य *(वि.)* एक देवता को चढ़ाया गया नैवेद्य, एक देवता से संबद्ध; offered *naivedya* to one deity, devoted to one deity.

एकधुर *(वि.)* एक धुरावह, एक धुरीण; fit for one yoke, engaged in one work.

एकनटः *(पुं.)* नाटक का प्रधान पात्र, मुख्य अभिनेता; principal actor in a drama, Sūtradhāra.

एकपत्नी *(स्त्री.)* पतिव्रता; faithful wife.

एकपर्णा *(स्त्री.)* दुर्गा की छोटी बहिन; name of the younger sister of *Durgā*.

एकपाण *(पुं.)* एक दाव; a single wager.

एकपुरुष *(पुं.)* परब्रह्म; Supreme Being.

एकप्रख्य *(वि.)* हूबहू, एक-सा; singularly, a-like.

एकभाज् *(वि.)* नियतप्राप्तिक; sure to receive.

एकमति *(वि.)* समान विचारधारा वाला; having one's mind fixed on one object only.

एकमुख *(वि.)* एक उद्देश्य वाला; having the same aim.

एकरस *(वि.)* केवल एक ही रस अर्थात आनन्द देने वाला नाटक, नाटक; a drama of one sentiment.

एकरिक्थिन् *(वि.)* समान उत्तराधिकारी; co-heir.

From : Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey

Appendix - Y_5

ऐन्द्र *(पुं.)* [इन्द्र+अण्] इन्द्रपुत्र जयन्त, इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र; Jayanta, son of Indra.

ऐन्द्रजालिक *(वि.)* [इन्द्रजाल+ठक्] धोखे में डालने वाला, जादू-टोना विषयक; magical, deceptive.

ऐन्द्रिः *(पुं.)* [इन्द्रस्यापत्यम्—इन्द्र+इञ्] इन्द्रपुत्र, काक; son of Indra, crow.

ऐन्द्रिय *(वि.)* [इन्द्रिय+अण्, वुञ्वा] इन्द्रियों से संबद्ध, इन्द्रियों का विषय; belonging to the senses , perceptible to the senses.

ऐरावत *(पुं.)* (इरावतः समुद्रादुत्पन्नः, or इरावत्या अपत्यम्), इन्द्र का हाथी, नारंगी का पेड़, नागराज; Indra's elephant.

ऐर्म्य *(नपुं.)* (ईर्म-) घाव के लिये हितकर पलस्तर; plaster good for healing wounds.

ऐलविलः *(पुं.)* [इलविला+अण्] कुबेर, मंगलग्रह; Kubera.

ऐलेय *(पुं.)* [इला+ठक्] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, एक इत्र, मंगल; kind of perfume, Mars.

ऐश *(पुं.)* **ऐशी** *(स्त्री.)* [ईश+अण्] शिव से संबद्ध; belonging to Siva.

ऐश्वर्य *(नपुं.)* [ईश्वर+अण्] सार्वभौम प्रभुता, आधिपत्य, शक्ति, समृद्धि; supremacy, power, sovereignty, prosperity.

ऐष्टिक *(वि.)* [इष्टि+ठक्] इष्टि अथवा यज्ञ-संबन्धी (दान आदि), अन्तर्वेदि; gifts related to sacrifice.

ऐहलौकिक *(वि.)*, **ऐहलौकिकी** *(स्त्री.)* [इहलोक+ठञ्] संसार से संबंध रखने वाला, इस लोक में घटित होने वाला; relating to the world; happening in this world.

ऐहिक *(वि.)* (इह-) यहाँ से सम्बन्धित, इस संसार का, लौकिक, ईहा (=चेष्टा); worldly, of this world.

❑❑

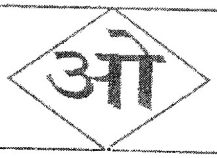

ओ संस्कृत व नागरी वर्ण माला का ग्यारहवां स्वर वर्ण। उच्चारण स्थान कण्ठ है। **ओः** *(पुं.)* [उ+विच्] ब्रह्मा; Brahmā. सम्बोधनात्मक अव्यय (ओः) Interjection, O! अव्यय; बुलाना, स्मरण करना तथा करुणा बोधक अव्यय; call, to learn, Intejection of pity.

ओकणः [ओ+कण्+अच्, इव वा] खटमल; bug.

ओकस् *(नपुं.)* [उच्+ऊसुन् 'समवाये'] रहने का स्थान, घर; dwelling, home.

ओकिवस् *(वि.)* संयुक्त, समवेत; united.

ओक्य *(नपुं.)* आनन्द, आराम-स्थल, शरण; pleasure, resting place.

ओजस् *(नपुं.)* [उब्ज+असुन, बलोपः, गुणश्च] वीर्य (बलदायक सप्तम धातु), शारीरिक सामर्थ्य, तेज, शक्ति, बल, दीप्ति, प्रकाश, प्रौढप्रबन्धत्व; virility, fiery energy or vital power, vigour.

ओजस्विन्, ओजस्वत् *(वि.)* [ओजस्+मतुप+विनि वा] तेजस्वी, शान, उत्साही, शक्तिशाली; energetic, bright, vigorous, shining, powerful.

ओजाय (-ते -यित) शक्ति दिखाना; boast of one's own strength.

ओजिष्ठ *(वि.)* बलशाली, अत्यन्त बली; most strong.

ओज्मन् *(नपुं.)* वेग, शक्ति; speed, vigour.

ओणी (dual) धरती-आकाश; heaven and earth.

ओतप्रोत *(वि.)* [आ+वे+क्त] ताने-बाने की तरह मिश्रित; mixed like the woof.

ओतुः *(पुं.)* [अव+तुन्, ऊठ, गुणः] बिलाव, ताना, बिल्ली; the woof or cross threads of a web, cat.

From : Concise Sanskrit-Hindi-English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey

Appendix -Z_1

कुँड़ुख (उराँव) भाषा लिखने के वर्ण

कुँड़ुख (उराँव) भाषा लिखने का अब तक अपना कोई वर्ण (अक्षर) नहीं है। अभी तक इस भाषा का लिखना हिन्दी (देवनागरी) या अंग्रेजी अक्षरों में ही हुआ है। परन्तु इन दोनों अक्षरों में से कोई एक भी, भाषा के शब्दों को ठीक ठीक उच्चारण करने के लिये न अपने में यथेष्ट हैं और न इनके सब ही अक्षर इस भाषा के लिये आवश्यक ही हैं।

कुँड़ुख (उराँव) भाषा लिखने में इन दो भाषाओं के अक्षरों में से जो भी अक्षर व्यवहार किये जांय; आवश्यकता अनुसार उसमें कितने नये चिन्हों को प्रयोग करना पड़ेगा, अथवा शुद्ध उच्चारण की पूर्ती के लिये नये वर्णों को बनाना पड़ेगा।

इस पुस्तक में कुँड़ुख (उराँव) भाषा हिन्दी (देवनागरी) वर्णों में लिखी जा रही है। भाषा की लिखावट में जो जो वर्ण और चिन्ह प्रयोग किये जाते हैं, वे नीचे दिये जा रहे हैं :—

स्वर वर्ण

स्वर	मात्रा	उराँव में उच्चारण के लिये उदाहरण	हिन्दी या अंग्रेजी में उच्चारण के लिये उदाहरण
अ		अतखा, अल्ला	अपना, अच्छा
अं	ं	अंत, कंत	
आ	ा	आलस, आलो	आदमी, आम
इ	ि	इदना, इबसा, पिसना	इसका, किसका
ई	ी	ईरका, चीरका	ईमान, ईंट
उ	ु	उला, पुना, कुड़ना	उधर, उस, सुन
ऊ	ू	पून, ऊखा, ऊजना	ऊन, ऊपर, कूड़ा
ए		एकदन, एमना, एम्बा, पेसना	एकत्र, एकसठ, देव
ए*	ॅ	एड़ा, एदना, पेन, पेसना, एकदन	देना, एकसा, late, rate, main
ऐ	ै	दै, मैं, कैला	जैसे, कैसा, पैठना, kite, mine, right

साभार : कथ अरा बिल्लिन ईद'उ - डॉ० ख्रिस्त मिखाईल तिग्गा

Appendix - Z_2

(२)

स्वर	मात्रा	उरांव में उच्चारण के लिये उदाहरण	हिन्दी या अंग्रेजी में उच्चारण के लिये उदाहरण
अए, अय		नम्हए, पएहा=पयहा, मएना,=मयना, कएरहा	है, कैद, कैदखाना
ओ	ो	ओपना, ओसगा, कोड़ा, टोकना	ओढ़ना, ओखली, दोगला
ओ*	ो	ओड़ा, ओलना, कोड़ा, तोकना	ओस, ओला, ढोर, दोष, दोनों, चोर
औ	ौ	औड़का, नौजही, कौवार	और, औसत, दौड़ना, दौलत
अं	ं	कंक, डंडी, इसुंग, मंची	जंगल, चंचल, पंखा
अँ	ँ	कांड़, केँसा, कोँ-ड़ा	चांद, चाँदी
अः	:	नेःदन, बःना	निःशेष, निःशंक

* जब तक ए, ै, ओ, ो, के टाइप नहीं बनते हैं तब तक ये "ए, े, ओ, ो-- के रूप में आपे जा सकते हैं । जैसे, एड़ा=ए-ड़ा, नेला=ने-ला पेसना=पे-सना, ओसा=ओ-सा, मोड़ा=मो-ड़ा, खोखा=खो-खा ।

व्यञ्जन वर्ण

जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि हिन्दी के सभी वर्ण कुँड़ुख (उरांव) भाषा के लिये आवश्यक नहीं है यहाँ पहले हिन्दी के वे ही व्यञ्जन वर्ण दिये जा रहे हैं जो शुद्ध कुँड़ुख भाषा के लिये आवश्यक हैं ।

जैसा हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में दूसरी तीसरी भाषाओं के शब्द मिल गये हैं । वैसाही उरांव भाषा में भी हिन्दी, आरबी, फारसी या अंग्रेजी इत्यादि के शब्द मिल गये हैं । इनके मिलने से जिन वर्णों की आवश्यकता हुई वे भी दिखाये जा रहे हैं ।

शुद्ध कुंड़ुख या उरांव भाषा के लिये आवश्यक व्यंजन वर्ण

कण्ठ्य वर्ण		क	ख	ग	घ	ङ*
तालव्य	,,	च	छ	ज	झ	ञ*
मूर्द्धन्य	,,	ट	ठ	ड	ड़	ढ ढ़ ण*

आधार : कत्थ अरा कत्थ बिल्लिन ईद'उ – डॉ० खिस्त मिखाईल तिग्गा

Appendix - Z_3

(३)

दन्त्य	,,	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	,,	प	फ	ब	भ	म
अर्द्ध स्वर	,,	य	र	ल	व	
सिसकारी	,,	स				
बल से उच्चारण होनेवाला	,,	ह				

* ङ, ञ और ण की आवश्यकताएं अनुनासिक वर्ण "अं = ं" से ही पूर्ण हो जाती हैं। इसलिये लेखक ङ, ञ, और ण की जगहों में अनुनासिक "अं = ं" ही को व्यवहार कर सकते हैं। जैसे कङ्क=कंक ; बेञ्जा=बेंजा ; एण्ड़= एँड़ ; ओण्टा=ओंटा ; इत्यादि।

हिन्दी, अंग्रेजी, अरबी इत्यादि शब्दों के उरांव भाषा में व्यवहार होने के कारण नीचे लिखे वर्ण भी प्रयोग किये जाते हैं :—

श ष क्ष ज्ञ ज़

इन वर्णों से बने नीचे लिखे कुछ शब्द दिये जाते हैं जो साधारणतः कुँड़ुख में व्यवहार किये जाते हैं :—

शुरू (ओ-र), शगुन (सगड़ी), शब्द (सड़ा), कष्ट (मेन्हल), पुष्टई (जिया चिऊ), क्षमा (अम्चना), क्षण (खन्न मिटकी), ज्ञान (लूर, अकिल), ज़रिया (लेके), ज़बरजस्ती (बड़यम), ज़्यादा (बगे)।

स्वर और व्यंजन का मेल

जिस प्रकार हिन्दी में स्वर और व्यञ्जन का मेल होता है उसी प्रकार कुँड़ुख (उरांव) में भी स्वर और व्यञ्जन का मेल होता है। जैसे :—

क, कं, कॅ, कि की, कु, कू, के, कें, कै, (कय, कए), को, कों, कौ, कं कँ कः

म, मं, मॅ, मा, मि, मी, मु, मू, मे, में, मै, (मय, मए), मो, मों, मौ, मं मँ मः

संयुक्त व्यंजन

जब दो व्यञ्जन एक साथ उच्चारण होते हैं तब वे दोनों संयुक्त होते हैं। संयुक्त करने का नियम हिन्दी और कुँड़ुख में एक ही हैं। जैसे :—

क् + क = क्क, मक्का	त् + त = त्त, पत्ता
क् + ख = क्ख, मेक्खा	त् + थ = त्थ, कत्था

आभार : कत्थ अरा कत्थ बिल्लिन ईद'ड – डॉ0 खिस्त मिखाईल तिग्गा

Appendix - Z_4

(४)

ङ् + ग = ग्ग, बग्गो
च् + च = च्च, घच्चा
च् + छ = च्छ, बिच्छा
ट् + ट = ट्ट, सट्टी
ट् + ठ = ट्ठ, मट्ठा
ड् + ड = ड्ड, पुड्डा
त् + त = त्त, तैत्या
ल् + ल = ल्ल, पल्ल

द् + द = द्द, पद्दा
द् + ध = द्ध, मुद्ध
न् + न = न्न, खन्न
प् + प = प्प, खप्पा
प् + फ = प्फ, भप्फे
ब + ब = ब्ब, नेब्बा
म् + म = म्म, तम्मया
र् + र = र्र, मुर्रा लगो
स् + स = स्सा, तिस्सा

सूचना—जब दो व्यञ्जन वर्ण संयुक्त होकर आते हैं तब बोलने या पढ़ने में संयुक्त वर्णों के आगे के वर्ण में जोर दिया जाता है । पल्ल, तैत्या, पुड्डा, तिस्सा और पैंत्या, में क्रमशः प, तै, पु, ति और पैं में जोर दिया जायगा।

पढ़ने का अभ्यास

१ अभ्यास

पल्ल, मल्ल, खन्न, ए-ख्ख, ए-ड्ड, नाद्द, एजना, एमना, एम्बस, एंदरा, एसना, एस्सना, एटना, एट्टना, ए-रना, एर्रना, एक्का, एक्का, ए-ख्खा, उल्ला, कस्सा, कस्सआ, मंस, मस्सा, मंया, मैंय्या, निम्हए, नम्हए, मेक्खो, मे-ख्खा, मेद्दो।

२ अभ्यास

अम्म, अक्का, बलका, अदा, आदआ, अड्डा, अड्डआ, बआ, बई, बै, ऐया, तैय्या, अला, आबदा, आनना, अनआ, मनआ, बरा, बरई, चाला, चलआ, चिची, चिई, ईरू, ईदऊ, बालू, बल्ल, बऊ, मैनो, मनो, मनओ।

३ अभ्यास

पुना, पून, कूम, कुम्मा, तुस्सा, मे-ख्खना, मे-ख्ख, में-दना, में-द्दना, कुला, कूल, पूरा, ऐरआ, बतःना, तैना, तैंतःना, केबतःना, चिःना, चैंदना, कएरहा, तंगना, कुंडो, कुंदो, कुड्डओ, ऐंठःना, ऐकःना, अयलःना = अएलःना।

आभार : कत्थ अरा कत्थ बिल्लिन ईद'उ – डॉ0 खिस्त मिखाईल तिग्गा

Appendix - AB_1

में मिल जाने पर भी बना रहता है : जैसे—बआ (बोलो), बओ (बोलेगी); बअना (बोलना); चलरआ (चलो) ; चलख़ओ (उघारेगी) आदि शब्दों में 'अ' 'आ' 'ओ' का उच्चारण पूर्ण रूप से होता है। व्यञ्जन वर्ण के उच्चारण के सम्बन्ध में कठिनाई और समस्याएँ नहीं हैं। कुड़ुख़-कत्था में किसी-किसी हिन्दी अक्षर की जरूरत नहीं के बराबर है। वे ऐसे अक्षर हैं जो कि हिन्दी में भी कम ही व्यवहार में आते हैं।

स्वर वर्ण और मात्राओं का प्रयोग

(हहस तोड़ दरा सलहा गहि बेवहार)

अ् — 'अ' से कम उच्चारण जहाँ हो, 'अ्' का व्यवहार होता है, जैसे— 'रअना' क्रिया से प्रसारित शब्दों में 'रअ्ई' 'रअ्ऊ' फिर 'बअना' क्रिया से बने शब्दों में, 'बअ्ई', 'बअ्ऊ' आदि।

अ — हिन्दी भाषा में 'अ' का प्रयोग जैसे है, वैसे ही कुड़ुख़-कत्था में भी है। इसका प्रयोग सरल है, जैसे, अ़सन (वहाँ), अ़सता (वहाँ का), रअ़दस (रहता है), बअ़दस (बोलता है)।

आ — 'आ' का उच्चारण सरल है, जैसे आ़लस (आदमी), आ़स, आ़द (स्त्री०) - वह। बर्रआ़लगदस — (वह) आ रहा है। बुझुरआ़लगदस (वह) समझ रहा है। होआ़—लेओ। चाँखआ़—बोओ।

ा — 'आ' की मात्रा 'ा' का व्यवहार ठीक वैसे ही है, जैसे कि हिन्दी में। जैसे — माख़ा (रात); लाता (छेद), मोंख़ा (खाओ); मूख़ा (मेढ़क)।

इ— 'इ' से जहाँ कम उच्चारण हो वहाँ 'इ्' का व्यवहार होता है, जैसे, 'चिइना' क्रिया से बने शब्द में, 'चिइ्ऊ' फिर 'बिइना' क्रिया से प्रसारित शब्द में, 'बिइ्ऊ' फिर 'मइ्लना' 'मइ्लकर', 'तइ्लना', 'अइ्रबर', 'पइ्रबर', 'लइ्का', 'लइ्त' आदि।

2

साभार : कुँड़ुख़-कत्थ बिल्ली - पी० सी० बेक

Appendix -AB_2

ि— इसकी मात्रा का प्रयोग भी ऐसे ही हो सकता है ; जैसे— अरिख़का, मड़िख़का आदि ।

इ— 'इ' का व्यवहार सरल है, जैसे, इसन (यहाँ), इसता (यहाँ का), आदि ।

ि— मात्रा का प्रयोग भी सरल है, जैसे सिकटा (सियार), किस्स (सूअर), किसला (बसिला) ।

ई — 'ई' का उच्चारण शब्द के शुरू में सरल है, जैसे ईरूस (देखने वाला), ईरु (इतना ही अर्थात् बस) । शब्द के बीच या अन्त में रहने से इसके उच्चारण के जोर में कमी नहीं होती है, पर उच्चारण के दूसरे या तीसरे झटके (accent), जैसी भी स्थिति हो, ई_ ही से शुरू होते हैं, भले ही सिर्फ एक ही अक्षर अर्थात् 'ई' केवल क्यों न हो, फिर भी प्रत्यक्ष रूप से दिखाने के लिये कि झटके (accent) 'ई' से ही शुरू होते हैं तथा उच्चारण में कमी नहीं आती है, उसके पहले (–) दे दिया जा सकता है, जिससे कि लिखावट उच्चारण के अनुकूल हो, जैसे, बर–ई (वह) आती है । इस शब्द में दो झटके हैं, 'बर' पहला और 'ई' में दूसरा । ऐसे ही ईद–ई_(दिखाती है) ईरत–ई (दिखवाती है अर्थात् देखने को आग्रह करती है) आदि ।

ी— 'ई' की मात्रा का व्यवहार सरल है, जैसे—मासी (उरद), रासी (रस), खीरी (कहानी) ।

उ॒— 'उ' से जहाँ कम उच्चारण हो, 'उ॒' या उसकी मात्रा का व्यवहार होता है । जैसे— चुउ॒ ; चुउ॒ई, हुउ॒ई आदि ।

उ, ु— 'उ' तथा उसकी मात्रा का व्यवहार सरल है । जैसे—उइय्या (रखो), उल्ला (दिन); कुल्ला (छाता), खुटा (खूँटा) ।

ऊ, ू— 'ऊ' तथा उसकी मात्रा का व्यवहार सरल है । जैसे — ऊखा

आभार : कुँड़ुख—कत्थ बिल्ली — पी० सी० बेक

Appendix - AB_3

(अंधेरा) मूख़ा (मेढ़क), ऊ॒रना (फूँकना), चू॒तना (लेटना याने सोना)।

ऋ, ॄ — ऋ, ॄ — इन वर्णों का कुड़ुख़-कत्था में कोई खास व्यवहार नहीं है, पर हिन्दी में व्यवहार होने के कारण से कुड़ुख़ में भी व्यवहार हो सकता है।

ए, — 'ए' से जहाँ कम उच्चारण हो 'ए्' या उसकी मात्रा ' े ' का व्यवहार होता है, जैसे 'खेएना' क्रिया से बने शब्दों में 'खेए्ई', 'खेए्ऊ', फिर 'नेएना' क्रिया से बने शब्दों में 'नेए्ई', 'नेए्ऊ', ऐसे ही 'हेएना' क्रिया से परिवर्तित शब्दों में, जैसे 'हेए्ई', 'हेए्ऊ' आदि।

ए, े — 'ए' और उसकी मात्रा का प्रयोग ठीक वैसे ही है, जैसे कि हिन्दी में। जैसे, ए॒कसन (कहाँ), ए॒ड़पा (घर), ए॒न्देर (क्या, जो विशेषण है), ए॒न्दरा (क्या, जो सर्वनाम है), पे॒सना (उठाना, याने छोटी तथा हल्की वस्तु को उठाने के अर्थ में), से॒ब्बा (सहज)।

ए॑, ॅ — कुड़ुख़-कत्था में 'ए' का उच्चारण लम्बा भी होता है, अतः लम्बे या जो॑रदार उच्चारण को दिखाने के लिये उसके ऊपर (ॅ) दिया जाता है, जिससे कि शुद्ध उच्चारण हो सके। जैसे — ए॒॑ड़ा (बकरी), ए॒॑रा (दिखो); पे॒॑षना (हुक्म देना); के॑षना (सूप से फटकना); के॒॑षा (फटको; दूसरे अर्थ में है एक प्रकार का कन्दमूल जो दलदल स्थान में पाया जाता है); खेए॒॑ (मरो)।

ओ्, ो् — 'ओ' या उसकी मात्रा से जहाँ कम उच्चारण हो 'ओ्' या उसकी मात्रा का व्यवहार होता है, जैसे — चोओ्ना, चोओ्ई, चोओ्ऊ, फिर होओ्ना, होओ्ई, होओ्ऊ, आदि।

ओ, ो — 'ओ' तथा उसकी मात्रा का प्रयोग कुड़ुख़ में हिन्दी ही के समान सरल

4

आभार : कुँड़ुख़—कत्थ बिल्ली — पी० सी० बेक

है, जैसे—ओ̲सगा (चूहा), चो̲ट्टो (चूहिया), को̲सटा (आकार में गिलहरी जैसे एक पहाड़ी जन्तु विशेष), झो̲पा (गुच्छा)।

ओ̲, े̲—'ओ' तथा उसकी मात्रा का उच्चारण भी 'ए' और उसकी मात्रा जैसे ही खींच कर या जोर दे कर किया जाता है जिसके ऊपर (-) दिया जाता है जिससे कि लिखावट, उच्चारण के अनुकूल हो। जैसे—रओ̲ (रहेगी); बओ̲ (बोलेगी); ओ̲गना (तैरना); को̲ड़ना (मारना); मो̲खना (खाना); ओ̲लना (जलना), ओ̲षा (खुखड़ी), पो̲षना (पालना)।

अं, अँ अः—इनका व्यवहार वैसे ही है जैसे कि हिन्दी में। जैसे—चंअंना (गन्ध देना), चंदो (चाँद), बाँस (बाँस), इदः, अदः (आश्चर्य व्यक्त करने के शब्द)।

नोट :—(१) कुड़ुख़ विद्वानों की पहुँच है, कि "ए, ओ" के लम्बे उच्चारण (जिन्हें हम कुड़ुख़ नीति के अनुसार दिगहा ऍ ओं कहते हैं) के बाद अगर 'स' श्रेणी के वर्ण का आना है तो दन्त्य 'स' या तालव्य 'श' का नहीं पर उच्चारण की दृष्टि से मूर्धन्य 'ष' का आना आधिकारिक हो जाता है, जैसे—के̲षा, के̲षना, पे̲षा, पे̲षना, ओ̲षा, पो̲षा, पो̲षना आदि।

"आ, ा, ई, ी, ऊ, ू" के बाद भी 'ष' विकल्प से आता है, जैसे—बीषना, बीषा, काँष-बकिला, ओंद-झाँष चेप, पूष-चन्दो, ऊषा आदि।

(२) इदा = (अमुक जन, प्राणी या चीज) यहाँ है। अदा = (अमुक जन, प्राणी या चीज) वहाँ है। इदा-अदा शब्दों ही से इदः-अदः के प्रयोग की उत्पत्ति हुई है।

कुड़ुख़ में व्यवहृत स्वर वर्ण और मात्राओं का समूह :—

आभार : कुँड़ुख़—कत्थ बिल्ली — पी० सी० बेक

Appendix -BC_1

CHAPTER 2

PHONOLOGY

2.1. Phonemic Inventory :

The phonemic inventory consists of 36 segmental and juncture phonemes. The segmentals are further classified into vowels and consonants. The vowels which could be either of short or long duration are treated as single units, i.e., the vowel quantity is not abstracted as separate phoneme.

(i) Vowels :

		Front		Back	
High	...	i	i:	u	u:
Mid	...	e	e:	o	o:
Low	...	a	a:		

(ii) Consonants :

	Bilabial	Dental	Alveolar	Retroflex	Palatal	Velar	Uvular	Glottal
Stops Vl.	p	t		ṭ	c	k	q	
Vd.	b	d		ḍ	j	g		
Nasals	m	n			ñ	ṅ		
Fricatives		d̠	s				ɣ	h
Trill			r					
Lateral			l					
Flap				ṛ				
Semi-vowels	w				y			

(iii) Junctures :

Terminal	—	≠
Non-terminal	—	+

The intonational contours have not been worked out.

From : MALTO, An ethnosemantic Study - B.P. Mahapatra

Appendix - BC_2

2.2. Phonetic Features of the Vowels:

In the phonetic description of the vowels, it may be noted that three degree of height of the tongue are recognised, i.e.,

Close	—	i, u
Half-close	—	e, o
Open	—	a

As regards, the position of the tongue in the production of the vowels, two places are recognised, i.e.,

Front	—	i, e
Back	—	u, o, a

As regards the position of the lips three postures are recognised, i.e.,

Spreading	—	i, e
Neutral	—	a
Rounding	—	u, o

As regards the durational feature of the vowels three degrees are recognised,

Short	—	i, e, a, o, u
Medium	—	i·, e·, a·, o·, u·
Long	—	i:, e:, a:, o:, u:

Two other features, voicing and raised position of the velum are inherent in the production of all vowels.

2.3. Phonological Interpretation of the Vowels :

Taking all these phonetic features into consideration, it may be shown that the vowels are located simultaneously on two axes: one horizontal from front to the back of the mouth, and the other vertical, from the floor of the mouth to its roof. The two horizontal points are front and back. The three vertical points are close, half-close and open. The posture of the lips which provides the third dimension is described in three

Appendix - BC_3

categories, spread, neutral and rounded. The fourth significant dimension for the vowels is durational : short, medium and long.

Phonologically, it is a five-vowel system consisting of two sub-systems, short vowels and the corresponding long vowels. The contrast between these two sub-systems is registered only in the initial syllable of poly-syllabic words. In all other positions, barring the compound words and some poly-syllabic derivative suffixes, the opposition between short and long is lost. The vowels are medium long in the final position and in the second syllable of a three-syllabic word. This feature is predictable from the given environments and is therefore treated as allophone of the corresponding short vowel.

Corresponding to the height of tongue or the degrees of approximation between the tongue and the roof of the mouth, three positions are phonetically described as close, half-close and open and these may be phonologically described as high, mid and low, respectively.

The only other dimension which is relevant for the phonological description of the vowels is the position of the tongue phonetically described as front and back. The redundant features are,

(i) all back vowels except the low vowels are rounded,
(ii) all front vowels are unrounded, and
(iii) with the low vowels, the posture of the lips, i.e., the neutral position and the part of the tongue which is raised, i.e., the back are redundant.

Thus, the vowel system identifies,

(i) two horizontal points, front and back,
(ii) three vertical points, high, mid and low, and
(iii) two degrees of quantity, short and long.

2.4. Phonetic Description of the Vowels :

/i/ — It is a front close vowel. The lips are generally spread. The position of the soft palate is raised and vocal cords are made to vibrate. The vowel is short in the initial syllable of a poly-syllabic word. It occurs in

Appendix -CD_1

कोई गायक भैरवी ठाठ की सरगम गा-बजा रहा है तो यह स रे ग म प ध नि पकड़ सरगम कहलाएगी।

आवर्तन: जब गायक ताल में पूर्ण आवर्त प्रयुक्त करता है तो इसे आवर्तन कहते हैं।

गायन के कुछ प्रकार

ठुमरी: ठुमरी की जन्मभूमि लखनऊ है। नवाब वाजिद अली शाह स्वयं श्रृंगार रस के अच्छे नर्तक, गायक और वादक थे। उनके समय में ठुमरी की लोकप्रियता पराकाष्ठा पर थी। जिस प्रकार शास्त्रीय गायनशैली में रागों की शुद्धता पर बहुत ज्यादा जोर दिया जाता है, वैसा ठुमरी में नहीं दिया जाता। इसमें श्रृंगारिक भावों पर ज्यादा जोर दिया जाता है और गायक विलंबित गति से गायन करता है। ठुमरी में एक भाग अंतरा का होता है और दूसरा स्थायी का।

ध्रुपद: ध्रुपद गायन का जन्म आज से 700-800 वर्ष पूर्व हुआ था। इसमें स्वरों की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गायक इसे चार ताल में गाते-बजाते हैं। इसके चार भाग होते हैं-स्थायी, अंतरा, आभोग और संचारी। ध्रुपद गायन, श्रृंगार, वीर व शांत रस में गाया जाता है।

गीत: पद्यात्मक रचना को सरगम की किसी धुन में बांधकर गाना-बजाना गीत कहलाता है। इसका एक भाग अंतरा होता है और दूसरा स्थायी। इसे अनेक तालों में गाया या बजाया जा सकता है।

ख्याल: गायक विलंबित ताल में आलाप लेकर गाता है। इसके गायन में एक भाग स्थायी होता है और दूसरा भाग अंतरा। गायक इसे दो प्रकार से गाते हैं।

दो तालों में गाया जानेवाला ख्याल छोटा कहलाता है। इसे गायक छोटी तानों में गाता है। दूसरे प्रकार का गायन बड़ा ख्याल कहलाता है। गायक इसे एक ताल में गाता है। इसकी तानें शुरू में छोटी होती हैं, जिसे गायक विलंबित गति से बढ़ाकर तेज करता है।

भजन: धार्मिक गीतों और सूक्तियों का गायन भजन कहलाता है। रहीम और कबीर के दोहे व उपदेशात्मक गीत भी भजनों के अंतर्गत आते हैं। भजन आमतौर पर विलंबित लय में गाए जाते हैं और कभी-कभी गायक छोटी-छोटी तानें भी लेता है, इसके आलाप भी गंभीर और छोटे होते हैं।

भजन स्थायी, अंतरा, आभोग और संचारी भागों में गाया जा सकता है, किंतु आमतौर पर भजन स्थायी व अंतरा दो भागों में गाया जाता है।

टप्पा: टप्पे की पंजाबी धुनें काफी लोकप्रिय हैं। टप्पा के गायक इसे स्थायी और अंतरा दो भागों में गाते हैं। गायक बीच-बीच में छोटी तानें भी लेता है।

गजल: उर्दू में पद्यात्मक रचना को गजल कहा जाता है। मुगलकाल में गजल लेखन और गायन चरमोत्कर्ष पर था। आज भी गजल गायन की लोकप्रियता बनी हुई है। हारमोनियम पर गाते समय गजल गायक अंतरे में ताल नहीं बजाता, जबकि दूसरे भाग स्थायी में धुन बजाता है। गायक आमतौर पर कहरवा, दादरा व रूपक तालों में गजल गाते हैं।

स्वर लिपि

आपने संगीत वादकों के सामने रखी हुई स्वर लिपि अवश्य देखी होगी। उसमें विभिन्न स्वरों को गाने-बजाने के लिए विशेष चिह्न अंकित किए जाते हैं। उन्हीं चिह्नों को देकर वादक वाद्ययंत्रों से अपेक्षित

साभार : कम्प्लीट गिटार गाईड - संगीताचार्य मनोरंजन भारती

Appendix - CD_2

सरगम निकालने में सक्षम होते हैं। यह स्वर–लिपि वक्त जरूरत के लिए वादक अपने सामने रखते हैं, अन्यथा वादकों को स्वर लिपि में अंकित समस्त चिह्न कंठस्थ होते हैं।

स्वरों के इन चिह्नों को आप भी कंठस्थ कर लें, ताकि अपेक्षित सरगम निकलते समय आपको कोई कठिनाई न हो। प्रशिक्षु को सरगम का अभ्यास करने के लिए इन चिह्नों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

मध्य सप्तक के शुद्ध स्वर: मध्य सप्तक में शुद्ध स्वर बजाए जाते हैं, जो चिह्न रहित होते हैं। ये स्वर न हलके होते हैं और न तीखे। यथा, स रे ग म प ध नी।

मंद्र सप्तक के स्वर: मध्य सप्तक की तुलना में मंद्र सप्तक के स्वर कुछ हलके होते हैं। जिन स्वरों में नीचे बिंदी लगी हो, उसे मंद्र सप्तक का स्वर समझें। यथा, स़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नी़।

तार सप्तक के स्वर: तार सप्तक के स्वर मध्य व मंद्र सप्तक की तुलना में अधिक तीव्र होते हैं। इन स्वरों के ऊपर बिंदी होती है। यथा, सं रें गं मं पं धं नीं।

कोमल स्वर: मध्य, मंद्र व तार सप्तक में कुछ स्वर कोमल होते हैं। ऐसे स्वरों के नीचे आड़ी रेखा का चिह्न होता है। यथा, मध्य सप्तक में स रे ग म प ध नी, मंद्र सप्तक में स रे ग म प ध नी और तार सप्तक में सं रें गं म पं धं नीं।

तीव्र स्वर: सरगम में एकमात्र म ऐसा स्वर है, जिसका राग विशेष में कभी–कभी तीव्र उपयोग भी होता है। वैसे म का आमतौर पर शुद्ध स्वर में ही उपयोग होता है। जहां पर इसका तीव्र रूप में उपयोग होगा, वहां पर स्वर–लिपि में म के ऊपर खड़ी रेखा का चिह्न म होता है।

एक मात्रा के स्वर: स्वर लिपि सरगम के कुछ स्वरों के नीचे आड़े कोष्ठक होते हैं, इसका अर्थ है ऐसे स्वरों को एक ही मात्रा में गाया और बजाया जाना चाहिए। यथा,

गमपध पधनी धनी पध

मीड स्वर: गायक जब एक स्वर को विराम न देकर लगातार दूसरे–तीसरे स्वर तक गाता–बजाता चला जाए तो इसे मीड स्वर कहते हैं। स्वर लिपि में ऐसे स्वरों के ऊपर कोष्ठक का चिह्न होता है। यथा:

सरेग गमप धनी

पहले स्वर को और अंत में पुन: उसी स्वर को बजाएं। उदाहरण के तौर पर यदि कोष्ठक में (म) दिया गया हो तो चार स्वरों को एक मात्रा में यों बजाएं–पमगम।

आलाप व तान का चिह्न: स्वर लिपि में जिन स्वरों के आगे ऽ के जितने चिह्न हों तो इसका अर्थ है, उस स्वर की तान अथवा आलाप को उतनी देर पर्दे पर उंगली से दबाना है, जितनी देर तक गायक आलाप या तान खींचता है। अगर स्वर के आगे एक ऽ चिह्न हो तो पर्दा थोड़ी देर तक दबाएं, दो ऽऽ चिह्न हैं तो कुछ देर तक और तीन ऽऽऽ चिह्न हैं तो पहले के मुकाबले अधिक देर तक दबाएं। यानी चिह्नों की मात्रा देखते हुए तान अथवा आलाप निकालें। जिन स्वरों के आगे चिह्न न हों, वहां पर्दे पर उंगली का सामान्य दबाव दें।

ताली का चिह्न: आमतौर पर तबले आदि की संगत में तबलावादक ताली बजाता है। जिस स्वर के नीचे 1, 2, 3 या 4 की संख्या दी गई हो, उतनी बार ताली बजाई जाती है।

खाली स्वर: जिस स्वर के नीचे ० का चिह्न हो, इसका अर्थ है, यह स्वर खाली है, यानी उसे बजाए बिना आगे या पीछे बढ़ना चाहिए।

साभार : कम्प्लीट गिटार गाईड – संगीताचार्य मनोरंजन भारती

Appendix - CD_3

कंपित स्वर: कुछ स्वरों के ऊपर ~~~ का चिह्न होता है। इसका अर्थ है उस स्वर को इस प्रकार बजाएं कि उसकी ध्वनि प्रकंपित निकले।

स्वर विस्तार: कुछ स्वरों के आगे.....या.....का चिह्न हो तो इसका अर्थ है कि वहां स्वर को खींचकर विस्तार देकर ठहरना है। जैसे गायक देर तक आ... का विस्तार करते हुए गायन करता है तो वादक को स्वर को भी उतनी ही देर तक ठहराव देना चाहिए।

कण स्वर: जब युगल स्वरों को एक मात्रा में एक-दूसरे का सहारा लेकर बजाया जाए तो इनको कण स्वर कहते हैं। स्वर लिपि में कण स्वरों का चिह्न इस प्रकार किया जाता है:

रे ग

समस्वर: स्वर लिपि में जिन स्वर के साथ गुणा (×) या जोड़ (+) का चिह्न हो, वे समस्वर कहलाते हैं।

कम मात्रा के स्वर: में जिन स्वरों पर फूल की तरह का चिह्न (*) हो, उन स्वरों को कमं मात्रा, यानी लगभग आधी मात्रा तक बजाया जाता है।

स्वर मात्रा को बांटना: स्वर लिपि में जिस स्वर पर—। का चिह्न हो तो इसका अर्थ है कि आप स्वर की मात्रा को बांटते हुए उस स्वर को वाद्ययंत्र पर बजाएं।

❑❑

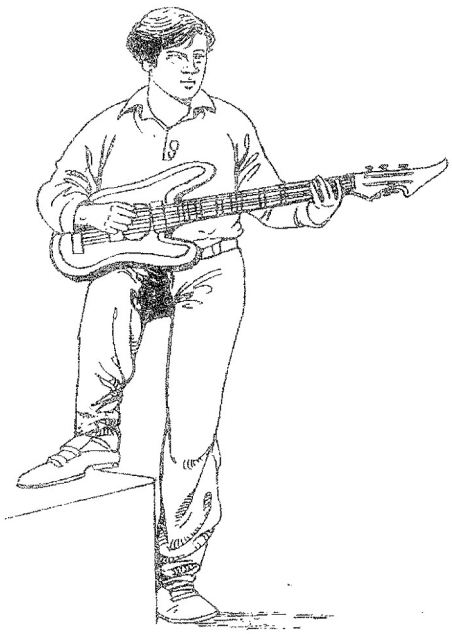

21

साभार : कम्प्लीट गिटार गाईड - संगीताचार्य मनोरंजन भारती

Appendix - CD_4

खिलौना जानकर तुम तो

ओ...खिलौना जानकर तुम तो, मेरा दिल तोड़ जाते हो,
मुझे इस हाल में किसके सहारे छोड़ जाते हो।

खुदा का वास्ता देकर, मना लूं दूर हूं लेकिन,
तुम्हारा रास्ता मैं रोक लूं, मजबूर हूं लेकिन,
कि मैं चल भी नहीं सकता, और तुम दौड़ जाते हो,
ओ...खिलौना जानकर तुम तो...

मेरे दिल से न लो बदला, जमाने भर की बातों का,
ठहर जाओ सुनो मेहमान हूं, मैं चंद रातों का,
चले जाना, अभी से किसलिए मुंह मोड़ जाते हो,
ओ...खिलौना जानकर तुम तो...

स्थायी

प	प	–	प	रे	–	रे	प	प	प	म	प	ध	ध	म	म
खि	लौ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	जा	ऽ	न	क	र	तु	म	तो	ऽ	ऽ
ग	रे	ग	रे	स	–	–	रे	ग़	म	ग़	ग़	रे	रे	–	–
मे	रा	ऽ	दि	ल	ऽ	ऽ	तो	ऽ	ड़	जा	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ
प	प	–	प	रे	–	रे	प	प	प	म	प	ध	ध	म	म
मु	झे	ऽ	इ	स	ऽ	हा	ऽ	ल	में	ऽ	कि	स	के	ऽ	ऽ
ग	रे	ग	रे	स	–	–	रे	ग़	म	ग़	ग़	रे	रे	–	–
स	हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	छो	ऽ	ड़	जा	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ
सं	–	–	–	नि	ध	प	–								
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

84

साभार : कम्प्लीट गिटार गाईड – संगीताचार्य मनोरंजन भारती

अनआ-मनआ घोख
(विविध- विचार)

ॐ★ॐ

1

बिशप डॉ० निर्मल मिंज

दिनांक : 11.07.2010

'झरिया'

कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण / Kurux Phonetics and transliteration), डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' संग श्रीमती डॉ० ज्योति टोप्पो उराँव, द्वारा तैयार किया गया लेख है। इसमें ध्वनि एवं लिप्यन्तरण दो मुख्य शब्द हैं। कुँड़ुख़ शब्दों की ध्वनि को तोलोंग सिकि में जिस तरह प्रकट किया जाता है उसी तर्ज पर रोमन लिपि और देवनागरी लिपि में भी लिखे जाने की संभावना इस लेख में प्रस्तुत है। ध्वनि और लिपि का प्रत्येक भाषा-साहित्य में एक स्वभाविक संबंध है। इस स्वभाविक संबंध को अन्य भाषाओं की लिपियों से प्रदर्षित करना असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन है। प्रत्येक समाज के कुछ लोगों में प्रकृति प्रदत्त विषेश गुण या प्रशिक्षण द्वारा इस काम को पूरा करने की क्षमता होती है, जिसे ईश्वरीय वरदान भी कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति हर भाषा समूह में पाये जाते हैं। हमारे कुँड़ुख़ भाषी समाज में डॉ० फ्रान्सिस एक्का ऐसे प्रशिक्षित और वरदान पाये व्यक्तियों में से थे। उनका निधन इस समाज और कुँड़ुख़ भाषा के लिए भारी घटी का अनुभव कुछ लोगों के लिए होता है। कुँड़ुख़ भाषा बोलने और लिखने वालों की संख्या लाखों में भारत तथा भारत के बाहर नेपाल, बंग्लादेश एवं अन्य जगहों पर निवास करती है, किन्तु कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को परिमार्जित रूप देने वालों की संख्या बहुत कम है। इन्हीं चन्द भाषाविदों में से डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' एक हैं। वे पेशे से बाल रोग चिकित्सक हैं, फिर भी उन्होंने कुँड़ुख़ साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अन्य भाषा साहित्य से कुँड़ुख़ साहित्य का गहरा तुलनात्मक अध्ययन किया है, जिसका प्रमाण यह लेख है।

वे तोलोंग सिकि के अविष्कारक हैं। उसके साथ-साथ तोलोंग सिकि में कुँड़ुख़ साहित्य को सम्पन्न बनाने में उनका सहयोग प्रशंसनीय है। दूसरी ओर साहित्य निर्माण में 'मानकीकरण' एक विशेष सीढ़ी है। इस सीढ़ी तक पहुँचने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। कुँड़ुख़ समाज के लोग भी सदियों से अपनी भाषा बोलते आये हैं। एक भाषा बोली से भाषा के दर्जे पर तब आती है, जब उसकी अपनी लिपि बन जाती है और उसे समाज ग्रहण करके व्यवहार करने लगता हैं। आदिवासी भाषा समूह और विषेशकर कुँड़ुख़ भाषा समूह के आदिवासियों ने कथित रूप से लिखित रूप में प्रवेश करने में अनेकों व्यवधानों का सामना किया है। इन कठिनाइयों में मानकीकरण के दर्जे पर पहुँचना काफी जटिल मालूम पड़ता है। अगर कोई बाहर का विशेषज्ञ इसमें सहायक होता है तो हम जल्द ही स्वीकार कर लेते हैं, किन्तु अपने बीच के विद्वानों को विशेषज्ञ के रूप में ग्रहण करने में बहुत दिक्कतें होती आयी है। इन दिक्कतों को दूर कर कुँड़ुख़ भाषा में भी मानकीकरण का कार्य हुआ है, उसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। स्व० डॉ० आर० एलांगियन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर से आकर

दिनांक 09.12.2005 से 18.12.2005 तक झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची में हम लोगों को कुँड़ुख़ भाषा में मानकीकरण लाने हेतु अपूर्व सहायता की। इसे हम सबों को धीरे-धीरे आगे बढ़ाना है। मानकीकरण आखिर क्या है ? भाषा को किस तरह लिखा जाय कि वह साहित्य निर्माण में सर्वोत्तम सहायक हो। इस दिशा में चार आदमी बैठकर समाज के नाम से जो कुछ करते हैं या कहते हैं उसे मानना, उसे जानना और उसके अनुसार पूरी इच्छा शक्ति के साथ कार्य करना ही मानकीकरण है।

डॉ० नारायण उराँव, 'सैन्दा' ने इस पुस्तक के माध्यम से कुँड़ुख़ भाषा मानकीकरण हेतु एक उत्साहवर्द्धक कार्य किया है। कुँड़ुख़ शब्दों को तोलोंग सिकि, रोमन लिपि और देवनागरी लिपि में किस तरह बेहतर से बेहतर लिप्यन्तरण किया जा सकता है उसी को इस लेख में सावधानी पूर्वक समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। कुँड़ुख़ समाज के बुद्धिजीवी इसे व्यवहार करने का पहल करेंगे तो कुँड़ुख़ भाषा का कल्याण हो जाएगा।

Dr. Karma Oraon
University Professor
Department of Anthropology
Ranchi University, Ranchi-834008
Jharkhand, India

Former Member : Bihar Public service Commission
Former Head : Dpartment of Anthropology, R.U.
President : Indian Association for Study of Religions(IASR)
(Regional committee, Ranchi) An Affiate of
IAHR, member of CIPSH under UNESCO
Chief Advisor : Journal of Social Research, Dept. of Anthropology, RU
Editor : RU Journal of Social Science and Humanities (RUJOSH)
Life Member : Indian Institute of Public Administration, New Delhi
Chairman Cum Liaison Officer: ST/SC Special Cell, Ranchi University, Ranchi
Senate Member : Ranchi University, Ranchi
Co-ordinator : UGC Spl. Assistance Programme (SAP)-DRSI, Dept. of Anth. R.U.

Tel : 0651-2552839 (Res)
Mobile: 9304454836
Fax : 91-651-2301077
E-mail: karmaoraon1@yahoo.co.in

Residential Address :
New Area Morabadi, Ranchi-834008
Jharkhand, India

Ref : .....
Date : 12/11/2010

डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव द्वारा सृजित "कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण" शीर्षक पुस्तक मैंने ध्यान से पढ़ा और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इससे कुँड़ुख़ भाषा के विकास और समृद्धि में एक नया आयाम की शुरुवात होगी । किसी भी भाषा के विकास का क्रमिक इतिहास में लिपि का होना अनिवार्य अवयव है । तोलोङ सिकि का अन्वेषण में इसकी सामाजिक पहलु तथा भाषायी वैज्ञानिकता को बखुबी ध्यान में रखा गया है । इसके साथ ही तोलोङ सिकि, रोमन एवं देवनागरी में लिप्यन्तरण से कुँड़ुख़ भाषा की बहुयामी उपयोग एवं प्रसांगिकता प्रखर होगी ऐसा मेरा विश्वास है ।

किसी भी भाषा का राष्ट्रीय पहचान तथा राजकीय स्वीकृति के लिए संविधान में प्रावधान है परन्तु इसके लिए जरूरी है जिस लोक भाषा को, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार प्राप्त है उस भाषा में साहित्य का निर्माण हो और यह तभी सम्भव है जब उक्त भाषा में लोक साहित्य, संस्कृति और जीवन शैली अभिव्यक्त हो । कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि के ईजात से पूरे देश में एक नये सिरे से सोच एवं ओज उभरा है और इससे आगे के दिनों में कुँड़ुख़ भाषियों के लिए एक पुख्ता आधार मिलेगा । देश के लगभग 30 लाख कुँड़ुख़ जनजाति के लोग इस भाषा का उपयोग अपने बीच परिसंवाद का माध्यम के रूप में अंगीकार कर चुके हैं और यह द्रविड़ भाषा मूल की लोक भाषा है । इसकी विशिष्टता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखकर समस्त भारत के कुँड़ुख़ (उराँव) जनजाति के लोग साकारात्मक सोच के साथ भाषा के विकास एवं निर्माण में लगे हुए हैं और इस बात की ओर संयुक्त रूप से प्रयासरत हैं कि लोक भाषा की साहित्यिक पक्ष मजबूत हो और इस कड़ी में कुँड़ुख़ लिपि यथा तोलोङ सिकि जिसे झारखण्ड सरकार ने प्रारम्भिक तौर पर स्वीकार कर लिया है इसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पहचान प्राप्त हो और भाषा संबंधी संवैधानिक दर्जा आठवीं अनुसूची में दर्ज हो । इसके लिए राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में समस्त देश के कुँड़ुख़ (उराँव) जनजाति एक जूट होकर आवाज उठा रहे हैं, जो एक शुभ संकेत है । मैं इस आंदोलन में कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण के लेखक द्वय के अमूल्य योगदान के लिए बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि वे आगे भी कुँड़ुख़ भाषा विकास में उत्तरोतर साकारात्मक योगदान देंगे ।

फ़ा० अगुस्तीन केरकेट्टा, PGDC
अध्यक्ष
आखिल भारतीय तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा
झारखण्ड, राँची

दिनांक : 11.07.2010

डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव द्वारा प्रस्तुत **कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण**, कुँड़ुख़ समाज के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है । डॉ० उराँव द्वारा तोलोंग सिकि, रोमन और देवनागरी लिपि में कुँड़ुख़ शब्दों का ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण का सार्थक प्रयास है। वास्तव में यह मानकीकरण मानव के मन-मस्तिष्क को मनाने का एक मापदण्ड है । अपने इस रचनात्मक कार्य में निरन्तर अभ्यासरत और अग्रसर विकासरत सेवा से भले ही चिकित्सक हैं अब ये Dip-into-literature वाले हस्ति के एक शिक्षक ही माने जायेंगे । ऐसा आभास मुझे इनकी इसी कृति से हुआ है ।

यों तो तोलोंग सिकि में कुँड़ुख़ प्रवेशिका ''कइलगा'' के चतुर्थ संस्करण अप्रैल 08, 2008 सरहुल करते समय डॉ० उराँव के मनोभाव से मैं काफी प्रभावित हुआ । अब यकीन मानता हूँ कि यह हृदय ग्राही साहित्यिक कार्य तोलोंग सिकि, रोमन एवं देवनागरी में कुँड़ुख़ शब्दों का ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण भी जनमानस को छूये बिना नहीं रह पाएगा ।

"Request to write Matric Examination - 2009 of Oran Subject in Tolong Siki Alphabet" - एक समस्या बन कर मैट्रिक की परीक्षा के पहले, दोनों ही झारखण्ड अधिविद्य परिषद् राँची और कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरकुड़िया, भगीटोला (गुमला, झारखण्ड) के सामने मुँह बाये खड़ी थी, जिसका निदान सिर्फ Transliteration या ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण (सदृश अक्षरों के अनुरूप प्रतिनिधित्व) मात्र था । मैट्रिक के विद्यार्थियों को परीक्षा में उत्तर पुस्तिका तोलोंग लिपि में लिख सकने हेतु अनुमति प्राप्त होने में तोलोंग लिपि में पुस्तकों की अनिवार्यता को ध्यान में रखकर दो महीनों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही The Subject Syllabus Books of Oraon Language in Tolong Siki (जो तब तक सिर्फ देवनागरी में था) संभव हुए जो बहुत ही कुतुहलपूर्ण क्षणों के ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण के साथ-साथ विद्यार्थियों के जीवन के निर्माण के सुयोग मूहुर्त रहे थे । इन सबका गहन आभास एवं अनुभव डॉ० उराँव के साथ मुझे भी मिला । गद्य-पद्य भाग का प्रूफ रिडिंग में मेरा पूर्ण सहयोग रहा जिसे 'कवि को कतई छूट' की तरह भावनात्मक ही समझी गई । अपेक्षा है विद्वतजन पूरक बन कर ऐसे साकारात्मक कार्यों में उदार बने रहेंगे ।

उपरोक्त उदात्त विचारों की पराकाष्ठा में मेरा मन्तव्य यह है कि कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण) में ध्यातव्य रहे कि तोलोंग सिकि के स्थापत्य और सार्थकता इसमें है कि यह लोक सांस्कृतिक एवं पारम्परिक पोशाक एवं चिह्नों के प्रयोग से बने कलाकृति की आकृति एवं लिपि का सटीक प्रकटीकरण है और कुँड़ुख़ शब्दों एवं अन्यान्य भाषा माध्यम के लिए अत्यावश्यक है ।

4

डॉ० दुखा भगत
रीडर (कुँड़ुख़/उराँव)
गोस्सनर कॉलेज राँची (झारखण्ड)

दिनांक : 06.09.2010

डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" एवं डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव द्वारा प्रस्तुत, "कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण)" शीर्षक पुस्तिका का मैंने अवलोकन किया। देखने में यह एक छोटी सी पुस्तिका है किन्तु साहित्यिक दृष्टिकोण से इसमें उच्च तकनीक एवं असाधारण तथ्यों का उल्लेख है। यों तो मैं ध्वनि विज्ञान (Phonetic Science) का ज्ञाता नहीं हूँ फिर भी उराँव समाज का एक जागृत सदस्य एवं कुँड़ुख़ भाषा का प्राध्यापक होने के नाते, भाषा से संबंधित कार्यों में अभिरुचि एवं सहभागिता की सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए इस पुस्तिका हेतु दो शब्द लिखने की धृष्टता कर रहा हूँ।

लेखक द्वय में से डॉ० उराँव पेशे से एक चिकित्सक हैं। उन्होंने चिकित्सा विज्ञान जैसे गूढ़ विषयों का अध्ययन कर, कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा के महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करते हुए हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषा के साथ तुलनात्मक अध्ययन करके कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि, हिन्दी एवं संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी तथा अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन लिपि में लिप्यन्तरण करने का सार्थक प्रयास किया है। इस पुस्तिका में तकनीकि सुलभ (Technofriendly) लिप्यन्तरण की बात कही गयी है अर्थात आधुनिक तकनीक एवं मशीन में निर्धारित सूचनाओं एवं प्रावधानों के अनुरूप, लिखने तथा पढ़ने की विधि को स्वीकार करना। अगर ऐसा हो पाता है तो यह तरीका सर्वोत्तम होगा। भाषाविदों, शिक्षाविदों एवं साहित्यकारों ने भी अलग-अलग भाषा की लिपि में लिप्यन्तरण हेतु Di-critical mark देकर सदृश्य एवं समतुल्य ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्नों को प्रतिस्थापित किया है। इन्हीं सिद्धान्तों को आधार मानकर लेखक द्वय द्वारा यह उल्लेखनीय कार्य किया गया है। इस कार्य में डॉ० श्रीमती उराँव जो "संस्कृत" जैसी प्राचीन भाषा विषय में व्याख्याता हैं, जिन्होंने दो प्राचीन भाषाओं (संस्कृत एवं कुँड़ुख़) की विशिष्टताओं को समझने में कड़ी का काम किया है।

इस पुस्तिका में लिप्यन्तरण का मूल आधार कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि है। इसमें कुँड़ुख़ भाषा की उच्चरित विशिष्ट ध्वनियों के लिए अलग-अलग ध्वनि चिह्न अथवा लिपि चिह्न निर्धारित किये गये हैं। इन विशिष्टताओं में से कुछ तथ्य इस प्रकार हैं-

(1)कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित लम्बी ध्वनि (दिगहा हहस) को दिखलाने के लिए ':' (कॉलन) चिह्न का प्रयोग किया गया है। जैसे - ओ:ड़ा, ए:ड़ा, उ:ख़ा, ई:मा आदि। यहाँ पर ओ, ए, उ तथा ई दीर्घ स्वर है किन्तु कुँड़ुख़ शब्दों के उच्चारण में दीर्घ स्वर के उच्चारण समय (दोगुना) से कुछ अधिक समय लगता है तथा संस्कृत के प्लूत स्वर के उच्चारण समय से कम यानि लगभग ढाई गुना समय लगता है। इस विशिष्ट उच्चारण को दिखलाने के लिए ':' (कॉलन) चिह्न देकर देवनागरी अक्षरों के उच्चारण समय को लम्बा, लगभग ढाई गुना किया गया है, जो संस्कृत या हिन्दी के उच्चारण समय व्यवस्था से भिन्न है। यह चिह्न अंग्रेजी भाषा विज्ञान में, लम्बी ध्वनि के लिए व्यवहारित है। श्रद्धेय फॉ० डॉ० कामिल बुल्के द्वारा अपनी पुस्तक अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश में देवनागरी लिपि से अंग्रेजी भाषा

के शब्दों को लिखने हेतु लम्बी ध्वनि के लिए ':' (कॉलन) चिह्न का प्रयोग किया गया है। इस विधि को हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ० दिनेश्वर प्रसाद ने भी अपनाया है तथा उनके द्वारा अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश का पुनर्संस्करण किया है।

(2) कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित हेचका ध्वनि को दिखलाने के लिए 'अ्' चिह्न का प्रयोग किया गया है। यह ध्वनि, संस्कृत भाषा की 'अर्द्धस्वर अ' ध्वनि के समान है। स्व० डॉ० फ्राँसिस एक्का की पुस्तक Kũrux Phonetic Reader में इसे स्पर्श व्यंजन (Stop Consonant) के समूह में पारिभाषित किया गया है। अतएव इस ध्वनि को देवनागरी लिपि में 'अ्' (अ के नीचे हलन्त चिह्न) लिखा जाना भाषाविदों की परिभाषा के अनुरूप ही है। जैसे - चिअ्ना, बअ्ना, नेअ्ना, रअ्ना, होअ्ना आदि। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा के पूर्व प्राध्यापक स्व० इन्द्रजीत उराँव द्वारा हेचका हरह ध्वनि के लिए 'अ्' का ही प्रयोग किया जाता था।

(3) व्यवहार में, देवनागरी लिपि से लिखते-पढ़ते समय कुँड़ुख़ भाषा के कुछ शब्दों के विशिष्ट उच्चारण को, हिन्दी उच्चारण की तरह पढ़ा एवं लिखा जाता है, जिसे दूर करने के लिए 'शब्दखण्ड सूचक' चिह्न देकर उच्चारण विशिष्टता को दिखलाया जाना, लेखन एवं उच्चारण की जटिलता को सरल बनाना है। शब्दखण्ड सूचक चिह्न जिसे कुँड़ुख़ में 'घेतला' कहा गया है, यही चिह्न अंग्रेजी में 'glotal stop' चिह्न की भांति व्यवहारित है। जैसे :- कइलगा - कइल'गा, बइकला - बइक'ला, बरई - बर'ई, कमई - कम'ई आदि।

(4) कुँड़ुख़ भाषा की मान्य ध्वनियों को रोमन लिपि की प्रचलित विधियों से लिखने में थोड़ी कठिनाई होती है, जिसे स्व० डॉ० एक्का (पूर्व प्राध्यापक एवं निदेशक, CIIL मैसुर)के 6 (Six) vowel concept (i, e, u, o, a, a̲ / इ, ए, उ, ओ, अ, आ) के सिद्धांत अनुसार सफलता पूर्वक सभी उच्चरित ध्वनियों को लिखा जा सकता है। जैसे - atxa̲ (अतख़ा), a̲:lo (आ:लो), kõ:ṛa (कों:ड़ा), ã̲:ṛko (आँ:ड़को) आदि। रोमन लिपि के माध्यम से कुँड़ुख़ शब्दों को लिखने में अ = a तथा आ = a̲ लिखा जाता था किन्तु तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास (लेखक - डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा') पुस्तक में कुँड़ुख़ ध्वनि 'अ' एवं 'आ' जिसे तोलोंग सिकि (लिपि) में a (अ) तथा a̲ (आ) दो अलग एवं पूर्ण स्वर स्वीकार किया गया है जो अंग्रेजी लेखन की प्रचलित विधि के अनुरूप अ + अ = आ के सदृश a̲ लिखा जाता है, से बिल्कुल भिन्न है। साथ ही अनुनासिक स्वर ध्वनि - आँ = ã̲ आदि को दिखलाने की पूर्व विधि में कठिनाई होती किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में आँ = ã̲ की तरह दिखलाने की परम्परा की शुरुआत सरल एवं सुगम विधि है। इन चिह्नों का व्यवहार संताली साहित्य के अंग्रेज साहित्यकार श्रद्धेय पी० ओ० बॉडिंग द्वारा संताली-अंग्रेजी डिक्सनरी एवं संताली फॉल्क टेल्स नामक पुस्तक में किया गया है।

अंत में मैं कहना चाहूँगा कि यह पुस्तिका, मात्र पुस्तिका नहीं वरण पूरे कुँड़ुख़ समाज एवं कुँड़ुख़ साहित्य के लिए पथ प्रदर्शक एवं प्रेरणाश्रोत का कार्य करेगा। इसके प्रस्तुतकर्त्ता डॉ० उराँव एवं डॉ० श्रीमती उराँव को समाज की ओर से मैं हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशीर्वचनों के साथ मंगलकामना करता हूँ कि वे अपनी लेखनी को अग्रतर जारी रखें, जिससे समाज के लिए अच्छा विचार एवं लेख मिलता रहे।

डॉ० नारायण भगत
व्याख्याता (कुँड़ुख़)
डोरण्डा कॉलेज, राँची (झारखण्ड)

दिनांक 19.08.2010

कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण) शीर्षक प्रस्तुति एक अति प्रशंसनीय कार्य है। इसके प्रस्तुतकर्त्ता डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" एवं डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव ने ध्वनि एवं लिप्यन्तरण जैसे कठिन विषय को सहजतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

डॉ० उराँव पेशे से एक चिकित्सक हैं तथा डॉ० श्रीमती उराँव संस्कृत जैसी प्राचीन भाषा विषय की व्याख्याता है। इन दो अलग-अलग विषयों में शिक्षा ग्रहण करने वाले लोगों में जनजातीय भाषा के ध्वनि विज्ञान में अभिरुचि रखना भी एक दैवी कृपा के समान है।

इसमें कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि (लिपि) में लिखे जाने के तरीके को बतलाया गया है। रोमन लिपि में 5 (पाँच) स्वर (a,e,i,o,u) हैं तथा कुँड़ुख़ भाषा के 'अ' एवं 'आ' ध्वनि को a एवं $\bar{a}$ की तरह लिखा एवं पढ़ा जाता है किन्तु कुँड़ुख़ भाषा के "आँ" ध्वनि को लिख पाना इस तरीके में थोड़ी मुश्किल होती है। अत: इस प्रस्तुति में 6 (six) vowel concept (i, e, o, u, a, $\underline{a}$) को लागू किया गया है। इसके आधार पर कुँड़ुख़ भाषा को पूरी तरह लिखा एवं पढ़ा जा सकता है।

इस प्रकार देवनागरी लिपि से कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को लिखने में जो कठिनाइयाँ होती थीं उसे भी दूर करने का प्रयास किया गया है। कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित लम्बी ध्वनि, जो निश्चित रूप से हिन्दी एवं संस्कृत भाषा के दीर्घ स्वर से अधिक उच्चारण समय लेता है, को दिखलाने हेतु International Phonetic Code System में प्रयुक्त होने वाला चिह्न अर्थात् ' : ' (कॉलन चिह्न) को प्रयोग में लाया गया है। यह चिह्न तकनीकी सुलभ एवं सरलता पूर्वक समझने-समझाने में सहायक होगा। इसी तरह कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित "अर्द्धस्वर अ" तथा "शब्दखण्ड सूचक चिह्न" को प्रतिपादित कर कुँड़ुख़ साहित्य में पथ प्रदर्शक का कार्य किया है।

इन सभी तथ्यों को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि "तोलोंग सिकि" में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर प्रतिस्थापित किया गया है।

इस तकनीकी सम्मत कार्य के लिए लेखक द्वय प्रसंशा के पात्र है। मैं इस प्रस्तुति के लिए डॉ० उराँव एवं डॉ० श्रीमती उराँव को हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ० शान्ति ख़लख़ो
मुख्य सम्पादक
कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इन्डिया, नई दिल्ली

दिनांक 16.10.2010

ध्वनि किसी भी भाषा का महत्वपूर्ण अंग है। ध्वनियों से ही पद (शब्द) तथा पदों से ही वाक्य बनते हैं। कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोंङ सिकि है। भाषा जैसी गूढ़ विषय का गहराई से अध्ययन कर कुँड़ुख़ भाषा के महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करते हुए तोलोंङ सिकि के आविष्कारक डॉ० नारायण उराँव ने लिप्यन्तरण का दुरूह कार्य को सम्पन किया है। इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत जैसे भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोंङ सिकि, देवनागरी लिपि एवं रोमन लिपि में लिप्यन्तरण कर कुँड़ुख़ भाषा के लेखन कार्य को सहज एवं सुलभ बनाया है।

इन्होंने कुँड़ुख़ भाषा की मुख्य ध्वनियों को उनकी विशेषता, उपयोगिता एवं सही उच्चारण सहित लिप्यन्तरण करने की भरपूर कोशिश की एवं उसमें खरे उतरे हैं। लेखक डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं उनकी धर्म पत्नी डॉ० (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव ने मिलकर कुँड़ुख़ भाषा को लेखन के क्षेत्र में सार्थक एवं नई दिशा दी है। इनके अथक प्रयास से कुँड़ुख़ समाज अवश्य ही लाभान्वित होगा, ऐसी मेरी मनोकामना है।

मैं लेखक द्वय को हार्दिक बधाई एवं शुभकामाएँ . देती हूँ।

डॉ० हरि उराँव

सह-प्रोफेसर,

कुँड़ुख़ जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग

राँची विश्वविद्यालय राँची

अध्यक्ष

कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इन्डिया, नई दिल्ली

दिनांक 25.10.2010.

संसार की समस्त भाषाओं में यह सामान्य समस्या पाई जाती है कि विचारों को व्यक्त करते समय, शब्दों का जैसा उच्चारण करते हैं, वैसा ही उसे लिख पाने में कठिनाई होती है । कुँड़ुख़ भाषा के साथ भी यही समस्या है । कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को देवनागरी या रोमन लिपि से लिखने में कई समस्याओं को सामना करना पड़ता है । उच्चारण की दृष्टि से कुँड़ुख़ शब्दों को सही-सही लिख पाना आज भी एक समस्या बनी हुई है ।

डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' ने लिप्यन्तरण के माध्यम से उसी समस्या का समाधान करने का स्तुत्य प्रयास किया है ।

श्री बागी लकड़ा
पड़हा दिवान
राजी पड़हा ओड़िसा, भारत

दिनांक 10.01.2011

यह खुशी की बात है कि कुँड़ुख़ भाषा की लिपि विकसित हो चुकी है । कुँड़ुख़ समाज ने अपनी भाषा की लिपि के रूप में "तोलोङ सिकि" नामक लिपि को अंगीकार कर लिया है । इस लिपि को डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" ने एक Social Scientist के रूप में समाज के सामने लाने का कार्य किया है तथा अपनी लगन एवं मेहनत से कुँड़ुख़ समाज को अपनी भाषा की लिपि होने का सम्मान दिलाया है ।

ज्ञात हो कि झारखण्ड सरकार एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची द्वारा दिनांक 19 फरवरी 2009 को मैट्रिक में कुँड़ुख़ विषय की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) के माध्यम से लिखने की अनुमति प्रदान की गई है, जो झारखण्ड सरकार की दूरदर्शिता का परिचायक है ।

तोलोङ सिकि के विकास के क्रम में राजी पड़हा वार्षिक सम्मेलन 1995 बमनडीहा, लोहरदगा में डॉ० नारायण उराँव द्वारा तोलोङ सिकि का प्रस्तुतिकरण किया गया । राजी पड़हा दिवान श्री भिखराम भगत की नेतृत्व में सभी पड़हा प्रेमियों ने तोलोङ सिकि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में ध्वनि मत से स्वीकार कर लिया । साथ ही पड़हा दिवान श्री भगत द्वारा सुझाव दिया गया कि लिपि के परिपेक्ष्य में एक व्याकरण भी तैयार किया जाना चाहिए, तभी यह शोध कार्य पूर्ण हो पाएगा ।

उक्त सम्मेलन के पश्चात् डॉ० उराँव अपने कार्यों में व्यस्त रहे और सामाजिक मांग को पूरा करने के लिए प्रयास किया तथा एक लम्बे समय के बाद फिर से एक कठिन कार्य को कार्यरूप देते हुए "कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" एवं "कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा पिंज्जख़ा" नामक दो पुस्तकों की रचना करके समाज के समक्ष प्रस्तुत किया । "कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा पिंज्जख़ा" की छाया प्रति राजी पड़हा दिवान स्व० भिखराम भगत की 74वीं जयंती 10 जनवरी 2011, के अवसर पर बलीजोड़ी, राउरकेला, ओड़िसा में गुरु माता श्रीमती बुधेश्वरी भगत के हाथों सौंपकर डॉ० उराँव ने स्व० भिखराम भगत एवं राजी पड़हा की अवधारणा को पूरा किया । इस कार्य से स्व० भिखराम भगत की आत्मा को शांति मिलेगी और कुँड़ुख़ समाज को इस लिपि एवं व्याकरण से नई दिया एवं ओज प्राप्त होगा ।

मैं डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" एवं उनके परिवार को अपनी एवं राजी पड़हा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ ।

9

फ़ा० जेम्स टोप्पो, एस०जे०
प्राचार्य - संत जेवियर्स
इन्टर कॉलेज बुण्डू

दिनांक 20.01.2011

कुँड़ुख़ समाज अपनी बहिर्मुखी प्रवृति के कारण एक ओर तो अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील होने का आभास देता है और दूसरी ओर उसी प्रवृति के परिणाम स्वरूप दूसरों की तुलना में अधिक बदनाम भी होता है । सबों के शुभ और समाज कल्याण की दिशा हो जहाँ वह अग्रसारित होता हो अथवा तमस और पतनोन्मुखता के अनुशीलन की बारी हो जिस दिशा से वह अपने कदम कई बार मोड़ नहीं पाता, संचार और संवाद, सम्पर्क और सम्प्रेषण ही ऐसे वाहन हैं जिनके द्वारा इनकी अन्तरगामी और बहिर्गामी, दोनों दिशाओं की गतिशीलता सफल साकार होती है अथवा वैचारिकी का धरातल छोड़ यथार्थ के धरातल पर आती है ।

संचार, संवाद, सम्पर्क और सम्प्रेषण का मूलाधार ध्वनि है । ध्वनि जबतक श्रवण संक्षिप्त रहती है तब तक उसकी प्रभावोत्पादकता का दायरा संक्षिप्त होता है लेकिन यदि वह श्रवण के साथ-साथ द्रष्टव्य रूप धारण करती है तब उसकी प्रभावोत्पादकता की सीमा का विस्तार, फैलता-फैलता व्यापक हो जाता है । यह, ध्वनि का प्रथम द्रष्टव्य रूप-धारण ही किसी बोली या भाषा की लिपि है ।

Phonetics या ध्वनि का लिखित संकेत, या फ़ा० डॉ० कामिल बुल्के, ये०स० की भाषा में स्वर विज्ञान, उस संस्कृति विशेष की पृष्ठभूमि से ही सर्जित होकर जब उस भाषा में प्रयुक्त हर ध्वनि का सम्प्रेषण करने में सफल हो जाता है तब लिपि, से दृष्टि प्रमाणित और संचार तथा संवाद की दृष्टि से व्यापक मानी जाने लगती है । यही उस समाज विशेष की सुगबुगाहट और प्रगति की दौड़ में अन्य कबीलों या समाजों के साथ कतार वद्ध होने का असली संकेत है ।

डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" और उसकी जीवन संगिनी डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो "उराँव" के करकमलों से प्रस्तुत "कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" (कुँड़ुख़ ध्वनि एवं लिप्यन्तरण) निबन्ध को मैं अपने दृष्टि से बिल्कुल मौलिक और जीवन दायिनी योगदान समझता हूँ । इतने लम्बे शैशवकाल के बाद जैसे कुँड़ुख़ समाज के बाज-चूजों के पंख उग आए और वे ऊँचे पेड़ की डालों के बीच जीर्ण एवं झेझरा हो रहे घोंसले को छोड़कर पास की ही टहनियों पर बैठ कर पर तोलने लगे हैं । अपनी बाज गति और दूरगामी दृष्टि के साथ उन्मुक्त सीमातीत गगन को अपने अधीन करने की विशिष्ट क्षमता के कारण, पक्षी-संसार में विशिष्ट और अपूर्ण हैसियत रखने वाले बाज के चूजे अब प्रथम उड़ान भरने के लिए तैयार होने के संकेत दे रहे हैं । "तोलोङ सिकि उद्भव और विकास" तथा "कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" की महत्ता मेरी दृष्टि में, इसी दृष्टि कोण से आँकी जानी चाहिए ।

ऐसे कुँड़ुख़ के उच्चरण-विज्ञान की तुलना अब तक हिन्दी के उच्चारण-विज्ञान के साथ ही होती आयी है क्योंकि कुँड़ुख़ के सम्प्रेषण के लिए देवनागरी लिपि को ही अपनाये जाने का मोहभंग कुँड़ुख़ के कुछ अकादमिक बुद्धिजीवियों के बीच ही नहीं हो पा रहा है । मामला बिल्कुल उसी प्रकार है जिस प्रकार चिकित्सा के संसार में कैंसर जैसे दु:साध्य रोगों के इलाज को लेकर चिकित्सकों के बीच कैंसर विशेषज्ञों का है जब वे अचानक पाते हैं कि वर्त्तमान प्रगतिशील चिकित्सा भी जिस केस को दु:साध्य कहती है, उसे ही जड़ी-बूटी वाले वैद्य, नुस्खों के विश्लेषण में अवैज्ञानिक होकर भी मर्ज का इलाज करने में सफल पाए जाते हैं । वास्तव में कुँड़ुख़ की तुलना हिन्दी के उच्चारण-विज्ञान से हटकर संस्कृत के उच्चारण विज्ञान के साथ होनी चाहिए, क्योंकि कुँड़ुख़, संस्कृत के समान ही अत्यन्त पुरानी भाषा है । यदि यह मान्य हो जाय, तब संस्कृत स्वरों और कुँड़ुख़ के स्वरों को एक दूसरे के साथ मिलान करते हुए यह साफ देखा जा सकेगा कि कुँड़ुख़ में स्वरों की संख्या संस्कृत के स्वरों की संख्या से कम नहीं है । यह ठीक उल्टा कथन अधिक स्पष्ट होगा कि कुँड़ुख़ में कई ऐसे स्वर हैं जिनका शुद्ध सम्पूर्ण समकक्ष संस्कृत में है ही नहीं । उदाहरणार्थ -

(1) कुँड़ुख़ के कों:ड़ा, मों:ड़ा, ओ:ड़ा, ए:ड़ा, ते:ला, ई:मा, ऊ:रू आदि शब्दों में आरम्भिक दीर्घ स्वर वर्ण, संस्कृत के दीर्घ स्वर वर्ण का समकक्ष नहीं है । यदि ऐसा होता तो ये शब्द इस प्रकार लिखे जाते - कोंड़ा, मोंड़ा, ओड़ा, एड़ा, तेला, ईमा, ऊरू और वे कुँड़ुख़ के सार्थक शब्द नहीं रह जाते । ध्यातब्य हो कि आँठवीं अनुसूची की भाषाओं में से तमिल एवं तेलगु भाषा में उच्चरित 'ए' एवं 'ओ' ध्वनि का ह्रस्व एवं दीर्घ दो-दो रूप होता है तथा दोनों रूपों के लिए दो-दो अलग-अलग लिपि चिह्न निर्धारित किये गये हैं ।

इसलिए कुँड़ुख़ के पक्ष में यह दावा कि कुछ स्वरों का सम्पूर्ण समकक्ष संस्कृत में है ही नहीं, बड़बोलापन नहीं है । इसीलिए "दिगहा सरह" के लिए अतिरिक्त ध्वनि संकेत अनिवार्य है, जो कॉलन या विसर्ग के रूप में (:) सम्प्रेषण किया जा रहा है । इसे सेला के नाम से अभिहित किया गया है । यहाँ पर मैं कहना चाहूँगा कि दिगहा सरह के लिए अतिरिक्त ध्वनि संकेत (Diacritical mark) के रूप में ' : ' (कॉलन) चिह्न का व्यवहार किया जाना उचित होगा । अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के अनुसार रोमन लिपि से ध्वनि विज्ञान को समझने हेतु दिगहा सरह जैसी ध्वनि के लिए ' : ' (कॉलन) चिह्न का व्यवहार कर अंग्रेजी के Long Phones को लिखा गया है । जो मशीनी दृष्टिकोण से तथा व्यक्ति विशेष को समझने एवं समझाने के लिए उपयुक्त तरीका है । दिगहा सरह के स्थान पर कुछ लोग ' _ ' (योजक) चिह्न का प्रयोग करते हैं किन्तु जहाँ दो वैसे शब्दों का युग्म, जहाँ शब्दों का स्वर वर्ण दिगहा सरह के रूप में हो, तो लिखने और समझने में मस्तिष्क पर अनावश्यक बल (strain) पड़ता है तथा कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों की भाषा वैज्ञानिक व्याख्या में कठिनाई होती है । उदाहरण स्वरूप कों:ड़ा-कों:ड़ा, चाँ:ड़े-चाँ:ड़े (दिगहा सरह ध्वनि को दिखलाने हेतु ' : ' (कॉलन) चिह्न का व्यवहार करने पर) युग्मशब्द के दिगहा सरह ध्वनि के स्थान पर ' _ ' (das) चिह्न व्यवहार करने पर कों-ड़ा-कों-ड़ा, चाँ-ड़े-चाँ-ड़े की तरह लिखा जाएगा, जो लेखन और पठन-पाठन के तरीके तथा ध्वनियों की वैज्ञानिक व्याख्याा करने में कठिनाई होगी । इस समस्या से बचने का उपाय ' : ' चिह्न का व्यवहार है । श्रद्धेय फ़ा० कामिल बुल्के द्वारा अपनी पुस्तक "अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश" में देवनागरी लिपि से अंग्रेजी शब्दों को लिखने में Long phones ध्वनि को दिखलाने के लिए ' : ' कॉलन चिह्न

का ही व्यवहार किया गया है । कॉलन चिह्न (:) हिन्दी या संस्कृत भाषा के लिए विसर्ग पढ़ा एवं समझा जाता है किन्तु कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को लिखने या पढ़ने के क्रम में इसे लम्बी ध्वनि के रूप में रखे जाने में कोई समस्या नहीं है ।

(2) कुँड़ुख़ का Glotal stop (हेचका सड़ा) कुँड़ुख़ की अपनी निजी धरोहर है जिसका अस्तित्व हिन्दी में नहीं है । उदाहरण - मरना को कुँड़ुख़ में खेअ्ना कहते हैं "खे" और "ना" वर्णों के बीच, आवाज जैसे अचानक बन्द हो जाती है । कुँड़ुख़ का शब्द हेचका इसी आवाज के अचानक गिरने अथवा बन्द होने की प्रक्रिया का बोधक है । समतल सड़क पर यदि कहीं कोई छोटा सा अवरोध आ जाए अथवा जानबूझ कर गतिरोधक गड्ढा बना हो तो वाहन उसे पार करते समय 'हेचका' खाकर आगे बढ़ता है । ठीक उसी प्रकार का 'हेचका' खेअ्ना, बिअ्ना, होअ्ना, चिअ्ना, नेअ्ना आदि कुँड़ुख़ शब्दों के उच्चारण में होता है । संस्कृत भाषा में इस तरह की ध्वनि है जिसे अर्द्धस्वर अ कहा जाता है तथा इसे लुप्ताकार (ऽ) चिह्न से दिखलाया जाता है ।

(3) कुँड़ुख़ के इन शब्द युग्मों पर गौर किया जाए -

(क) बरई - बर'ई (ख) कमई - कम'ई

(ग) पर्दो - पर्द'ओ

Glotal stop या हेचका सड़ा, हेचका के पूर्व वाले वर्ण के साथ जुड़ा होता है । जैसे - खेअ्ना में "खे" के साथ । लेकिन "बर'ई" में पूर्व या उत्तर का प्रश्न नहीं, बल्कि वैसा शब्द या अक्षर जो एक शब्द खण्ड के रूप में अलग पहचान रखता है । उस उच्चारण एवं अर्थ भिन्नता वाले शब्दखण्ड को दिखलाने हेतु अतिरिक्त ध्वनि सूचक चिह्न की आवश्यकता है । यदि ऐसा नहीं किया गया तो जो शब्द उच्चरित हो रहा है, वह अन्यार्थक शब्द बन जाता है । बरई, एक प्रकार का दलहन है और बर'ई एक क्रिया का एक रूप है अर्थात् "वह आती है ।" दोनों शब्दों में कोई आपसी सम्बन्ध नहीं है । शब्द के बीच शब्द खण्ड को अलग करने की क्रिया घेतला और अलग करने का चिह्न (') घेतला चिह्न कहा जाता है, जिसे हिन्दी में शब्दखण्ड सूचक चिह्न कहा गया है ।

पुनः इस प्रकार के उच्चारण का समकक्ष, संस्कृत और हिन्दी में नहीं पाया जाता है ।

कुँड़ुख़ का उच्चारण-विज्ञान क्योंकि अभी लिखा जा रहा है अर्थात् हिन्दी के उच्चारण विज्ञान या भाषा-विज्ञान से कई दशकों बाद । इसलिए सामान्य धारणा यही है कि यह कुँड़ुख़ उच्चारण विज्ञान, हिन्दी और संस्कृत का अनुयायी हो या अनुकृति मात्र हो, ऐसी धारणा के पीछे कुँड़ुख़ एवं कुँड़ख़र को आर्य संस्कृति के साथ ही जोड़े रखने की मानसिकता छिपी है । यदि यह मान लिया जाए कि कुँड़ुख़ और कुँड़ख़र तथा उनकी सारी सांस्कृतिक विरासत आर्य नहीं अनार्य मूल की है, तब इस धारणा के टूटने में बिलम्ब नहीं होगा, कि कुँड़ुख़ भाषा विज्ञान को हिन्दी और संस्कृत का नहीं वरन् अपना निजी होना है । भाषाएँ, अकादमीशियन्स द्वारा बनाई या गढ़ी नहीं जातीं, हाँ भाषाओं या बोलियों में छिपे विज्ञान को वे खोज कर निकालने में ही विद्वत्ता हासिल की जाती है । वैज्ञानिक, अनुसंधान करने के बाद ही वैज्ञानिक बनता है । कोई ऐसी आवश्यकता नहीं कि व्यक्ति पहले अपने को वैज्ञानिक प्रमाणित कर ले, उसके बाद ही अनुसंधान की ओर प्रवृत हो । इसी अर्थ में डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" शिशु चिकित्सा विशेषज्ञ के भाषा संबंधी अनुसंधान की तारीफ मैं करना चाहता हूँ ।

एक चिकित्सक की हैसियत से आप ने पहले मानव शरीर रचना विज्ञान (Human anatomy का ज्ञान, बारीकी से किया । फिर उस विज्ञान के ज्ञान को रोग निवारण के अलावा भाषा विज्ञान के विश्लेषण से काम लाते हुए अपने सिद्धान्त स्थापित किए, और उन सिद्धान्तों का परीक्षण संस्कृत और अंग्रेजी के स्वर विज्ञान के सम्मुख रखकर किया । इसी क्रम में उनकी जीवन संगिनी डॉ० ज्योति टोप्पो "उराँव" का संस्कृत ज्ञान, परख का आइना प्रमाणित हुआ । अपनी विचारशीलता और ज्ञान के सरोवर को अब तक तकिया के नीचे छिपाकर रखने वाली डॉ० ज्योति का योगदान ऐन मौके पर न केवल सहयोगी सिद्ध हुआ किन्तु इसी बहाने, प्रतिभा का पर्दा फाड़कर उसे विद्वत समाज के सम्मुख और एक विचारवान विदुषी के रूप में प्रतिष्ठित भी कर गया । डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो "उराँव" विशेष बधाई की पात्रा हैं ।

"कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" का लक्ष्य भाषा विज्ञान की व्याख्या मात्र नहीं है । इसका प्रत्यक्ष और सीधा तात्पर्य उन लोगों की सहायता करना है जो कुँड़ुख़ बोलना और लिखना चाहेंगे लेकिन तोलोङ सिकि के प्रयोग में सिद्धहस्तता प्राप्त नहीं कर सकने की स्थिति में या तो रोमन लिपि में ही कुँड़ुख़ को सम्मानित करने की चाह होगी अथवा देवनागरी लिपि में ही । लिप्यन्तरण की यह समस्या "कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा" की सहायता से बड़े हल्के ही समाधित की जा सकेगी । ऐसे कुँड़ख़र जो अपनी भाषा, कुँड़ुख़, जानते हैं बोलते हैं किन्तु तोलोङ सिकि के ज्ञाता नहीं हैं इस लिप्यन्तरण से तत्काल लाभान्वित होंगे । विभिन्न स्वरों की परीक्षाओं में भी तोलोङ सिकि पर अधिकार नहीं कर पाए लोग इस लिप्यन्तरण की कला से लाभ उठा सकेंगे । लेकिन इन व्यक्तिगत लाभों की तुलना में लिप्यन्तरण के पाठ द्वारा कुँड़ुख़ भाषा में मानकीकरण का काम स्वतः सम्पन्न हो जाएगा, यह इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि कहलाएगी ।

कुँड़ुख़ भाषा की सेवा में लेखक द्वय की साधना न केवल सराहना और प्रशंसा के योग्य है किन्तु अनुकरणीय भी । तत्काल जरूरत है सम्पूर्ण कुँड़ुख़ खोंड़हा द्वारा तोलोङ सिकि का शीघ्रातिशीघ्र अपनाया जाना, उसी लिपि के द्वारा सगर्व सम्प्रेषण और संवाद का प्रचलन निश्चित करना । ऐसा इसलिए कि इस तोलोङ सिकि ने बहुत बिलम्ब से अस्तित्व का उजाला देखा है । संचार क्रान्ति के पहले इसे जन्म लेना चाहिए था । संचार क्रान्ति के पूर्व प्रादूर्भूत सांस्कृतिक क्रान्ति में सक्रियता पूर्वक सहयोगी हो जाना चाहिए था कुँड़ुख़ समाज को । और निकलता जा रहा है बड़ी तेजी से यह जामना, छूटते जा रहे हैं वे कबीले जिनके पास अपनी बोली तो है लेकिन उसको लिपिबद्ध करने के लिए अपना ध्वनि संकेत उपलब्ध नहीं है । यह पुस्तक तोलोङ सिकि पर महारथ प्राप्त करने तक लिप्यन्तरण की कला कुँड़ुख़ की ग्राह्यता का सूचक बनकर कुँड़ुख़ की गरिमा का विस्तार करेगी, इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए ।

डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" और डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो "उराँव" को बधाइयाँ एवं अगली रचना के लिए शुभ कामनाएँ ।

10

Dr. Etwa Oraon,
Founder, Kũrux Katth Khorha Loor'erpa,
Loordippa, Dumri, Gumla - 834230

Dated - 07.01.2011

The book, 'Kũrux Phonetics and Transliteration' is another stroke of a genius that Dr. Narayan Oraon always is, for not only the entire Kũrux community but also for the whole world of linguistics. With this invention of Tolong Siki for Kũrux language, his position in the Kũrux tribal society is unique and unparalleled making him stand out as a Messiah for the entire Kũrux community. Dr. Narayan provides much needed matter for national unity. It will certainly help Kũrux to unite themselves as one people with great future open to them. It will play as key to their survival and success.

When we started our own Kũrux Kath Khorha Loor'erpa, the first ever in Kũrux in the world at Loordippa of Gumla district I straightaway opted for Tolong Siki without having ever met Dr. Narayan Oraon earlier because Tolong Siki is simply the best and it is our own. Kũrux is to be written only in Tolong Siki and Tolong Siki is to be kept in mind while campaigning for the inclusion of Kũrux in the 8th Schedule of the Indian Constitution.

I am indeed happy to state that the children of K.K.K.Loor'erpa, Loordippa have played a vital role for Tolong Siki's acceptance by the Kũrux community and finally by the Jharkhand Academic Council itself as the script for Kũrux subject in Matric. Now by facilitating our mother tongue to be read by others through transliteration into various other languages in his most recent book Kũrux Phonetics and Transliteration Dr. Narayan and his wife Dr. Smt. Jyoti Toppo Oraon have paved the way for Kũrux to become a world language one day. The book itself is the fruit of a really scientific, technical and scholarly work. I believe that Kũrux world will accept this book, not only without any hesitation but with great joy, as it has done the script Tolong Siki.

I whole heartedly congratulate this august Kũrux couple who have contributed to Kũrux community's identity and growth in a manner no others have ever done.

BIBLIOGRAPHY

1. [illegible]
   Origin and Development of Tolong Siki - Dr. Narayan Oraon "Sainda"
2. KURUKIH GRAMMAR - REV. FERD HAHN, S. J.
3. AN ENGLISH URAON DICTIONARY - C. BLESES, S.J.
4. AN ORAON ENGLISH DICTIONARY - A. GRINARD
5. KURUX PHONETIC READER - DR. FRANCIS EKKA
6. IMPROVE YOUR PRONUNCIATION - VICTOR W. TUCKER, S. J.
7. Oxford Advanced Learner's Dictionary of Current English - A. S. Hornby
8. Oxford English Hingi Dictionary - Edited by : S. K.Verma & R. N. Sahai
9. उर्दू हिन्दी डिक्शनरी – अंजुमन तरक्की उर्दु (हिन्द) प्रकाशन
10. SANTALI DICTIONARY - P. O. BODDING
11. SANTALI FOLK TALES - P. O. BODDING
12. ENCYCLOPEDIA MUNDARICA - REV. JOHN HOFFMANN, S. J.
13. ENCYCLOPEDIA MUNDARICA - EDITTED BY P. PONETTE, S. J.
14. HO - ENGLISH DICTIONARY - J. DEENEY, S. J.
15. खड़िया ध्वनि शास्त्र – जूलियस बाऽ
16. KHERIA OS?NLO? - KHARIA SAHITYA SAMITI
17. LATIN GRAMMER - J. VAN BOGAERT, S. J.
18. यजुर्वेद – संस्कृति संस्थान, बरेली
19. ऋक् सूक्त संग्रह – डॉ० हरिदत्त शास्त्री, डॉ० कृष्ण कुमार
20. श्रीशुक्लयजुर्वेदीयरूद्राष्टाध्यायी
21. लघु सिद्धांत कमौदी – श्रीमद्विद्वद्वर-वरदराजाचार्यप्रणीता
22. संस्कृत सहचर – आचार्य राधामोहन उपाध्याय
23. SANSKRIT - ENGLISH DICTIONARY - V. S. APTE
24. अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश – फॉदर कामिल बुल्के
25. Concise Sanskrit - Hindi- English Dictionary - Dr. Uma Prasad Pandey
26. कत्थ अरा कत्थ बिल्लिन ईद'उ – डॉ० ख्रिस्त मिखाइल तिग्गा
27. कुँड़ुख़ कत्थ बिल्ली – पी० सी० बेक
28. MALTO An Ethnosemantic Study - B. P. Mahapatra
29. कम्प्लीट गिटार गाइड – संगीताचार्य मनोरंजन भारती

तोलोंग सिकि वर्णमाला

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण

i इ	e ए	u उ	o ओ	a अ	a̲ आ

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, • (मितला) = नासिक्य स्वर ध्वनि

' (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = विकारी अ

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण

p प	ph फ	b ब	bh भ	m म
t त	th थ	d द	dh ध	n न
ṭ ट	ṭh ठ	ḍ ड	ḍh ढ	ṇ ण
c च	ch छ	j ज	jh झ	n̈ ञ
k क	kh ख	g ग	gh घ	ṅ ङ
y य	r र	l ल	v व	n̤ ञ़
s स	h ह	x ख़	ṛ ड़	ṛh ढ़

यह पुस्तक "केलि तोलोंग" (KellyTolong.ttf) फॉन्ट में Composed और Print की गयी है । केलि तोलोंग, तोलोंग सिकि (लिपि) का कम्प्यूटर वर्सन है । इसकी विस्तृत जानकारी के लिए http//newswing.com नामक वेवसाईट पर अथवा KellyTolong के डेवेलॉपर श्री किसलय से kislaya@hotmail.com पर सम्पर्क करें ।